राष्ट्रीय जीवनचरित

युसुफ़ मेहरअली
नये क्षितिज़ों की खोज

मधु दंडवते

अनुवाद
नेमिशरण मित्तल

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

इस पुस्तक का प्रकाशन पहली बार 1986 में पापुलर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, बंबई द्वारा किया गया

ISBN 81-237-1926-4

पहला संस्करण : 1996 *(शक 1918)*
मूल © मधु दंडवते : 1993
हिंदी अनुवाद © नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, 1995
YUSUF MEHERALLY : QUEST FOR NEW HORIZONS *(Hindi)*

रु. 38.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क,
नयी दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित

जयप्रकाश नारायण

को

जिनकी दृष्टि में

"युसुफ़ मेहरअली का समर्पित
जीवन एक ऐसी अभिव्यक्ति
रहा, जिसका स्थान गांधी जी
के बाद सर्वप्रथम है।"

विषय सूची

प्रस्तावना

मैं अपने आदरणीय मित्र—युसुफ़ मेहरअली की इस जीवनी के साथ जुड़ने में प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूं।

मेहरअली की जीवनी बीस वर्ष पहले ही प्रकाशित हो जानी चाहिए थी। पिछले दो दशकों में सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति का संदर्भ आमूल बदल गया है, जिसके कारण वर्तमान पीढ़ी इस जीवनी के विषय को सामाजिक परिस्थितियों के उसके अपने ढांचे में नहीं देख पाएगी। मेहरअली ने जिस पृष्ठभूमि में उन लक्ष्यों को सिद्ध करने की चेष्टा की जिनकी सिद्धि के लिए हम अपने परिवर्तित परिदृश्य में प्रयास कर रहे हैं—मानव की स्वतंत्रता और एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था का सृजन जिसे शोषण और अन्याय निरंतर निष्फल न कर पाएं, उस पृष्ठभूमि पर विहंगम दृष्टि डालना शायद लाभदायक रहेगा। मेहरअली के जीवन का सक्रिय काल 1927 से 1947 तक अथवा मोटे तौर पर दो विश्वयुद्धों के बीच की अवधि में रहा।

प्रथम महायुद्ध की समाप्ति के बाद अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में दूरगामी परिवर्तन हुए। एक परिवर्तन तो यह था कि एक राज्य के रूप में सोवियत रूस का उदय प्रथम विश्वयुद्ध के विजेताओं की नैतिक विहितता के लिए एक चुनौती तो बन ही गया था, उसके कारण पाश्चात्य जगत में अंतर्विरोध भी उभर आए थे। दूसरा बड़ा परिवर्तन युद्धोत्तर विश्व में संयुक्त राज्य अमेरिका का एक विश्व शक्ति के रूप में उभरना था। एक अन्य युद्ध की संभावनाओं को टालने की दृष्टि से राष्ट्र संघ की स्थापना से एक ऐसे मंच का निर्माण हुआ जिससे इन प्रमुख शक्तियों की अनेक नीतियों की विहितता की आलोचना संभव हो पाई—विशेषतया राज्यों के आत्मनिर्णय के अधिकार के क्षेत्र में। महाशक्तियां छोटे राज्यों के पारस्परिक संबंधों में एक दूसरे के आत्मनिर्णय के अधिकार के सम्मान तथा विधि-सम्मत शासन के सिद्धांत की घोषणा कर रही थीं परंतु वे अपने अपने साम्राज्यों पर अपने ही स्वेच्छाचारी शासन द्वारा इस सिद्धांत का खुल्लम-खुल्ला उल्लंघन कर रही थीं। इस तथ्य ने यह सिद्ध कर दिया था कि वे ऊंचे ऊंचे सिद्धांतों की घोषणाओं की आड़ में अपने साम्राज्यवादी प्रयोजनों को छिपाने का प्रयास कर रही थीं। साम्राज्यवाद के बारे में

लेनिन की पुस्तक ने बीसवीं शती के उपनिवेशवाद के आर्थिक आधार को उजागर कर दिया अर्थात यह स्पष्ट कर दिया कि उपनिवेशवाद का मूल प्रयोजन प्राकृतिक संसाधनों की दृष्टि से संपन्न तथा तकनीकी बुद्धिकौशल एवं उद्यमिता की दृष्टि से विपन्न एशियाई एवं अफ्रीकी क्षेत्रों के संसाधनों पर एकाधिकार प्राप्त करना था।

लेनिन ने सामंतवाद की समाप्ति से आरंभ करके पूंजीवाद के विकास का चरणबद्ध वर्णन किया। उन्होंने बताया कि एकाधिकारवादी पूंजीवाद किस प्रकार साम्राज्यवाद का अंतिम चरण है, तथा वह एक अन्य विश्वयुद्ध को किस प्रकार अनिवार्यतया जन्म देगा। समकालीन इतिहास की इस आर्थिक व्याख्या ने ब्रिटिश फ्रांसीसी अथवा उच्च साम्राज्यवाद के उपनिवेशों में राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहे समस्त बुद्धिजीवियों की आंखें खोल दीं। इसने हमें अतीत के प्रति एक रागात्मक दृष्टिकोण से उबार कर अर्द्ध-औद्योगिक समाज में सामाजिक शक्तियों के पारस्परिक संबंधों की एक अधिक यथार्थपरक दृष्टि प्रदान की। मेहरअली उस पीढ़ी के व्यक्ति थे, जो भारत की प्राचीन धरोहर से प्यार करते थे, परंतु साम्राज्यवादी प्रभुत्व द्वारा प्रस्तुत चुनौतियों का सामना करने में समर्थ आधुनिक भारत के निर्माण का दायित्व उठाने के लिए भारत के युवाओं का आह्वान करते समय उन्होंने पुनरुद्धारवादी वृत्ति का लेशमात्र भी परिचय नहीं दिया।

दूसरे दशक की एक अन्य विशिष्टता राष्ट्रीय चेतना के प्रसार की तीव्रता थी। प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात से देश में ऐसे समर्थ युवा विद्यमान थे, जिनके मन में यह चेतना थी कि उन्होंने मेसोपोटामिया की समरभूमि में अपनी वीरता को सिद्ध किया था, युद्ध कौशल तथा शांति की कला में भारतीय-जन गोरों के समतुल्य थे। डा. जगदीश चंद्र बोस, सी. वी. रमन तथा मेघनाथ साहा जैविकी की शोध तथा भौतिकी के जगत में प्रथम कोटि के विद्वान हुए भारत एक गौरवपूर्ण अतीत का ही देश न था, उसका जनशक्ति-संसाधन भारत के ही नहीं वरन समूचे तीसरे विश्व के पुनरोत्थान के लिए प्रतिभा का अक्षय भंडार था। अपनी सामर्थ्य के इस बोध ने देश की जनता के मन में आत्मविश्वास और आस्था जगाने में भारी योग दिया था। उधर विदेशी प्रभुत्व के जुए को उतार फेंकने के लिए संघर्षशील जनता के सामने गांधी जी के सत्याग्रह ने सामाजिक कर्म की एक नयी व्यूह रचना प्रस्तुत कर दी थी। गांधी जी की महत्ता इस बात में निहित थी कि उन्होंने भारत में एक नैतिक उत्साह तथा विश्वास उत्पन्न कर दिया कि हम एक शत-प्रतिशत नैतिक उद्देश्य के लिए संघर्ष कर रहे थे एवं हमारा शत्रु नैतिक दृष्टि से शत-प्रतिशत दोषी था। गांधी जी हमारे शासकों को प्रतिरक्षात्मक स्थिति में खड़ा करने में सफल रहे—वायसराय ने, भले ही अनिच्छा से सही, 1931 में पहली बार यह स्वीकार किया कि इंडियन नेशनल कांग्रेस भारतीय स्वाधीनता का एक सशक्त मंच थी। लाला लाजपत राय सरीखे नेताओं की भांति मेहरअली ने साइमन-कमीशन के विरुद्ध

राष्ट्रव्यापी प्रदर्शन के माध्यम से नमक-सत्याग्रह के लिए आधार तैयार किया। नमक-सत्याग्रह ने लाखों भारतीयों के मन में सहज सक्रिय भागीदारी की भावना जगाकर भारत में प्रथम बार यह चेतना उत्पन्न की कि ब्रिटिश राज के नैतिक प्रभुत्व की जड़ें तक हिल चुकी हैं।

कांग्रेस समाजवादी दल के उदय से, जिसके युसुफ़ मेहरअली एक अग्रणी संस्थापक थे, हमारे राजनीतिक संघर्ष में रुचि लेने वाले लोगों का दृष्टिकोण और अधिक स्पष्ट हो गया। कांग्रेस के नेतृत्व एवं साधारण कार्यकर्ता एक ऐसे नए विश्व चिंतन के संपर्क में आए जिसका गांधी जी की चिंतन धारा से कहीं टकराव न था वरन जिसने उसे एक व्यापकतर सामाजिक क्षितिज प्रदान किया। रूस के सोवियत राज्य ने भारत में श्रमिक वर्ग में जागृति उत्पन्न करने एवं उसे संगठित करने के लिए 1924 में एक साम्यवादी दल का प्रवर्तन किया। इस दल ने तृतीय-इंटरनेशनल की गलत दृष्टि अपनाकर इंडियन नेशनल कांग्रेस को यह कहकर बदनाम करने की चेष्टा की कि उस पर भारतीय पूंजीपतियों के हितों का प्रभुत्व है। कांग्रेस समाजवादी दल ने समाजवादी आदर्शों पर भारतीय साम्यवादियों के एकाधिकार को चुनौती दी तथा दो बातों पर बल दिया कि प्रत्येक वास्तविक समाजवादी को सर्वप्रथम भारत के स्वतंत्रता संग्राम का सैनिक होना चाहिए तथा साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष के लिए कांग्रेस सर्वाधिक व्यापक आधार वाला संगठन है। उसका यह दृष्टिकोण उसके अपने नाम 'कांग्रेस समाजवादी दल' से स्पष्ट रूप से झलक रहा था।

साम्यवादियों को 1938 में अपनी नीति बदलनी पड़ी और तब वे राष्ट्रीय जीवन की मुख्यधारा से अलग-थलग पड़ जाने की स्थिति से बचने के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में सम्मिलित हो गए। इसके बावजूद सोवियत संघ द्वारा मित्रराष्ट्रों—ब्रिटेन, फ्रांस, अमेरिका के साथ युद्ध में कूद पड़ने पर उन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध को जन-युद्ध घोषित कर दिया और अलगाववादी मार्ग पर लौट कर एक नए भारत के निर्माण में संलग्न भारतीय शक्तियों के विरुद्ध कार्य करना आरंभ कर दिया। कांग्रेस समाजवादी दल युद्ध-प्रयासों में भाग लेने का घोर विरोधी था तथा उसने इस तर्क का खंडन किया कि पाश्चात्य शक्तियां नैतिक दृष्टि से हिटलर की अपेक्षा श्रेष्ठतर हैं। यह दृष्टिकोण उस समय सही सिद्ध हुआ जब मित्रराष्ट्रों ने हजारों निर्दोष जापानी स्त्रियों, पुरुषों तथा बच्चों पर घातक अणुबम गिराकर उन्हें नष्ट कर दिया। असंलग्नता की हमारी नीति को सही ठहराने वाले तथ्यों को इसी घटनाक्रम ने एक ठोस आधार प्रदान किया। तरुण भारत की चेतना को जगाने वाले युवा सत्याग्रह-जन्य क्रांति की उपज थे। उनमें युसुफ़ मेहरअली का एक विशिष्ट स्थान था। उनकी लोकप्रियता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि वे भारी बहुमत से बंबई नगर निगम के महापौर चुने गए। मेहरअली में महत्वाकांक्षा लेशमात्र

न थी। उन्हें जीवन में जो भी पुरस्कार मिला वह समूचे भारत की जनता के सभी वर्गों के स्नेह और आदर का फल था। समाजवादी दल में मेहरअली का योगदान विश्लेषणात्मक रीति द्वारा अभिव्यक्ति की सीमाओं से कहीं अधिक परे और महान था। साम्यवादी कांग्रेस समाजवादी दल को भीतर से नष्ट करने के प्रयोजन से संयुक्त मोर्चे का नाम लेकर उसमें सम्मिलित हुए थे। इस खतरे को भांपने तथा उससे दल को भारी क्षति पहुंचने से पहले ही उसका भंडाफोड़ करने वाले मेहरअली ही थे। कांग्रेस समाजवादी दल की एकता को जब जब आंतरिक कलह की चुनौतियों का सामना करना पड़ा तब तब मेहरअली और आचार्य नरेंद्र देव—कांग्रेस समाजवादी दल के इन दो संरक्षकों ने आंतरिक संकट के उन क्षणों में उसकी नौका पार लगाई। उनके देहावसान के पश्चात एक रिक्तता उत्पन्न हो गयी जिसकी पूर्ति नहीं की जा सकी तथा व्यक्तिगत अहम्मन्यता ने दल को खंडित कर डाला।

मेहरअली ने एक ऐसा कार्यक्रम प्रस्तुत करने का प्रयास किया था जिसके द्वारा कांग्रेस समाजवादी दल एक ऐसा लघु सक्रिय कार्यकर्ता-आधारित संगठन बन सकता था जो नयी समाजव्यवस्था के निर्माण के लिए प्रथम कोटि का नेतृत्व प्रदान करता। उन्होंने अध्ययन-मंडलों की एक शृंखला बनाई और सामाजिक अध्ययन का एक पाठ्यक्रम तैयार किया। प्रत्येक जनाधारित कार्यक्रम के लिए ऐसे अंतरंग कार्यकर्ताओं की आवश्यकता होती है। दुर्भाग्यवश यह संकेत परवर्ती काल में दृष्टि से ओझल हो गया तथा कांग्रेस समाजवादी दल को श्रम संघ क्षेत्र में होने वाली गुटीय संघर्ष में गंभीर पराभव का मुंह देखना पड़ा।

भारत छोड़ो आंदोलन में समाजवादियों की भूमिका का श्रेय भी मुख्यतया युसुफ़ मेहरअली को ही जाता है। उन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध के अंत से पहले ही मनोरथों के निर्णायक संघर्ष की अपरिहार्यता की पूर्व कल्पना कर ली थी। व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा आंदोलन ने प्रतिरोध की लौ को प्रज्वलित रखा था, तथापि उग्र संघर्ष से बचा नहीं जा सकता था। मेहरअली को अग्रिम पंक्ति के नेताओं की गिरफ्तारी के परिणामस्वरूप उत्पन्न होनेवाले 'नेतृत्व के शून्य' की पूर्वकल्पना हो गयी थी। उन्होंने आंदोलन का अभिक्रम प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिरोध के सुस्पष्ट कार्यक्रम के अनुसार कार्य करने वाले सक्रिय दलों को हस्तांतरित करने का प्रयास किया। मेहरअली ने शिरूभाऊ लिमये तथा छोटू भाई पुराणी तथा कतिपय अन्य कार्यकर्ताओं की सहायता से अनेक राज्यों ने जन-स्तर पर विद्रोह फैलाने तथा ब्रिटिश युद्ध प्रयासों के संचार-माध्यमों में व्यवधान डालने की दृष्टि से एक सघन कार्यक्रम की व्यूह-रचना के विषय में छोटे छोटे दलों को प्रशिक्षित करने के लिए गुप्त समूह गठित किए। 1942 में नेताओं की गिरफ्तारी के बाद इन सक्रिय दस्तों ने ही अपने कार्यों द्वारा आंदोलन को जीवित बनाए रखा।

परंतु उनकी इन सब गतिविधियों से चकित होकर हमें इस अत्यंत प्रेमिल

व्यक्ति के दूसरे पक्ष की उपेक्षा नहीं कर देनी चाहिए। वे एक महान मानववादी थे। संकीर्ण धार्मिक निष्ठाओं का उनके जीवन में कोई स्थान न था। वे भारत की अतीत-कालीन संस्कृति के प्रति गहन प्रेम पर पले थे। उन्होंने हैवेल, कुमारस्वामी और बाशम से भारत-विद्या के पाठ पढ़े थे। मानवीय अस्तित्व के अर्थ की खोज के लिए किया गया मानव का प्रत्येक प्रयास मनुष्य को समाज में गरिमा प्रदान करता है। वे वनों तथा प्रकृति के महान प्रेमी थे तथा उन्होंने दूर दूर की यात्राएं की थीं। उन्होंने गांवों में भारत की महत्ता तथा औद्योगिक कस्बों और नगरों की अनियोजित दरिद्रता में उसकी हेयता का दर्शन किया था। हिमालय की पर्वत शृंखला के सम्मुख पहुंचकर मेहरअली सम्मोहित हो गए थे तथा उन्होंने उन गोपनीय रहस्यों को जान लिया था जिन्हें विराट अंबर उन चिर युवा हिमाच्छादित शैल-शृंगों के कानों में फुसफुसाता रहता है, जिन पर मनुष्य के चरण कभी नहीं पड़े। मेहरअली पर्यावरण रक्षा आंदोलन के, जिसे अब समुचित महत्व दिया जा रहा है, एक प्रबल पक्षधर थे।

मेहरअली लोक पुरुष थे। कोई भी पद अथवा स्तर उन्हें जन साधारण से विलग नहीं कर सकता था। मैं उनकी स्मृति को, दूसरों की व्यक्तिगत समस्याओं में हाथ बंटाने वाले तथा उस पृथ्वी पर मनुष्य मात्र के हित के प्रति संपूर्णतया समर्पित एक अत्यंत प्रिय साथी के रूप में, अपनी प्रेमपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

मद्रास *अच्युत पटवर्धन*

3 जून, 1986

आभार

युसुफ़ मेहरअली की इस जीवनी का संकलन करते समय मेरा अंत:करण एक प्रकार के अपराध बोध से पीड़ित रहा है। इसका कारण है कि युसुफ़ के देहावसान के पश्चात बीते 36 वर्षों की दीर्घ अवधि में नयी पीढ़ी को मेहरअली के बहुरंगी एवं प्रेरक जीवन से परिचित कराने का गंभीर प्रयास नहीं किया गया। परंतु "न होने से तो देर भली", यही सोचकर प्रस्तुत है यह जीवनी—युसुफ़ द्वारा की गयी 'नए क्षितिजों की खोज' की सर्वथा अछूती कहानी।

इस कृति का संकलन अवश्य ही मैंने किया है, तथापि उसकी अमूल्य सामग्री का संग्रह मेरे समादरणीय मित्रों तथा साथियों वी. एन. ओके तथा पी. टी. संघवी ने परिश्रमपूर्वक किया है। उन्होंने युसुफ़ के आकर्षक जीवन से संबंधित आवश्यक सामग्री के संग्रह के लिए जवाहरलाल स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय और महाराष्ट्र राज्य अभिलेखागार सहित प्रत्येक संभव स्रोत को खोज डाला। उन्होंने भारत तथा विदेशों में उनके समकालीन व्यक्तियों के संस्मरणों को पहले टेप पर रेकार्ड किया, बाद में उस पर से सावधानीपूर्वक कागजों पर उतारा। उन्होंने उस अत्यंत अगम्य पत्र-व्यवहार को भी खोज निकाला, जिसने युसुफ़ के जीवन के बहुपक्षीय जीवन को उसके संपूर्ण सौंदर्य में उजागर कर दिया। मैंने इस बहुमूल्य रत्न सामग्री को अपनी लेखनी से अपने स्वयं के सूत्र के चारों ओर बुनने की चेष्टा भर की है।

यदि यह जीवनी युसुफ़ मेहरअली के जीवन की चमकती हुई स्मृतियों को पुनर्जीवित करने में सफल रही तो इस सफलता का श्रेय सहज ही मुझे उपलब्ध कराई गयी सूचना सामग्री की दैदीप्यमान मणियों को प्राप्त होगा।

पांडुलिपि को टाइप करने का बीड़ा मेरे सहयोगी टी. आर. रामकृष्णन ने उठाया तथा वरिष्ठ पत्रकार एस. विश्वम ने उसे आद्योपांत पढ़ा तथा बहुमूल्य सुझाव दिए।

युसुफ़ के घनिष्ठ मित्र तथा सहकर्मी अच्युत पटवर्धन ने अपनी ज्ञानवर्द्धक भूमिका की मुद्रा लगाकर इस जीवनी को अपना स्नेहिल स्पर्श प्रदान किया तथा उस संक्रमण काल की पृष्ठभूमि का सुंदर चित्रण किया है जिसमें युसुफ़ के जीवन

का निर्माण हुआ।

उन सबके प्रति मैं हार्दिक आभार प्रकट करता हूं। उन सबके सहयोग के फलस्वरूप यह जीवनी एक सामूहिक उपक्रम के रूप में प्रस्तुत है।

मुझे आशा है कि आज जब मानवीय मूल्यों का तेजी से ह्रास हो रहा है, युसुफ़ मेहरअली का मूल्य निष्ठ जीवन नयी पीढ़ी के लिए सार्वजनिक जीवन के विस्मृत मूल्यों को पुन: आचरण में उतारने की अपरिहार्यता का विनयपूर्वक स्मरण दिलाएगा। यदि वह चेतना अल्प मात्रा में भी उत्पन्न हो सकी तो इस जीवनी का लक्ष्य पूरा हो जाएगा। युसुफ़ की आत्मा की ओजपूर्ण शालीनता के प्रति इससे अच्छी और क्या श्रद्धांजलि हो सकती है ?

नयी दिल्ली —*मधु दंडवते*
3 जुलाई, 1986

1. मृत्यु—विश्वासघात का कृत्य

संभव है कि मृत्यु ही जीवन को तुम्हारा अंतिम उपहार हो, परंतु यह विश्वासघात का कृत्य नहीं होना चाहिए। **—डाग हैमरशोल्ड**

2 जुलाई, 1950। सूर्य उगने से पहले ही भोर बेला में युसुफ़ मेहरअली की जीवन ज्योति बंबई के जस्सावाला नर्सिंग होम में बुझ गयी। युसुफ़ के घनिष्ठ मित्र और सहकर्मी जयप्रकाश नारायण अंतिम क्षणों में उनके साथ थे। उन्होंने अश्रुपूर्ण नेत्रों से उनको दम तोड़ते देखा। ऊर्जा और गतिशीलता से भरपूर एक स्पंदनशील जीवन का समय से पूर्व ही 47 वर्ष की अल्पायु में अवसान हो गया। यह हृदयद्रावक समाचार जंगल की आग की तरह देशभर में फैल गया तथा युसुफ़ के प्रति सौहार्द्रपूर्ण और संवेदनशील श्रद्धांजलियां दी जाने लगीं। भावना के आवेग में जयप्रकाश नारायण ने कहा :

"मैं युसुफ़ मेहरअली के जीवन को सर्वदा समर्पण की एक ऐसी अभिव्यक्ति के रूप में देखता रहूंगा जिसका स्थान गांधी जी के बाद सर्वप्रथम है।"

राष्ट्रपति डा. राजेंद्र प्रसाद ने युसुफ़ की स्मृति में श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा :

"मेरे लिए वे एक आत्मीय मित्र और देश के एक समर्पित सेवक थे। अल्पायु में ही उनके निधन से हमारे सार्वजनिक जीवन को भारी क्षति पहुंची है।"

प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने मेहरअली की मृत्यु पर टिप्पणी करते हुए कहा :

"मुझे यह जानकर गहरा दुख हुआ कि युसुफ़ मेहरअली का बंबई में निधन हो गया। एक लंबी बीमारी ने उन्हें पंगु बना दिया था तथापि उनके चेहरे पर सदा मुस्कान खेलती रहती थी। वे अपने परिचितों के लिए एक प्रिय मित्र थे। वे देश के स्वतंत्रता संग्राम के एक वीर तथा दुर्दमनीय सेनानी तो थे ही, उनके चरित्र में उच्चकोटि की प्रामाणिकता का विरल गुण भी विद्यमान था जिसके कारण वे सबके लिए आदर के पात्र बन गए थे। इस उदार मानव और प्रिय मित्र के निधन से हमें भारी क्षति पहुंची है।"

आचार्य नरेंद्र देव ने कहा :

"मेहरअली एक शक्तिशाली और गतिशील व्यक्तित्व के धनी तथा भारतीय राजनीति में अपने ढंग के एक अनूठे व्यक्ति थे।"

आचार्य कृपलानी ने उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए कहा :

"मेहरअली आदि से अंत तक भारतीय थे अर्थात उनमें उन सभी तत्वों का सामंजस्यपूर्ण संयोग हुआ था, जिन्होंने आधुनिक भारत का निर्माण किया है।"

डा. राममनोहर लोहिया ने अपनी श्रद्धांजलि में उनका वर्णन इस प्रकार किया :

"मेहरअली का जीवन राजनीतिक दलों तथा धर्मों के बीच आपसी मतभेदों की खाई को आदर्शों और मानवहित के प्रति प्रेम से पाटने का एक जीता-जागता उदाहरण था।"

अशोक मेहता ने युसुफ़ को 'समाजवादी आंदोलन का अंतःकरण' बताया तथा कहा, "रोग ने उनका शरीर नष्ट कर दिया था परंतु वह उनकी आत्मा को तनिक भी घायल नहीं कर पाया।"

कमला देवी चट्टोपाध्याय ने अपने श्रद्धापूर्ण संदेश में कहा :

"युसुफ़ मेहरअली एक विलक्षण व्यक्ति थे। उनके निधन से उनकी मित्रमंडली में एक अपूरणीय रिक्तता की चेतना व्याप्त हो गयी है। उनकी आत्मीयतापरक मानवीयता और अपने प्रत्येक साथी में व्यक्तिगत दिलचस्पी लेने तथा उसके हितों का ध्यान रखने की वृत्ति ने उन्हें एक महामानव बना दिया था। साहस और बलिदान के महान कार्य तो बहुत लोग संपन्न कर सकते हैं किंतु व्यक्ति के चरित्र की महानता निर्बलता के प्रति उसकी उदारता तथा दयालुता पर निर्भर करती है। निर्भय तथापि कोमल, साहसी तथापि उदार, प्रत्येक बलिदान के लिए तैयार तथापि प्रेम और स्नेह से परिपूर्ण मेहरअली एक अनूठे पुरुष थे। उन्हें ऐसे समर्पित मित्र तथा निष्ठावान सहकर्मी प्राप्त हुए जो विविध राजनीतिक पक्षों और धर्मों के अनुयायी थे। युसुफ़ सभी के लिए उस जीवनसूत्र का मूर्त स्वरूप बन गए थे, जो स्वयं उन्हें अत्यंत प्रिय था : 'खतरों में जियो'।"

बॉम्बे क्रानिकल ने युसुफ़ मेहरअली के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अपने एक संपादकीय लेख द्वारा अर्पित की, जिसमें कहा गया था :

"ऐसे संसार में जहां ढेरों असत्य खुले में फैला हुआ है और ढेरों सत्य नीचे दबा पड़ा है, एक ऐसे व्यक्ति के अभाव को शब्दों द्वारा नहीं आंका जा सकता जो सादगी और पारदर्शी निश्छलता का प्रतीक बन गया था।"

युसुफ़ मेहरअली बंबई विधान सभा के सदस्य थे, इस नाते राज्य विधानमंडल के सदस्यों ने भी उन्हें श्रद्धांजलियां अर्पित कीं।

बंबई के मुख्यमंत्री बी. जी. खेर ने युसुफ़ मेहरअली के बारे में कहा : "वे एक ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने अपने आपको कर्म में निचोड़ डाला।"

विधानसभा में युसुफ़ मेहरअली के समाजवादी सहकर्मी पीटर अलवारिस ने कहा :

> "वे उग्रता और मधुरता का मिश्रण थे। उनकी चिंता का एकमात्र विषय प्रत्येक मनुष्य का हित था, स्वार्थ नहीं।"

युसुफ़ को समर्पित इन सब श्रद्धांजलियों में जो सत्य उजागर हुआ है वह अगले पृष्ठों में प्रस्तुत उनके जीवनचरित से प्रमाणित होता है।

युसुफ़ की मृत्यु के पश्चात उनके पार्थिव शरीर को पहले समाजवादी दल के लाल झंडे में और फिर तिरंगे राष्ट्रीय झंडे में लपेटकर स्वाधीनता संग्राम के पावन गौरव से जुड़े बंबई के जिन्ना हॉल में रखा गया जिससे कि हजारों नागरिक अपने उस प्रिय युवा नेता के अंतिम दर्शन कर सकें जिसे मृत्यु ने विश्वासघात करके उनसे छीन लिया था। मृत्यु ने जीवन की डाली से एक ऐसा फूल तोड़ लिया था जो पूरी तरह खिल भी नहीं पाया था।

युसुफ़ मेहरअली की शवयात्रा सायंकाल ठीक चार बजे प्रारंभ हुई। युसुफ़ की इस अंतिम यात्रा में मोरारजी देसाई, जीवराज मेहता, गणपति शंकर देसाई, नगीनदास टी. मास्टर, एन. एम. चोकसी, मीनू मसानी, आबिद अली जाफर भाई, सरीखे स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों तथा जयप्रकाश नारायण, डा. राममनोहर लोहिया, अशोक मेहता, एस. हैरिस, अच्युत पटवर्धन, एन. जी. गोरे, एस. एम. जोशी सरीखे युसुफ़ के समाजवादी सहकर्मियों के अतिरिक्त हजारों औद्योगिक श्रमिक, गुमाश्ते, युवा बुद्धिजीवी और मध्यवर्गीय कर्मचारी भी शामिल हुए। यह सोचकर आज भी दुख होता है कि एक निर्भीक राजनीतिज्ञ और उत्कट समाज सुधारक युसुफ़ को जिस समय कब्रिस्तान ले जाया जा रहा था, उनके अनेक सहधर्मियों ने उस अंतिम घड़ी में भी उनके साथ चार कदम चलने और उन्हें अपनाने से इनकार कर दिया था। उनमें से कुछ ने तो शवयात्रा को सामने से गुजरते देखकर रोषपूर्वक अपने घरों की खिड़कियां तक बंद कर ली थीं। युसुफ़ अपनी सुधारवादी और क्रांतिकारी भावना के कारण ही उनके क्रोधभाजन बन गए थे।

रोग की यंत्रणाओं से जर्जर युसुफ़ मेहरअली की देह बंबई के डोंगरी कब्रिस्तान में संगमरमर की एक कब्र में शाश्वत शांति में सोयी पड़ी है, परंतु जैसा कि उनके साथी अशोक मेहता ने ठीक ही कहा था—'वह पंगुकारी रोग उनकी आत्मा को तनिक भी घायल नहीं कर पाया।' उनकी आत्मा की ज्योतिर्मयी शालीनता आज तक अनेक लोगों को मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध समर्पित जीवन जीने की प्रेरणा दे रही है। यही वह धरोहर है जो युसुफ़ अपने पीछे छोड़ गए हैं।

2. निर्माण काल

उस प्रभात में जीवित रहना आनंदमय था, और तरुणाई तो साक्षात स्वर्ग ही थी।

—वर्ड्सवर्थ

महान पुरुष प्राय: युग निर्माणक इतिहास की उपज होते हैं और अपनी बारी आने पर वे भी अपने अजेय संकल्प बल द्वारा इतिहास को नयी गति और दिशा प्रदान करके ऐतिहासिक घटनाचक्र को प्रभावित करते हैं। व्यक्ति और उसके राजनीतिक वातावरण के बीच चलने वाली आदान-प्रदान की यह प्रक्रिया युसुफ़ मेहरअली के जीवन में सही अर्थ में प्रतिबिंबित होती है। 23 सितंबर, 1903 को जन्मे युसुफ़ यौवन के उत्कर्ष काल में महान समकालीन राजनीतिक घटनाक्रम के संग संग विकसित हुए थे।

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्ष तिलक युग से गांधी युग के संक्रमण के साक्षी थे, जिसके प्रमुख लक्षण थे—गहन मानवतावादी आस्था से जुड़ा लौकिकतावादी अथवा धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद, बंगाल के अन्यायपूर्ण विभाजन के विरुद्ध उमड़ा जनाक्रोश, प्रथम विश्वयुद्ध का आरंभ, 1917 की रूसी क्रांति, जलियांवाला बाग का बर्बर नरसंहार और उसकी राष्ट्रव्यापी प्रतिक्रिया, भगतसिंह तथा उनके क्रांतिकारी साथियों को फांसी तथा समूचे देश में उसके विरुद्ध उमड़ी रोष की लहर, कांग्रेस के भीतर नरमपंथियों और गरमपंथियों के बीच चौड़ी होती मतभेदों की खाई तथा महात्मा गांधी के नेतृत्व में 1920 का राष्ट्रव्यापी असहयोग आंदोलन।

युसुफ़ मेहरअली इन सब राजनीतिक घटनाओं के साए में बड़े हुए तथा इन घटनाओं ने उनके राजनीतिक जीवन के निर्माण की अवस्था की दशाएं और दिशाएं निर्धारित कीं। मेहरअली के पारिवारिक वातावरण ने उनके राजनीतिक विकास और जागरण में कोई महत्वपूर्ण योग नहीं दिया। उनके प्रारंभिक जीवन में उन पर पड़ने वाले राजनीतिक प्रभाव उनके पारिवारिक दायरे से सर्वथा बाहर थे।

शिक्षा के प्रारंभिक वर्षों में भी युसुफ़ की पसंद और नापसंद में उनके चरित्र के बुनियादी आदर्शों के लक्षण झलकते थे। दूसरी कक्षा तक उनकी पढ़ाई बंबई के ग्रांट रोड के ट्यूटोरियल हाई स्कूल में हुई थी। उसके पश्चात वे बोरीबंदर के

न्यू हाई स्कूल में भरती हुए थे, जिसका नाम बाद में बदलकर भार्दा हाई स्कूल हो गया था। स्कूल में उनका पूरा नाम युसुफ़ मर्चेंट था, तथापि उन दिनों भी युसुफ़ को युसुफ़ मर्चेंट कहलाना नापसंद था, उनके मन में मर्चेंट उपनाम से चिढ़ थी क्योंकि मर्चेंट शब्द परंपरा के अनुसार व्यापारी वर्ग के साथ जुड़ा था। युसुफ़ को तब से ही युसुफ़ मेहरअली कहा जाने लगा था, और वे अंत तक इसी नाम से जाने जाते रहे। विद्यालय में युसुफ़ के निकट तथा घनिष्ठ मित्रों में मीनू मसानी तथा सोली बाटलीवाला प्रमुख थे, जिनका राजनीतिक स्तर बाद में युसुफ़ मेहरअली के साथ साथ ऊंचा उठता गया। युसुफ़ अपने सहकर्मियों को एक अनोखी आत्मीय मैत्री के रस से भिगो देते थे। उदाहरणार्थ, अपने घनिष्ठ मित्र सोली बाटलीवाला का साथ देने भर के लिए युसुफ़ बंबई के सेंट जेवियर कालेज में भरती हुए, परंतु एक वर्ष बाद दोनों एल्फिस्टन कालेज में उपलब्ध पाठ्यक्रमेतर गतिविधि के अवसरों से आकर्षित होकर सेंट जेवियर से एल्फिस्टन कालेज में चले गए।

कालेज के दिनों में युसुफ़ मेहरअली के सक्रिय जीवन के प्रथम चरण में उनमें अनेक ऐसे गुण प्रकट हुए जिन्होंने, युसुफ़ के जीवन के परवर्ती चरण में प्रभावशाली अभिव्यक्ति प्राप्त की।

एल्फिस्टन कालेज की मैकडुगल डिबेटिंग सोसायटी (वाद-विवाद समिति) युसुफ़ मेहरअली तथा कालेज में उनके सहपाठियों की प्रतिभा को उभारने में सहायक सिद्ध हुई। सोसायटी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के ऐतिहासिक अधिवेशन के दृश्य की नाटकीय प्रस्तुति में प्रचुर कल्पनाशीलता का परिचय दिया। कांग्रेस के उस 'ऐतिहासिक' अधिवेशन की नाटकीय प्रस्तुति में 'मौलाना मेहरअली', 'देशबंधु' देसाई, 'लोकमान्य' खंडालावाला, 'महात्मा' भावे तथा मसानी ने भाग लिया। अधिवेशन की चर्चाओं में वक्तृत्व कला के प्रदर्शन के साथ साथ अंग्रेजों के विरुद्ध कटुता का पुट भी था। अधिवेशन का सनसनी पैदा करनेवाला चरम बिंदु था 'मौलाना' मेहरअली की गिरफ्तारी। यह उन आनेवाली घटनाओं का मंचीय अभ्यास था, जिन्होंने मेहरअली के जीवन पर अपनी परछाईं डाली थी।

सोसायटी के तत्वावधान में आयोजित एक अन्य वाद-विवाद में युसुफ़ मेहरअली ने अपने विचारों के प्रतिकूल जाकर यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया, "गांधी और टैगोर की अपेक्षा टाटा और बोस ने भारत की अधिक सेवा की है" तथा उस दिलचस्प वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

युसुफ़ मेहरअली तथा उनके सहपाठियों ने कालेज के अपने अध्ययनकाल में विश्वविद्यालय सुधार की समस्याओं के प्रति जिस व्यापक समझ का परिचय दिया वह आश्चर्यजनक है। एल्फिसटन कालेज, बंबई की सामाजिक अध्ययन मंडल समिति (सोशल स्टडी सर्किल कमेटी) ने युसुफ़ मेहरअली की अध्यक्षता में एक 'विश्वविद्यालय सुधार समिति' की स्थापना की थी। समिति के अन्य सदस्य

जे. सी. पी. डी. आन्द्राद, कुमारी एस. वी. देसाई, एस. एस. बाटलीवाला, बी. जे. इस्रायल तथा उसके सचिव एच. एम. सीरवाई थे।

इस समिति ने युसुफ़ मेहरअली के मार्गदर्शन में कालेज के विद्यार्थियों से विश्वविद्यालय सुधारों के बारे में उनके सुधार आमंत्रित तथा प्राप्त किए। उसने कुछ साक्ष्यों (गवाहों) को अपने सामने बुलाकर उनसे जिरह (प्रतिपृच्छा) भी की और तत्पश्चात विश्वविद्यालय सुधारों के बारे में व्यापक सिफारिशें प्रस्तुत कीं। उस समिति का प्रतिवेदन (रिपोर्ट) बहुत विशद था, जिसमें विविध विचारणीय विषयों पर चिंतन का समावेश था। इन विषयों में से कुछ इस प्रकार से थे—शिक्षा के लक्ष्य, वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समालोचना, शिक्षण पद्धतियां, शारीरिक प्रशिक्षण की भूमिका, सहशिक्षा, आवासीय विश्वविद्यालय की समस्याएं, अंतर-महाविद्यालयी योजनाएं, स्नातकोत्तर अध्ययन, विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम इत्यादि।

उस प्रतिवेदन से समस्याओं के अध्ययन और खोजबीन की जिस गहराई का बोध होता है वह युसुफ़ मेहरअली तथा उनके साथियों की उस बौद्धिक प्रतिभा का प्रमाण है, जो उनके विश्वविद्यालयी जीवन की निर्माणक अवस्था में ही उनमें विद्यमान थी। यह देखकर तनिक आश्चर्य नहीं होता कि युसुफ़ मेहरअली, एच. एम. सीरवाई तथा एल्फिस्टन कालेज की विश्वविद्यालय सुधार समिति के कतिपय अन्य सदस्यों ने आगे जाकर देश के सार्वजनिक जीवन में विपुल ख्याति अर्जित की।

इसमें तनिक संदेह नहीं है कि सार्वजनिक जोश से ओतप्रोत युसुफ़ के कार्यों में उनकी सक्रियता होती थी तथापि उनमें इस गुण के साथ साथ बुद्धिमत्तापूर्ण नटखटपन का अदम्य बोध भी था। विविध छात्र तथा युवा आंदोलनों में शामिल होने के बावजूद वे एल्फिस्टन कालेज के प्राचार्य हामिल साहब के चहेते थे। एक बार तो जब युसुफ़ ने प्राचार्य हामिल के नाम की आड़ में शरारत करने का प्रयास किया तो एक नाटकीय स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। हुआ यह कि युसुफ़ और उनके सहयोगी उपेंद्र देसाई तथा डा. जोशी कृषि प्रदर्शनी देखने के लिए पुणे गए। अर्थाभाव के कारण उन्हें नगर में ठहरने के लिए सस्ती व्यवस्था खोजने के लिए विवश होना पड़ा। युसुफ़ ने पुणे इंजीनियरिंग कालेज जाकर प्राचार्य फ्लीटवुड स्मिथ से भेंट की तथा उनसे कहा :

"हम प्राचार्य हामिल के मित्र हैं—उनके प्रिय शिष्य। प्राचार्य हामिल ने हमें सुझाया था कि हम कालेज छात्रावास में ठहरने की अनुमति प्राप्त करने के लिए आपसे मिलें।"

यह सुनकर इंजीनियरिंग कालेज के प्राचार्य ने युसुफ़ मेहरअली से पूछताछ शुरू कर दी। उन्होंने पूछा :

"तुम प्राचार्य हामिल से अंतिम बार कब मिले थे ?"

युसुफ़ मेहरअली इस प्रश्न से परेशानी में पड़ गए परंतु तभी प्राचार्य स्मिथ के बंगले के एक कमरे में ठहरे प्राचार्य हामिल उनका वार्तालाप सुनकर सहसा बाहर निकले और तपाक से बोले :

"हैलो मेहरअली, कैसे हो ?"

यह प्रकरण वहीं समाप्त हो गया। इंजीनियरिंग कालेज के प्राचार्य ने तत्काल युसुफ़ और उनके साथियों के ठहरने की व्यवस्था एक छात्रावास में कर दी। सामान्यतया ऐसे बुद्धिमान तथा नटखट युवा आगे जाकर सार्वजनिक जीवन में प्रवेश करने पर प्राय: सफल रहते हैं। युसुफ़ भी सफल रहे।

मेहरअली जिन संस्थाओं और संगठनों का निर्माण करते, उनके लिए काल्पनिक नाम खोजने की उनमें विलक्षण प्रतिभा थी। उन्होंने तथा उनके साथियों ने एल्फिंसटन कालेज में एक क्लब बनाया तथा उसका नाम बदनाम रूसी रासपुतिन के नाम पर 'रासपुतिन क्लब' रखा। खेलों के आयोजन के अतिरिक्त क्लब लड़कियों को छेड़ने वाले विद्यार्थियों को सैनिक अदालत की भाँति सजा भी सुनाता था। यह सब कुछ स्वस्थ विनोद की भावना से होता था तथा उसमें युसुफ़ के कालेज जीवन का सहज पक्ष प्रतिबिंबित होता था।

कालेज के दिनों से ही युसुफ़ कविता के शौकीन थे। वे कविता को एक सौंदर्यबोधपरक अनुभूति मानते थे तथा उनकी धारणा थी कि मानवीय संवेगों के प्रति संवेदनशील मन ही कविता को सराह सकता है। ऐसी स्थिति में युसुफ़ के लिए प्राचीन काव्य कृतियों से प्रभावित होना सहज ही माना जाएगा। कालेज पत्रिका 'एल्फिंस्टोनियम' में प्रकाशित उनका रुचिकर लेख 'हाफिज़ : शीराज़ का बुलबुल' काव्य सौंदर्य के प्रति उनकी पैनी दृष्टि का एक उत्कृष्ट साहित्यिक प्रमाण है।

अपनी कथन-शैली के सम्मोहनकारी आकर्षण तथा रूपकों के चित्रग्राही माधुर्य के कारण फारस के बुलबुल हाफिज़ विश्व भर में गेय काव्य के एक श्रेष्ठतम प्रतिनिधि रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित थे। युसुफ़ ने 'एल्फिंस्टोनियम' में प्रकाशित अपने लेख में हाफिज़ के सम्मोहनकारी काव्य की समीक्षा एक उत्कृष्ट शैली में की थी। उन्होंने उस साहित्यिक मूल्यांकन के सार को काव्यात्मक शब्दों में इस प्रकार समेटा है :

रहेगा सिर पर मुकुट उसके
चिरकाल तक
स्थायी निस्सीम ख्याति का,
पतन हो जाए
भले ही कितने भी
सम्राटों का,

अमर रहेगा
शासन उसका।
हृदयों में सबके
है, सिंहासन उसका।

युसुफ़ मेहरअली के जीवन में रंगीनी और नाटकीयता भरपूर थी जिसने उनके व्यक्तित्व को समृद्ध बनाया। कालेज के दिनों में उनके जीवन का यह पक्ष भरपूर विकसित एवं पोषित हुआ।

जिन दिनों युसुफ़ एल्फिंस्टन कालेज में पढ़ते थे उन दिनों प्राध्यापक चार्ल्स जे. सिसन वहां अंग्रेजी पढ़ाते थे। शेक्सपीयर का साहित्य पढ़ाने में उनकी विशेष रुचि थी, वह भी अपारंपरिक रीति से। अपने विद्यार्थियों को साहित्य पढ़ाने के बजाए, वे उन्हें कालेज के व्याख्यान कक्ष के विविध कोनों में खड़े होकर शेक्सपीयर के नाटकों के विभिन्न पात्रों की भूमिकाओं का अभिनय करने और उनके संवाद बोलने के लिए कहते। युसुफ़ भी शेक्सपीयर के पात्रों में से किसी-न-किसी की भूमिका अदा करते थे। प्राध्यापक महोदय विविध अवतरणों को स्वयं अत्यंत प्रभावशाली शैली में पढ़ते तथा उनके विद्यार्थी आनंद मगन होकर उन्हें दोहराते। शेक्सपीयर साहित्य के अध्यापन की यह प्रत्यक्ष प्रणाली विद्यार्थियों के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव छोड़ती थी। युसुफ़ ने अपने जीवन में नाटकीयता की जिस भावना को आत्मसात किया था, उसके पीछे प्रो. चार्ल्स सिसन का अत्यधिक योगदान था। वे युसुफ़ के जीवन के बहुरंगी पक्षों के विकास के लिए काफी कुछ उत्तरदायी थे।

कर्म के प्रति युसुफ़ मेहरअली की आकुलता को कालेज के नीरस वाद-विवाद आयोजनों द्वारा अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर प्राप्त नहीं हो पा रहे थे। अपनी क्रियाशीलता, जोशीली देशभक्ति, जनसेवा की वृत्ति तथा युवा एवं विद्यार्थी वर्ग की समस्याओं के प्रति चिंता के कारण वे 'बॉम्बे स्टूडेंट्स ब्रदर हुड' नामक संगठन की गतिविधि में शामिल हो गए।

इस संगठन ने 20 मई, 1928 को बंबई के ओपेरा हाउस में एक सभा आयोजित की, जिसकी अध्यक्षता पंडित जवाहरलाल नेहरू ने की। इस सभा में सुभाष चन्द्र बोस का प्रेरणादायी भाषण युसुफ़ मेहरअली के जीवन की एक महान घटना थी, जिसने उन्हें हिला दिया। उस महत्वपूर्ण सभा में सुभाष चन्द्र बोस ने युवकों का आह्वान किया। वे नयी आस्थाओं तथा चिंतन पद्धतियों से प्रेरित एक सर्वथा नयी संस्कृति के निर्माण करें। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच उन्होंने घोषणा की कि ब्रिटिश सत्ता की तो मजाल क्या, विश्व की कोई भी शक्ति भारतीय राष्ट्रवाद के ज्वार को नहीं थाम पाएगी। बोस ने अपील की कि वे अपने भीतर स्वतंत्र भारत के सपने को साकार करने के लिए अटल आस्था जागृत करें। इस सभा में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने युवकों को कर्म और विद्रोह का खनकदार संदेश दिया।

इस सभा ने युसुफ़ मेहरअली को उद्वेलित कर दिया तथा वे प्राणपण से युवा आंदोलन में कूद पड़े जिसकी एकमात्र प्रभावशाली संस्था उस समय 'यूथलीग' थी।

यूथलीग के सचिव के नाते युसुफ़ को विश्व शांति युवा कांग्रेस में भाग लेने के लिए हालैंड जाना था। उस सम्मेलन में स्वतंत्रता के प्रति भारत की उत्कट आकांक्षा को अभिव्यक्त करने में तो युसुफ़ पूर्णतया समर्थ थे, किंतु हालैंड यात्रा के लिए उनके पास आर्थिक संसाधन न थे। युसुफ़ के साथी हार मानने वाले न थे। बॉम्बे स्टूडेंट्स ब्रदर हुड ने यह सोचकर युसुफ़ को एक थैली भेंट करने का निश्चय किया कि केवल पर्याप्त आर्थिक संसाधनों के अभाव में वे उस अंतर्राष्ट्रीय मंच पर से अपनी आवाज बुलंद करने के अवसर से वंचित न रहने पाएं।

युसुफ़ जहां भारत को विदेशी दासता से मुक्त कराने के राष्ट्रभक्तिपूर्ण प्रयोजनों से अभिप्रेरित थे, वहीं वे युवाओं एवं विद्यार्थियों की समस्याएं हल करने की तात्कालिक आवश्यकता के प्रति भी पूरी तरह जागरूक थे। कालेज की फीस में प्रस्तावित वृद्धि के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए उन्होंने 13 जून, 1928 को यूथलीग के तत्वावधान में सक्रिय छात्र कार्यकर्ताओं की एक सभा बुलाई, जिसमें के. एफ. नरीमन, एम. एच. वकील, ए. आर. भट्ट तथा जोशिम अल्वा सरीखे लोगों ने भाग लिया। उसी वर्ष युसुफ़ ने बंगलूर में छात्रों पर पुलिस द्वारा की गयी अंधाधुंध गोलीबारी के विरोध में 3 अगस्त को एक अन्य सभा का आयोजन किया। तरुणाई के दिनों से ही युसुफ़ में श्रमिक वर्ग के प्रति निर्भीक रूप से सहानुभूति के भाव थे। उन्होंने 17 अगस्त, 1928 को हड़ताली मिल मजदूरों के समर्थन में यूथलीग तथा बॉम्बे स्टूडेंट्स ब्रदर हुड के संयुक्त तत्वावधान में एक जनसभा का आयोजन किया, जिसमें एन. एम. जोशी तथा बी. जी. खेर सरीखे प्रख्यात ट्रेड-यूनियन नेताओं ने भाषण दिए। यह छोटी-सी घटना दर्शाती है कि युसुफ़ मेहरअली के सार्वजनिक जीवन के निर्माण काल में ही उनके चिंतन में यह महत्वपूर्ण कल्पना उभर आई थी कि, जब तक युवा शक्ति तथा श्रमिक शक्ति का संगम नहीं हो जाता, तब तक परिवर्तनकारी शक्तियां प्रभावशाली नहीं बन सकतीं।

युसुफ़ मेहरअली एल्फिंस्टन कालेज के छात्र थे। उन्होंने 8 अगस्त, 1925 को इतिहास और अर्थशास्त्र में बी. ए. की डिग्री प्राप्त की। उसके पश्चात उन्होंने बंबई के गवर्नमेंट लॉ कालेज में कानून का अध्ययन किया तथा 26 जनवरी, 1929 को उन्हें विधि स्नातक की डिग्री प्रदान की गयी। इन दोनों तिथियों को राष्ट्रीय महत्व प्राप्त हुआ। 8 अगस्त को 1942 में 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पारित हुआ तथा 1931 में 26 जनवरी को भारत ने पूर्ण स्वराज्य की सौगंध ली और 1950 में यही दिन गणतंत्र दिवस घोषित किया गया।

युसुफ़ मेहरअली को 26 जनवरी, 1929 के दिन विधि स्नातक की उपाधि प्रदान की गयी तथा उसी वर्ष 10 अगस्त को बंबई उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों

में उन्हें उनकी उग्र राजनीतिक गतिविधि के आधार पर वकील के रूप में मुकदमों की पैरवी करने का अनुमति पत्र देने से इनकार कर दिया। एक प्रकार से उच्च न्यायालय ने उस छोटी-सी उम्र में ही युसुफ़ मेहरअली को स्वतंत्रता संघर्ष के एक तूफानी सेनानी के रूप में मान्यता तथा प्रतिष्ठा प्रदान कर दी। इस प्रकार विश्वविद्यालय से निकलकर सक्रिय राजनीति में युसुफ़ मेहरअली के प्रवेश ने एक स्मरणीय घटना का महत्त्व प्राप्त कर लिया।

युसुफ़ मेहरअली ने अपने छात्र जीवन में जिस राजनीतिक पृष्ठभूमि का परिश्रमपूर्वक निर्माण किया तथा युवा आंदोलन में विकसित किया था, उसने स्वतंत्रता संघर्ष तथा समाजवादी आंदोलन में एक प्रमुख व्यक्तित्व के रूप में उभरने में उनकी सहायता की।

3. 'साइमन वापस जाओ'

"मैं उन भद्रजनों से सहमत नहीं हूं जो सार्वजनिक शांति भंग करने के विरुद्ध हैं। अधिकारों के दुरुपयोग के विरुद्ध आवाज का उठना मुझे पसंद आता है। आधी रात में बजने वाली आग के खतरे की घंटी हमारी नींद में तो बाधा डालती है किंतु वह हमें हमारे बिस्तर में ही भस्म हो जाने से बचा लेती है।" **—एडमंड बर्क**

1928 में विधि स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के साथ ही अपना छात्र जीवन पूरा करके युसुफ़ मेहरअली जिस समय सक्रिय राजनीति की चौखट पर आ खड़े हुए उस समय वहां एक बड़ी चुनौती उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। यह साइमन कमीशन के विरुद्ध आगामी आंदोलन की चुनौती थी। भारत सरकार अधिनियम 1919 के अंतर्गत "ब्रिटिश भारत में सरकार की कार्यपद्धति, शिक्षा के विस्तार तथा प्रतिनिधि संस्थाओं के विकास एवं उन विषयों से संबंधित मामलों की छानबीन करके इस बारे में रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए" एक 'वैधानिक आयोग' की नियुक्ति का प्रावधान रखा गया था। इसे पता लगाना था, "क्या भारत में उत्तरदायी शासन का सिद्धांत लागू किया जाना वांछनीय होगा, यदि हां तो किस सीमा तक, अथवा तत्कालीन उत्तरदायी शासन का दरजा संशोधित अथवा परिसीमित किया जाए, इसमें यह प्रश्न भी सम्मिलित है कि स्थानीय विधायिका के द्वितीय सदन की स्थापना वांछनीय है अथवा नहीं।"

8 नवंबर, 1927 को ब्रिटिश सरकार ने एक सात सदस्यों वाले वैधानिक आयोग की नियुक्ति की घोषणा कर दी जिसके अध्यक्ष सर जॉन साइमन थे। उस आयोग के सभी सदस्य ब्रिटिश संसद के अंग्रेज सदस्य थे तथा उसमें एक भी भारतीय को प्रतिनिधित्व नहीं दिया गया था। साइमन कमीशन की नियुक्ति से समूचे भारत में घोर रोष व्याप्त हो गया तथा एक बार फिर से भारत ने वेदना एवं लज्जा पूर्वक यह अनुभव किया कि उसे पीड़ा भोगनी होगी।

तनाव और रोष के इस वातावरण में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने दिसंबर, 1927 में साइमन कमीशन के बहिष्कार का प्रस्ताव पारित कर दिया। मुस्लिम लीग, अखिल

भारतीय उदारवादी संघ (ऑल इंडिया लिबरल फैडरेशन), हिंदू महासभा तथा भारत के समग्र राजनीतिक जीवन का प्रतिनिधित्व करनेवाले अन्य अनेक संगठनों ने भी साइमन कमीशन के बहिष्कार के प्रस्ताव पारित कर डाले।

ब्रिटिश सांसदों में से गठित साइमन कमीशन 3 फरवरी, 1928 के सवेरे एक जहाज द्वारा बंबई के मोल बंदरगाह पर पहुंचा। उस दिन भोर में 3 बजे से ही यूथ लीग के स्वयं सेवक युसुफ़ मेहरअली के नेतृत्व में जुलूस निकालकर साइमन कमीशन के विरुद्ध ऊंची आवाज में नारे लगा रहे थे।

साइमन कमीशन जैसे ही मोल बंदरगाह पर जहाज से उतरा वैसे ही युसुफ़ बिजली की भांति यूथ लीग के स्वयंसेवकों का एक जत्था लेकर 'लाल द्वार' के भीतर घुस गए तथा आयोग के सदस्यों के समक्ष नारा लगाने लगे—'साइमन वापस जाओ'। इस पर पुलिस ने आवेश में आकर प्रदर्शनकारियों पर तत्काल लाठियां चलाईं। युसुफ़ को झुकाया नहीं जा सका। उन्होंने तथा उनके साथियों ने लाठी चार्ज का आदेश देनेवाले पुलिस सार्जेंट कार्टर पर मुकदमा दायर कर दिया। वह मुकदमा अदालत में 9 महीने की लंबी अवधि तक लटका रहा तथा अंत में कार्यकारी प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट पंडित ने युवा स्वयंसेवकों पर अकारण लाठी चार्ज करने के अपराध में सार्जेंट को एक सौ रुपए जुर्माने का दंड दिया। युसुफ़ तथा उनके साथियों के लिए यह एक महान विजय थी। इससे उनका मनोबल बढ़ा। किंतु उनकी इस विजय का मूल्य प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट पंडित को चुकाना पड़ा। सरकार ने उन्हें उनके पद पर स्थायी करने से इनकार कर दिया। युसुफ़ को भी साइमन कमीशन के बहिष्कार का मूल्य चुकाना पड़ा था, उन्हें अदालतों में वकालत करने के लिए अनुमति पत्र देने से इनकार कर दिया गया।

मोल बंदरगाह पर प्रदर्शन के फलस्वरूप पुलिस ने साइमन कमीशन के सदस्यों को चोरी-छिपे पिछले दरवाजे से निकाला।

इस घटना के बाद अदम्य युसुफ़ मेहरअली और उनके साथियों ने 'बॉम्बे यूथ लीग साइमन बहिष्कार समिति' की ओर से एक रंगीन पोस्टर निकाला जिस पर लिखा गया था :

ब्रिटिश सिंह चूहा बन गया

"साइमन कमीशन बंबई के पिछले द्वार से भागा
कहां है ब्रिटेन का इस्पाती ढांचा ?
कहां है उसका बहुप्रचारित साहस ?
उसमें नहीं रहा साहस लड़ने का—
एक युद्ध साफ-सुथरा,

कौन कर रहा है स्वागत साइमन कमीशन का ?
खुशामदी, चाटुकार और वे
कोई भी अस्तित्व ही नहीं है जिनका।"

साइमन कमीशन के मोल बंदरगाह पर उतरते ही उसके समक्ष युसुफ़ मेहरअली और उनके साथियों द्वारा किए गए तूफानी प्रदर्शन के उपरांत बंबई में ही ग्रांट रोड पर एक भारी भीड़ ने अपना विरोध प्रदर्शित किया। ग्रांट रोड की रैली में पुलिस ने जैसे ही युसुफ़ मेहरअली को देखा, उन्हें नीचे गिरा दिया और कठोर दंड देने के लिए ग्रांट रोड पुल के एक सिरे से दूसरे सिरे तक उन्हें लुढ़काया। युसुफ़ इस अग्नि परीक्षा में भी खरे उतरे। इससे वहां एकत्र युवा और छात्र इतने उत्प्रेरित हो गए कि वे पुलिस दमन के बावजूद साइमन कमीशन के विरुद्ध प्रदर्शन करते रहे।

युसुफ़ यह बात भली प्रकार जानते थे कि साइमन कमीशन को बंबई में जिस कठोर विरोध का सामना करना पड़ा था उसके बाद वह देश के अन्य भागों में जाने पर सतर्कता बरतेगा तथा आम लोगों से सामना करने को टालता रहेगा। तथापि, युसुफ़ देश भर में एक सघन साइमन-कमीशन-विरोधी-वातावरण तथा कमीशन के विरुद्ध एक सशक्त जन आंदोलन तैयार करने के लिए व्यग्र हो उठे। उन्होंने उन लोगों की अत्यंत कटु आलोचना शुरू कर दी जो इस प्रकार के आंदोलन की संभावना के प्रति उत्साही न थे।

साइमन कमीशन के विरुद्ध छेड़े गए आंदोलन को अधिक सक्रिय और सघन बनाने की योजना तैयार करने की दृष्टि से बॉम्बे यूथ लीग के तत्वावधान में 19 सितंबर, 1928 को बंबई के जिन्ना सभागार में एक सभा बुलाई गयी।

उस सभा में युसुफ़ मेहरअली ने साइमन कमीशन के विरुद्ध छेड़े गए जनांदोलन के प्रति कतिपय नेताओं की उदासीनता की कटु आलोचना की तथा इस प्रश्न पर, जिसने कि समूचे देश में रोष की लहर जगा दी थी, एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन संगठित करने की हार्दिक अपील की।

युसुफ़ का यह अनुमान सही था कि कमीशन जैसे जैसे देश में घूमेगा वैसे वैसे आंदोलन सघन होता जाएगा तथा सरकार के प्रति जनासंतोष और अधिक बढ़ता जाएगा। लाला लाजपत राय के ओजस्वी नेतृत्व में हुई लाहौर की घटना ने युसुफ़ मेहरअली की राजनीतिक भविष्यवाणी को सही सिद्ध कर दिया।

साइमन कमीशन के विरुद्ध जनता के कृतसंकल्प संघर्ष का रणक्षेत्र बंबई के बाद लाहौर बना। पंजाब केसरी लाला लाजपत राय ने, ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीय जनता की विहित आकांक्षाओं की सर्वथा उपेक्षा करके साइमन कमीशन की नियुक्ति के अन्याय के विरुद्ध केंद्रीय विधान सभा (सेंट्रल असेंबली) में गर्जना की।

साइमन कमीशन ने जब लाहौर जाने के निश्चय की घोषणा कर दी तब

पंडित मदन मोहन मालवीय ने लाला लाजपत राय से हार्दिक प्रार्थना की कि वे कमीशन के विरोध में आयोजित जनप्रदर्शन का नेतृत्व करें तथा जन आक्रोश एवं असंतोष को स्वर प्रदान करें। युसुफ़ मेहरअली ने भी लाला लाजपत राय के नाम एक तार भेजकर उनसे आंदोलन का नेतृत्व स्वीकार करने की प्रार्थना की।

साइमन कमीशन जब लाहौर रेलवे स्टेशन पहुंचा तब पुलिस ने जनता के रोष का सामना करने के लिए युद्ध स्तर पर तैयारी कर रखी थी। स्टेशन से कोई दो-सौ मीटर की दूरी पर काँटेदार तार की बाड़ लगायी गयी थी तथा जैसे ही लाला लाजपत राय, पंडित मदन मोहन मालवीय, डा. गोपीचंद भार्गव और मौलाना जफर अली के नेतृत्व में साइमन कमीशन के विरुद्ध नारे लगाता हुआ जुलूस काँटेदार तार के समीप पहुंचा वैसे ही पुलिस ने अचानक लाठियां चलाना शुरू कर दिया। आवश्यकता से अधिक उत्साह का प्रदर्शन करते हुए पुलिस अधिकारी स्कॉट ने एक भारी लाठी से लाला जी के सीने पर भरपूर प्रहार किया जिससे उनके हृदय पर गहरी चोट लगी। डाक्टरों की सलाह की उपेक्षा करके लाला जी ने साइमन कमीशन का विरोध कर रहे प्रदर्शनकारियों पर पुलिस के दमन के प्रति विरोध प्रकट करने के लिए उसी शाम आयोजित एक विराट जनसभा को संबोधित किया। अपने उस ओजस्वी एवं ऐतिहासिक भाषण में लाला जी ने सचमुच एक सिंह की भांति गर्जना की, "आज हमारे सीने पर की गयी प्रत्येक चोट ब्रिटिश साम्राज्य के कफन में ठोंकी जाने वाली कील साबित होगी।"

पंजाब केसरी लाला जी की भविष्यवाणी अक्षरश: सत्य सिद्ध हुई। उसके पश्चात केवल 19 वर्ष की छोटी-सी अवधि में ही ब्रिटिश साम्राज्य का सौभाग्य नष्ट हो गया तथा भारत विदेशी दासता से मुक्त हुआ।

उस दिन सवेरे ही उन्होंने अपने सीने पर लाठियों के घातक प्रहार झेले थे, इस सभा में हुई थकान के कारण लाला जी के स्वास्थ्य में और अधिक गिरावट आ गयी। 17 नवंबर, 1928 के दिन उनकी मृत्यु का हृदयद्रावक समाचार सुनकर समूचा राष्ट्र स्तब्ध रह गया एवं शोकमग्न हो गया। उनका अंतिम संस्कार रावी नदी के उस ऐतिहासिक तट पर किया गया, जो बाद में पूर्ण स्वराज्य की राष्ट्रीय प्रतिज्ञा का साक्षी बना।

युसुफ़ मेहरअली को लाला लाजपत राय के बलिदान से गहरा आघात लगा तथा उन्होंने बंबई के युवकों का आह्वान किया कि वे ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध उग्र राष्ट्रवादी शक्तियों को सुदृढ़ता प्रदान करके पंजाब केसरी के बलिदान का प्रतिशोध लें। युसुफ़ ने लाला लाजपत राय की हत्या को जानबूझकर तथा सुनियोजित हत्या कहा। उसके प्रतिरोध के लिए युवकों को जगाने के लिए उन्होंने आकाश-पाताल एक कर दिया।

देश के विभिन्न भागों में अनेक लोगों ने साइमन कमीशन के विरुद्ध प्रदर्शन

किए परंतु युसुफ़ मेहरअली बंबई के युवाओं के सच्चे प्रतीक के रूप में उभरे, जिन्होंने 'साइमन वापस जाओ' नारा पहले-पहल लगाया था। यह एक निर्विवाद सत्य है।

युसुफ़ मेहरअली उस कल्पनाशक्ति के धनी थे जिसके द्वारा वे प्रत्येक महत्त्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय घटना एवं अवसर का भारत के राष्ट्रीय हित के लिए पूरा पूरा लाभ उठाते थे। ऐसा ही एक अवसर मिस्र की 'स्वतंत्रता की घोषणा' का दसवां वार्षिक समारोह था। उस दिन युसुफ़ और उनके साथियों ने दीवारों पर एक दिलचस्प पोस्टर चिपकाया जिससे साइमन कमीशन के विरुद्ध भारतीय जनांदोलन को भारी बल मिला। पोस्टर इस प्रकार था :

जो मिस्र ने किया, वह भारत कर सकता है

* मिस्र में घृणित मिल्नर कमीशन का प्लेग की भांति हर जगह बहिष्कार किया गया;
* कमीशन के कुछ सदस्यों ने जब न्यायालय में प्रवेश किया तो उनके प्रति तिरस्कार प्रकट करने के लिए न्यायाधीश वहां से उठकर बाहर निकल गया;
* यदि वे रेस्त्रां में जाते तो बैरे उन्हें भोजन परोसने से इनकार कर देते;
* उन्हें टैक्सी की आवश्यकता होती तो ड्राइवर उन्हें ले जाने से इनकार कर देते;
* 'जन आक्रोश' समूचे देश में उनका पीछा करता रहा;
* वे परेशान और अपमानित हुए, उनके षड्यंत्र विफल रहे।

वे कलंकित होकर अपने देश को भाग गए।

बंबई के युवाओ !
यह चमत्कारपूर्ण जागृति किसने उत्पन्न की ?
और किसी ने नहीं
मिस्र के वीर युवाओं ने
अतः
बंबई के युवाओ ! उठो और जुट जाओ
साइमनवादियों को
पराजित करने के कार्य में।

भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता संघर्ष को जानबूझकर आर्थिक मुद्दों, विशेषतया किसानों की समस्याओं के साथ जोड़कर उसे पैनापन प्रदान

करने की चेष्टा की। उन्होंने 1917 में बिहार के चंपारण में, 1918 में गुजरात के खेड़ा में तथा 1928 में गुजरात के ही बारदोली में किसानों की शिकायतों के निवारण के लिए अहिंसात्मक प्रतिरोध के आदर्श अस्त्र का प्रयोग किया।

महात्मा गांधी की प्रेरणा से सरदार वल्लभभाई पटेल के सुयोग्य नेतृत्व में बारदोली का किसान सत्याग्रह अहिंसक प्रतिरोध, संगठन तथा भूराजस्व में अकारण वृद्धि के संबंध में 88,000 किसानों की शिकायत के समाधान का एक ऐतिहासिक उदाहरण बन गया। इस संघर्ष में 'कर न चुकाने' की गांधीवादी पद्धति ने शानदार सफलता प्राप्त की। उधर ब्रिटिश सरकार का दमनचक्र सत्याग्रहियों के विरुद्ध पूरे वेग से चलता रहा। किसानों की भूमि जब्त कर ली गयी, किंतु किसान तनिक विचलित न हुए और अंततः वे अपनी मांगें मनवाने में सफल रहे। कुछ वर्ष पश्चात उन्हें उनकी जब्त भूमि भी वापस मिल गयी।

युसुफ़ मेहरअली पर इस वीरतापूर्ण बारदोली सत्याग्रह की गहरी छाप पड़ी। बॉम्बे प्रेसीडेंसी में यूथ लीग ने उनके नेतृत्व में इस किसान सत्याग्रह के लिए जन समर्थन जुटाने की दिशा में यथासंभव भरपूर प्रयास किए।

युसुफ़ मेहरअली द्वारा तैयार की गयी 'बॉम्बे प्रेसीडेंसी यूथ लीग को वर्ष 1928 की प्रथम वार्षिक रिपोर्ट' बारदोली सत्याग्रह तथा उसके प्रति यूथ लीग की प्रतिक्रिया के बारे में एक मुखर टिप्पणी है। उसमें इस संदर्भ में कहा गया है :

'बारदोली, जुझारू मनोभाव का नवजागरण'

"हमारी गतिविधि का अगला महत्वपूर्ण चरण बारदोली संघर्ष था। वह अचानक वज्र की भांति टूट पड़ा, उसने अन्य सभी प्रश्नों को गौण कर दिया तथा वह देश के संपूर्ण राजनीतिक जीवन पर छा गया। युवाओं के अनेक दल समस्या को प्रत्यक्ष रूप से समझने तथा बारदोली के वीर किसानों से प्रेरणा ग्रहण करने के लिए संघर्ष क्षेत्र (बारदोली) होकर आए। समूचे प्रेसीडेंसी क्षेत्र के युवाओं ने तत्काल बारदोली के प्रश्न को हाथ में ले लिया तथा बारदोली सत्याग्रह के आश्चर्यजनक एवं अविस्मरणीय उत्साह के दृश्य तथा उसमें जनता की गहरी दिलचस्पी ने नौकरशाही को होश में लाने की दिशा में योगदान किया। यह एक काफी कुछ सीमा तक यूथ लीग के परिश्रम का फल था। 4 जुलाई, 1928 को बंबई के युवाओं ने जिस उत्साहपूर्वक बारदोली दिवस मनाया उसे भुलाया नहीं जा सकता। गर्मजोशी से परिपूर्ण सभा तथा युवाओं द्वारा सरदार वल्लभभाई पटेल के अद्भुत स्वागत के पश्चात मूसलाधार वर्षा के बीच ही जुलूस एंपायर थियेटर से शुरू हुआ। उसमें हजारों युवा थे। वह दृश्य सदा ही उनके लिए एक सुखद और प्रिय स्मृति बना रहेगा। बॉम्बे यूथ लीग की 'बारदोली प्रचार तथा राहत समिति' ने अपने पूरक कार्य

के रूप में बारदोली गाथा के प्रसार के लिए समय-समय पर बढ़िया भाषणों का भी अयोजन किया। सरदार वल्लभभाई पटेल के फोटो वाले बटन, बारदोली सत्याग्रह के झंडे, बारदोली अभ्यास पुस्तिकाएं आदि के वितरण ने सत्याग्रह अभियान को बल पहुंचाया।"

बारदोली सत्याग्रह के समर्थन में युसुफ़ मेहरअली तथा उनके यूथ लीग के साथियों की भूमिका का रिपोर्ट में दिया गया यह विवरण युसुफ़ द्वारा युवाओं में उत्पन्न की गयी असामान्य जागृति तथा किसानों के साथ एकात्मता की भावना पर भरपूर प्रकाश डालता है।

बॉम्बे प्रेसिडेंसी यूथ लीग का दूसरा अधिवेशन 12 तथा 13 दिसंबर, 1928 को पुणे में हुआ। इस सम्मेलन में युसुफ़ मेहरअली आकर्षण के प्रमुख केंद्र थे। अधिवेशन की कार्यसूची के दो महत्वपूर्ण विषय थे—यूथ लीग के संविधान की स्वीकृति तथा युसुफ़ मेहरअली द्वारा रखा गया वह प्रस्ताव जिसमें 'पूर्ण स्वराज्य' को तत्काल राष्ट्रीय लक्ष्य घोषित करने की आवश्यकता पर पूरे मनोयोग से बल दिया गया था।

यूथ लीग के संविधान का प्रारूप तैयार करने में युसुफ़ ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निबाही थी। उस संविधान के निम्न अंशों से उस युवा पीढ़ी के राजनीतिक चिंतन का बोध होता है, जिसका प्रतिनिधित्व युसुफ़ कर रहे थे :

यूथ लीग का संविधान

उद्देश्य तथा आदर्श : लीग का उद्देश्य एक सार्वजनिक संगठन तथा समान आदर्शों के अनुसरण द्वारा बॉम्बे प्रेसीडेंसी के युवाओं में एकता लाना, उनमें स्वैच्छिक सेवा तथा आत्मबलिदान की भावना फूंकना तथा भारत के लिए पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने का संकल्प लेकर मातृभूमि की सेवा करने के लिए तैयार करना है।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए लीग :

(1) हर तरह की सांप्रदायिकता से संघर्ष करेगी तथा अपने सदस्यों में एक व्यापक, सहनशीलतापूर्ण और विश्वबंधुत्व के दृष्टिकोण को प्रोत्साहन देगी;

(2) उन प्राचीन सामाजिक एवं धार्मिक प्रथाओं के निराकरण के लिए कार्य करेगी जिनकी उपादेयता कभी की समाप्त हो चुकी है;

(3) विद्यालयों और महाविद्यालयों में शारीरिक तथा सैनिक शिक्षा की सुविधाओं में वृद्धि की मांग करना तथा जहां संभव हो वहां इस प्रकार की सुविधाएं अपनी ओर से प्रदान करना एवं जिमनेजियम और अखाड़ा आंदोलन के प्रसार में सहायता देना;

(4) स्वदेशी को प्रोत्साहन देना;
(5) युवाओं की बेरोजगारी में वृद्धि के कारणों का अध्ययन करना तथा जहां संभव हो उसके निराकरण के लिए उपाय और साधन सुझाना;
(6) समूची प्रेसीडेंसी में तत्काल निःशुल्क एवं अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा लागू करने तथा माध्यमिक, उच्च एवं व्यावसायिक शिक्षा के विस्तार की मांग करना;
(7) प्रेसीडेंसी के युवाओं में सार्वजनिक प्रश्नों पर गहन अध्ययन, स्वतंत्र चिंतन, अनुशासित स्वतंत्रता तथा उत्तरदायित्व की नागरिक चेतना का विकास;
(8) अंतर्राष्ट्रीय प्रश्नों के अध्ययन को प्रोत्साहन देना;
(9) ऐसी अन्य गतिविधि हाथ में लेना जिसमें प्रेसीडेंसी के युवाओं की सक्रिय रुचि हो।

युसुफ़ ने अधिवेशन के समक्ष निम्न प्रस्ताव रखा जो यूथ लीग द्वारा अपने लिए स्वीकृत इस संविधान की भावना के सर्वथा अनुरूप था :

"यह सम्मेलन अपने इस सुविचारित मत की घोषणा करता है कि राष्ट्र का तात्कालिक लक्ष्य पूर्ण स्वराज्य होना चाहिए।"

पूर्ण स्वराज्य को तत्काल राष्ट्र का तात्कालिक लक्ष्य घोषित करने की मांग के अपने इस प्रस्ताव का युसुफ़ ने जोरदार ढंग से समर्थन किया।

'पूर्ण स्वराज्य' संबंधी प्रस्ताव पारित कराने के पीछे युसुफ़ का प्रयोजन 'पूर्ण स्वराज्य' को कांग्रेस के नए लक्ष्य के रूप में स्वीकार करने की दिशा में बढ़ने के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओं को बल पहुंचाना था। यूथ लीग के लिए यह गर्व और आनंद का विषय रहा कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने कुछ समय बाद ही रावी नदी के तट पर आयोजित अपने लाहौर अधिवेशन में यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया जिसमें 'पूर्ण स्वराज्य' को उसका लक्ष्य घोषित किया गया था। इससे पहले कांग्रेस के कुछ नरमपंथी नेताओं ने यूथ लीग के पूर्ण स्वराज्य संबंधी प्रस्ताव को बालकों जैसी एक नासमझी पूर्ण बात कहकर उसकी हंसी उड़ाने की चेष्टा की थी, किंतु जब मातृ संगठन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपने लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज्य को अपना लक्ष्य घोषित कर दिया तब यूथ लीग के आलोचकों पर व्यंग्य करते हुए युसुफ़ मेहरअली ने कहा था, "बालक मनुष्य का पिता होता है।"

भारत के स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान संघर्ष के स्वर विधानमंडलों में भी सुनाई पड़ते थे। महान देशभक्त विट्ठलभाई पटेल केंद्रीय विधानसभा के अध्यक्ष थे तथापि उन्होंने एक देशभक्त और लोकतंत्र निष्ठ के नाते अपने कर्तव्यों की कभी उपेक्षा नहीं की। जिन दिनों समूचे देश में जनता की आजादी का अपहरण करनेवाले

'सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक' के विरुद्ध गहरा रोष व्याप्त था, और सरदार भगत सिंह और उनके साथियों ने केंद्रीय विधानसभा में एक झूठमूठ के बम का विस्फोट किया था, उन्हीं दिनों केंद्रीय विधानसभा में उस विधेयक पर विचार-विमर्श के दौरान उसकी अध्यक्षता करते हुए विट्ठलभाई पटेल ने यह व्यवस्था देकर असाधारण साहस का परिचय दिया कि केंद्रीय विधानसभा में 'सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक' पर होनेवाली चर्चा उन्हीं दिनों क्रांतिकारियों के विरुद्ध चलाए जा रहे मेरठ षड्यंत्र मुकदमे की सुनवाई को प्रभावित कर सकती थी अत: उस विधेयक पर किसी प्रकार की बहस नहीं की जा सकती थी।

केंद्रीय विधानसभा के अध्यक्ष के इस दृढ़ तथा साहसिक निर्णय का युसुफ़ मेहरअली पर गहरा प्रभाव पड़ा तथा उन्होंने विट्ठलभाई पटेल को उनके प्रशंसनीय साहस पर बधाई देने के लिए बंबई के माटुंगा क्षेत्र के पेंप्पू सभागार में एक सार्वजनिक सभा बुलाई, जिसमें उन्होंने अपनी चिरपरिचित शैली में अपने श्रोताओं से कहा : "सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक अध्यादेश को लागू करके वायसराय ने जिस बम का विस्फोट किया है, वह केंद्रीय विधानसभा में हुए बम विस्फोट की अपेक्षा कहीं अधिक हानिकारक और खतरनाक है।"

सत्य की अभिव्यक्ति का यह सबसे अधिक विस्फोटक ढंग था।

महात्मा गांधी के नेतृत्व में चल रहे भारत के स्वाधीनता संघर्ष के दौरान स्वदेशी आंदोलन ने काफ़ी महत्वपूर्ण आयाम पा लिया था। स्वदेशी के प्रसार और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के लिए यूथ लीग के अभियान का ब्यौरा तैयार करने में युसुफ़ मेहरअली ने अपनी मौलिक प्रतिभा का परिचय दिया। यूथ लीग ने युसुफ़ के कल्पनाशील मार्गदर्शन में स्वदेशी-निर्देशिका तैयार की जिसमें उपलब्ध स्वदेशी वस्तुओं का मूल्य सूची सहित समस्त ब्यौरा दिया गया था। विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तथा स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार के लिए उत्तेजक गाने गा गाकर बंबई की बस्तियों में फेरी देने वाले दस्ते तैयार किए गए थे।

लीग के 'बायकाट ब्रिगेडियर' के नाम से विख्यात स्वयंसेवक अपने हाथों में स्वदेशी वस्तुओं की सूची लिये हुए बस्तियों में घूमते रहते थे। यूथ लीग ने एक छोटा-सा संग्रहालय भी बनाया था जिसमें आयातित वस्तुओं के स्वदेशी विकल्प रखे गए थे तथा स्वेदशी उपभोक्ता वस्तुओं के मूल्यों का ब्यौरा भी प्रस्तुत किया गया था। युसुफ़ और उनके सहयोगियों ने 1929 में 6 से 13 अप्रैल तक एक आकर्षक 'स्वदेशी बाजार' लगाया, तथा यूथ लीग के स्वयंसेवक एक चलता-फिरता बाजार लेकर बंबई की बस्तियों में घूमते रहते थे। इस प्रकार युसुफ़ ने एक आंदोलनकारी के रूप में ही नहीं वरन स्वदेशी भावना के प्रति समर्पित रचनात्मक एवं कल्पनाशील कार्यकर्ता के रूप में भी प्रतिष्ठा अर्जित की। युसुफ़ द्वारा संगठित जुलूसों में रचनात्मक दृष्टि के साथ साथ राजनीतिक पीड़ितों के लिए राहत और

सहायता का स्वर भी गूंजता था। जुलूसों में यूथ लीग के स्वयंसेवक हाथों में झंडियां लिये रहते थे जिन पर लिखा रहता था : "विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करो, स्वदेशी को प्रोत्साहन दो", "मेरठ कांड के क्रांतिकारियों के बचाव के लिए हमारी ओर से पूरी सहायता" इत्यादि।

युसुफ़ मेहरअली की सतर्कता और पहल शक्ति के कारण कोई भी महत्वपूर्ण सार्वजनिक मुद्दा उपेक्षित नहीं रह पाता था। ऐसा ही एक मुद्दा ब्रिटिश सरकार की जेलों में राजनीतिक बंदियों के प्रति दुर्व्यवहार का था। एक लंबे समय तक सरकार ने राजनीतिक बंदियों के लिए विशेष वर्ग की सुविधाएं प्रदान नहीं कीं। उन्हें अपराधियों के समान माना जाता। उन दिनों उन्हें पत्र व्यवहार तथा भेंट जैसी सुविधाएं प्राप्त न थीं। भोजन बहुत घटिया होता था। 1930 में जब सरदार पटेल को साबरमती जेल में रखा गया तो उन्हें रेत मिश्रित आटे की रोटियां दी जाती थीं। वे उन रोटियों को चबा नहीं सकते थे। सरदार ने उस स्थिति का सामना करने के लिए एक बुद्धिमत्तापूर्ण उपाय खोज निकाला। वे रोटियों को मसलकर चूर लेते तथा उस चूरे को पानी में डाल देते जिससे कि रेत के कण नीचे बैठ जाते तथा खाने के योग्य अंश अलग से फूल जाते। स्वतंत्रता संघर्ष के दिनों में प्राय: सभी जेलों में राजनीतिक बंदियों की ऐसी ही स्थिति थी।

प्रसिद्ध क्रांतिकारी जतिन दास ने राजनीतिक बंदियों के अधिकारों के लिए संघर्ष करने का निश्चय करके लाहौर जेल में अपने साथियों सहित आमरण अनशन शुरू कर दिया। सरकार राजनीतिक बंदियों की मांगें मानने के लिए तनिक तैयार न थी, परंतु जतिन दास उनकी न्यायसंगत शिकायतों का निवारण कराने के लिए अपना जीवन दांव पर लगाने के लिए कटिबद्ध थे। अंतत: उन्होंने 63 दिन के त्रासदायी अनशन के उपरांत 14 सितंबर, 1928 को प्राण त्याग दिए। जतिन दास के जीवनकाल में उनके अनशन की पीड़ा जिस लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाई थी, उनके बलिदान से कुछ समय बाद ही वह लक्ष्य सिद्ध हो गया, और सरकार ने राजनीतिक बंदियों को एक विशेष वर्ग प्रदान कर दिया तथा विशेष अधिकारों और सुविधाओं की उनकी मांग स्वीकार कर ली।

जतिन दास के बलिदान के पश्चात पंडित मोतीलाल नेहरू ने केंद्रीय विधानसभा में जतिन दास के अनशन के प्रति सरकार के रवैये के विरुद्ध अपना प्रतिरोध प्रकट करने के लिए एक प्रस्ताव रखा।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उनके बलिदान पर कहा : "भारतीय शहीदों की लंबी और गौरवपूर्ण शृंखला में एक नाम और जुड़ गया।"

मुहम्मद अली जिन्ना ने केंद्रीय विधानसभा में कहा : "अनशनकारी व्यक्ति अपनी आत्मा के आदेश पर ही ऐसा करता है।"

जतिन दास के चरम बलिदान ने युसुफ़ मेहरअली को भीतर तक हिला दिया

तथा उन्होंने श्रेष्ठ बलिदानी जतिन दास के प्रति सहानुभूति व्यक्त करने के लिए बंबई के फोर्ट क्षेत्र में कालेज छात्रों के जुलूस आयोजित किए।

शाम को यूथ लीग ने एक भारी जुलूस निकाला जो बंबई के ऐतिहासिक चौपाटी समुद्र तट पर लोकमान्य तिलक की मूर्ति के नीचे जा पहुंचा। प्रदर्शनकारी गगनभेदी स्वर में 'इंकलाब जिंदाबाद' तथा 'साम्राज्यशाही का नाश हो' जैसे नारे लगा रहे थे। चौपाटी में पुलिस ने जुलूस पर डंडे बरसाने शुरू कर दिये जिससे युसुफ़ मेहरअली, जोशिम अल्वा, कोप्पीकर तथा अन्य लोग घायल हो गये।

युसुफ़ मेहरअली, गिरफ्तारियों और लाठियों की बौछार से विचलित नहीं हुए। अपने एक साथी तथा यूथ लीग के कार्यकर्ता हचिंसन की गिरफ्तारी पर विरोध प्रकट करने के लिए 16 जून, 1929 को आयोजित एक सार्वजनिक सभा में बोलते हुए युसुफ़ मेहरअली ने व्यंग्य में कहा था, "किसी ने लंदन टाइम्स के विषय में एक बार यों कहा था, 'जब तक लंदन टाइम्स ने यह नहीं लिखा कि मैं गलत हूं तब तक मुझे यह ज्ञात नहीं हो पाया था कि मैं एकदम सही था। मुझे ऐसा लगता है कि जब तक किसी व्यक्ति को गिरफ्तार नहीं कर लिया जाता तब तक आप दावे से यह नहीं कह सकते कि वह एकदम सही है।"

अपनी गिरफ्तारी की इस प्रकार खिल्ली उड़ाने वाले युसुफ़ मेहरअली जैसे व्यक्ति के विरुद्ध सरकार द्वारा गिरफ्तारी के शस्त्र का प्रयोग किसी भी स्थिति में उसे चोट नहीं पहुंचा सकता था।

युवा आंदोलन में अपनी उग्र राष्ट्रवादी गतिविधि के कारण युसुफ़ मेहरअली सदा ही भारत के अंग्रेज शासकों की दृष्टि में शंकास्पद बने रहे। पुलिस की गुप्तचर शाखा के उपमहानिदेशक के एक गोपनीय दस्तावेज के निम्न अंश से सरकार का यह दृष्टिकोण सिद्ध होता है।

गोपनीय

गुप्तचर शाखा के उपमहानिदेशक
का कार्यालय
पो. बा. नं. 46
पुणे
26 सितंबर, 1931

प्रिय मैक्सवैल,

इस पत्र के साथ 22, 23 दिसंबर, 1931 को सुभाष चन्द्र बोस की अध्यक्षता में पुणे में हुए महाराष्ट्र युवा सम्मेलन की राजनीतिक ब्रीच (व्यवस्था भंग करने वाली कार्यवाही) रिपोर्ट की प्रतियां संलग्न की जा रही हैं। आपका ध्यान बंबई के कम्युनिस्ट चार्ल्स मस्करेंहस तथा युसुफ़ कलकत्तावाला द्वारा प्रसारित 'भारतीय

क्रांतिकारी श्रमिक वर्ग दल' के संगठन के लिए बनाई गयी समिति की साइक्लोस्टाइल्ड प्रचार सामग्री की ओर भी आकर्षित किया जाता है...

यहां यह स्पष्ट है कि 'युसुफ़ कलकत्तावाला' नाम का प्रयोग 'युसुफ़ मेहरअली' की पहचान छिपाने के लिए किया गया था। इस गोपनीय दस्तावेज में जिस क्रांतिकारी श्रमिक वर्ग दल का उल्लेख किया गया है, उसके बारे में किसी को कुछ अता-पता न था, हां, कुछ समय बाद 1934 में जयप्रकाश नारायण, आचार्य नरेंद्र देव, अशोक मेहता, एन. जी. गोरे, मीनू मसानी तथा एस. एम. जोशी के साथ साथ युसुफ़ मेहरअली भी कांग्रेस समाजवादी दल के संस्थापक बने।

अपने तूफानी राजनीतिक जीवन में प्रायः युसुफ़ मेहरअली के साहस तथा उनकी ओजस्वी, दुस्साहसी प्रवृत्ति और विलक्षण चुटीली एवं विनोदी प्रकृति का परिचय मिलता था। 1932 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के दिन अत्यंत व्यस्तता के दिन थे। युसुफ़ मेहरअली को 2 मार्च, 1932 बुधवार को बंबई के प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट (तृतीय न्यायालय) एन. डी. खंडालावाला के समक्ष पेश किया गया। उन पर अध्यादेश संख्या 2 की धारा 31 के अंतर्गत पुलिस कमिश्नर के उस आदेश का उल्लंघन करने का आरोप लगाया गया था, जिसके द्वारा उन्हें सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेने से रोका गया था। जब मजिस्ट्रेट ने मेहरअली से कहा कि क्या वे उनके विरुद्ध प्रमाण प्रस्तुत करने वाले इंस्पेक्टर फॉस्टर से कुछ पूछना चाहेंगे तब युसुफ़ ने व्यंग्य में उत्तर दिया :

"मैं इस नाटक का पूरा आनंद ले रहा हूं।"

इसके पश्चात मजिस्ट्रेट तथा युसुफ़ मेहरअली के बीच दिलचस्प नोंक-झोंक हुई :

मजिस्ट्रेट : आक्रामक तेवर मत अपनाओ।

मेहरअली : मेरे मन में आक्रामक होने की तनिक भी कल्पना नहीं है। पुलिस वक्तव्य में कहा गया है : "इंस्पेक्टर फॉस्टर ने बताया कि आरोपित व्यक्ति को मंगलवार की शाम 3 बजकर 45 मिनट पर पुलिस कमिश्नर कार्यालय में लाया गया। उसको पुलिस कमिश्नर का एक आदेश दिया गया जिस पर उसने हस्ताक्षर किए। उसमें कहा गया था कि वह सायं 4 बजे से पहले मुख्यालय पर सुपरिंटेंडेंट गॉडविन के समक्ष प्रस्तुत हो। वह कार्यालय से निकलकर टैक्सी पर सवार हुआ। गवाह उसके पीछे पीछे चला और उसने देखा कि वह शेख मेमन स्ट्रीट पर व्यापारियों की भीड़ के सामने भाषण दे रहा है। तब उसने (गवाह ने) उसे गिरफ्तार कर लिया। सुपरिंटेंडेंट गॉडविन ने बताया कि आरोपित व्यक्ति स्वयं मुख्यालय में उपस्थित नहीं हुआ।"

मुझे 3 बजकर 50 मिनट पर पुलिस कमिश्नर कार्यालय में लाया गया तथा 3 बजकर 50 मिनट पर ही मुझे ये आदेश थमाया गया कि मैं सविनय अवज्ञा आंदोलन में तनिक भाग न लूं तथा 4 बजे सुपरिंटेंडेंट गॉडविन के सामने प्रस्तुत हो जाऊं। मैंने पुलिस कमिश्नर को उसी समय बता दिया था कि मेरा उस आदेश के पालन का तनिक इरादा न था। मैंने दस मिनट के क्रांतिकारी समय का भरपूर उपयोग करने का निश्चय कर लिया था। समय बीत रहा था अत: मैं लपककर टैक्सी पर सवार हुआ तथा सीधा शेख मेमन स्ट्रीट पर कपड़ा बाजार जा पहुंचा। इंसपेक्टर फॉस्टर और डिप्टी इंस्पेक्टर कारनिक तेजी से मेरा पीछा कर रहे थे। अपने गंतव्य पर पहुंचकर मैं कार से उतरा तथा वहां एकत्र बंबई के नागरिकों का आह्वान किया कि वे मेरा अनुसरण करें।

मजिस्ट्रेट : बात को लंबा मत खींचो।

मेहरअली : मुझे 4 बजने से दो मिनट पहले ही गिरफ्तार कर लिया गया।

मजिस्ट्रेट : क्या तुम्हारे पास घड़ी थी ?

मेहरअली : मैंने श्री फॉस्टर की घड़ी देख ली थी।

मजिस्ट्रेट : इससे कोई अंतर नहीं पड़ता क्योंकि तुम्हें यह आदेश भी दिया गया था कि तुम आंदोलन में भाग नहीं लोगे।

मेहरअली : श्रीमान मजिस्ट्रेट महोदय ! जिस कानून को हमने मान्यता ही नहीं प्रदान की उस कानून के अंतर्गत हमारे साथ मनमाना व्यवहार कैसे किया जा सकता है ?

मजिस्ट्रेट : तुम्हें एक वर्ष के कठोर कारावास और सौ रुपए जुर्माने का दंड दिया जाता है। जुर्माने का भुगतान न करने पर तुम्हें 3 महीने की सजा और भुगतनी होगी।

मेहरअली : यह तो बहुत ही हल्की सजा है।

इस प्रकार के संवादों से यह बोध होता है कि युसुफ़ अपने देश के प्रति कर्तव्यपालन के परिणामों को किस अदम्य साहस के साथ झेलने के लिए तैयार थे।

बंबई में वडाला का नमक सत्याग्रह युसुफ़ की वीरता का एक अन्य उदाहरण प्रस्तुत करता है।

नमक सत्याग्रह में भाग लेने के लिए हजारों सत्याग्रही एकत्र हुए थे। भीड़ को तितर-बितर करने के लिए घुड़सवार, पुलिस और अंग्रेज सार्जेंटों ने निर्दयतापूर्वक उस पर घोड़े दौड़ा दिए। युसुफ़ मेहरअली उस समय वहां मौजूद थे तथा इस बर्बरतापूर्ण दमन से रोष में आ गए थे। वे तेजी से एक घोड़े की लगाम की ओर लपके और उसे मजबूती से पकड़े रहे। घोड़ा तेज गति से भाग रहा था। पुलिस युसुफ़ की इस वीरता पर सन्न रह गयी और उसने उन्हें घेरकर गिरफ्तार कर लिया।

वहां एकत्र सत्याग्रही इस वीर युवा द्वारा प्रदर्शित साहस की मुग्ध भाव से प्रशंसा कर रहे थे।

युवा वर्ग के नेता के रूप में युसुफ़ मेहरअली द्वारा हाथ में लिए गए संघर्ष, आंदोलनों, प्रदर्शनों तथा जनाभियानों की इन समस्त गतिविधियों ने उन्हें भारी मात्रा में विश्वसनीयता प्रदान की तथा उनके भावी राजनीतिक जीवन के लिए एक ऐसा लोकप्रिय जनाधार प्रदान कर दिया जिसे सरकार दमन के शक्तिशाली शस्त्रों से भी नहीं हिला पाई।

4. समाजवादी दस्तावेज की संरचना

मेरी दृष्टि में समाजवादी नीति किसी सिद्धांत से नहीं वरन एक आस्था से जुड़ी है। समाजवादी सिद्धांत जितने अधिक वैज्ञानिकता के दावे करते जाएंगे उतने ही अधिक क्षणभंगुर बनते जाएंगे, परंतु समाजवादी मूल्य शाश्वत हैं।
—इग्नाज़ियों सिलोन

1934

आज तो समाजवाद शब्द भारतीय संविधान की प्रस्तावना की शोभा बढ़ा रहा है, किंतु समाजवाद को यह मान्यता उस दीर्घ संघर्ष के बाद प्राप्त हुई है, जिसमें युसुफ़ मेहरअली ने अल्पायु में ही महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वाधीनतापूर्व 1932 में सविनय अवज्ञा आंदोलन धीमा पड़ रहा था तथा राष्ट्र के स्वीधनता संघर्ष की प्रतीक कांग्रेस की राजनीति में संविधानवादियों का वर्चस्व बढ़ रहा था। ऐसे नाजुक मौके पर राजनीति में आमूल परिवर्तन लाने तथा देश में समाजवादी विचारधारा के प्रसार के लिए कांग्रेस समाजवादी दल का गठन किया गया।

दल ने स्वाधीनता संघर्ष की मुख्यधारा की प्रतिनिधि कांग्रेस को समाजवादी दिशा प्रदान करने की चेष्टा की। कांग्रेस समाजवादी दल के गठन का विचार 1932-33 के दौरान नासिक केंद्रीय कारागार में उठा था तथा उसका स्थापना-सम्मेलन 1934 में बंबई में हुआ जिसमें आचार्य नरेंद्र देव, जयप्रकाश नारायण, डा. राममनोहर लोहिया, कमला देवी चट्टोपाध्याय, अच्युत पटवर्धन, एस. एम. जोशी, एन. जी. गोरे, एम. एल. दांतवाला तथा अनेक अन्य प्रतिबद्ध समाजवादियों के मार्गदर्शन में कांग्रेस समाजवादी दल ने जन्म लिया। कांग्रेस समाजवादी दल के प्रारंभिक वर्षों में युसुफ मेहरअली ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की तथा युवा शक्ति को दल के साथ जुटाया।

1934 में बंबई में आयोजित कांग्रेस समाजवादी दल के स्थापना सम्मेलन के अवसर पर दल ने घोषणा की कि :

"हमारा लक्ष्य भारत के लिए पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करना है। पूर्ण स्वराज्य से

हमारा अभिप्राय भारत को ब्रिटिश साम्राज्यशाही के चंगुल से मुक्त कराना तथा समाजवादी समाज की स्थापना करना है।"

सम्मेलन में स्वीकृत आर्थिक पुनर्रचना संबंधी रूपरेखा में "समूची सत्ता श्रमिक जन साधारण के हाथों में सौंपने, आर्थिक नियोजन, बुनियादी उद्योगों के राष्ट्रीयकरण, वैदेशिक व्यापार पर सरकारी नियंत्रण, सामंतशाही तथा मुआवजा दिए बिना जमींदारी का उन्मूलन, भूमि का पुनर्वितरण तथा सामूहिक और सहकारी कृषि व्यवस्था" अपनाने की हिमायत की गयी थी।

इस रूपरेखा पर सरसरी दृष्टि डालने से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि वह सामान्य आर्थिक लक्ष्यों का संकेत भर करती थी, उसमें उनका विस्तृत ब्यौरा नहीं दिया गया था। उसमें आर्थिक नियोजन का प्रसंग उठाया गया था, परंतु इस समस्या पर कोई चिंतन प्रस्तुत नहीं किया गया था कि सत्ता के केंद्रीयकरण के उस खतरे से कैसे बचा जाएगा जो शासन को सर्व-सत्तावादी प्रवृत्ति की दिशा में ले जाता है, तथा विशेषतया पिछड़ी हुई अर्थव्यवस्था के संदर्भ में नियोजन एवं लोकतंत्र के बीच किस प्रकार समन्वय स्थापित किया जाएगा। पूंजी निर्माण की समस्या कैसे हल होगी ? अर्थव्यवस्था के राष्ट्रीयकृत क्षेत्र को कार्मिक तंत्र के जंजाल में उलझने से बचाए रखकर उस पर लोकतंत्रात्मक नियंत्रण और प्रशासन किस प्रकार स्थापित किया जाएगा। कांग्रेस समाजवादी दल के प्रारंभिक नीतिगत अभिलेखों (दस्तावेजों) में इन प्रश्नों के उत्तर देने की ओर ध्यान नहीं दिया गया था, परंतु बाद में कुछ अन्य लोगों ने, जिनमें युसुफ़ मेहरअली भी थे, समाजवादी आंदोलन की आंतरिक चर्चाओं में ये महत्वपूर्ण प्रश्न उठाए तथा प्रारंभिक अवस्था में जो नीतिगत मुद्दे अस्पष्ट थे वे धीरे धीरे अधिक स्पष्ट और दुविधा मुक्त होते चले गए।

कांग्रेस समाजवादी दल की स्थापना के महत्व का अनुमान दल के संयुक्त सचिव मीनू मसानी की निम्नलिखित टिप्पणी के आधार पर लगाया जा सकता है, जिसे सरकार ने 31 नवंबर, 1935 को उनके इंग्लैंड से भारत लौटने पर जब्त कर लिया था। मसानी जी ने लिखा था :

"समाजवादी आंदोलन का जन्म जेल में हुआ—1932-33 में युवक जहां कहीं भी जेलों में एकत्र हुए उन्होंने इन राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों (जेलों) में बैठकर अपनी समस्याओं की विवेचना की तथा उन्हें हल करने के लिए कार्यक्रम तैयार किए। जेलों से बाहर आने पर उन्हें ज्ञात हुआ कि वे सब एक ही ढंग से सोचते रहे थे। इन लोगों में इस टिप्पणी का लेखक भी शामिल था तथा उसने दिसंबर, 1933 में एक समाजवादी समूह के गठन का विचार जवाहरलाल नेहरू के समक्ष रखा जो उन दिनों अपने एक संक्षिप्त से अवकाश का उपयोग असाधारण रूप से प्रभावशाली समाजवादी प्रचार के लिए कर रहे थे। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इस विचार के प्रति भरपूर उत्साह प्रकट किया और इसे प्रोत्साहन दिया। परंतु, आगे

की कार्यवाही से पहले ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और दो साल के कारावास की सजा सुना दी गयी। उन्होंने इन पंक्तियों के लेखक को इस विषय में एक पत्र लिखा जिसमें कांग्रेस के भीतर एक समाजवादी समूह के गठन का स्वागत किया गया था। इस पत्र के प्रकाशन से इस प्रक्रिया को प्रोत्साहन मिला।"

1935

युसुफ़ मेहरअली कांग्रेस समाजवादी दल के इस सुनिश्चित मत के मुखर और उग्र प्रवक्ता थे कि ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रस्तुत नकली संविधान को किसी भी स्थिति में स्वीकार न किया जाए तथा उसके क्रियान्वयन में रोड़े अटकाए जाएं क्योंकि भारत के लिए संविधान का निर्माण एक प्रतिनिधि संविधान सभा ही कर सकती है। समाजवादी लोग एक नकली संविधान के अंतर्गत कांग्रेस द्वारा पद स्वीकार किए जाने के पूर्णतया विरुद्ध थे।

14 जनवरी, 1935 को कांग्रेस समाजवादी दल के इस कट्टर दृष्टिकोण के प्रचार के लिए बंबई के चौपाटी समुद्र तट पर एक सार्वजनिक सभा आयोजित की गयी, जिसमें युसुफ़ मेहरअली ने निम्न प्रस्ताव प्रस्तुत किया :

"कांग्रेस समाजवादी दल के तत्वावधान में आयोजित इस सभा का मत है कि संयुक्त संसदीय समिति के प्रतिवेदन (रिपोर्ट) में जिस सांविधानिक ढांचे की रूपरेखा प्रस्तुत की गयी है वह भारत की जनता को पूर्णतया अस्वीकार्य है क्योंकि उसमें ब्रिटिश साम्राज्यवाद का यह प्रयास निहित है कि वह इस देश के प्रतिक्रियावादी तत्वों की सहायता प्राप्त करके इस देश पर अपनी पकड़ सुदृढ़ बनाए रखे।"

"यह सभा इस बात पर बल देती है कि भारत की जनता को उसके प्रतिनिधियों की संविधान सभा द्वारा बनाए गए संविधान के अतिरिक्त कोई भी अन्य संविधान स्वीकार्य न होगा। अत: यह सभा कांग्रेस कार्यसमिति को यह घोषणा करने का सुझाव देती है कि संयुक्त संसदीय समिति द्वारा प्रस्तुत सांविधानिक ढांचे की अस्वीकृति में यह योजना निहित है कि इस संविधान के लागू किए जाने पर कांग्रेसजन उसके अंतर्गत पद ग्रहण नहीं करेंगे तथा उसके साथ किसी भी प्रकार का समझौता किए बिना उसके सतत विरोध द्वारा, एवं उसके मार्ग में बाधाएं खड़ी करके उसे क्रियान्वित नहीं होने दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त इस सभा का यह सुझाव भी है कि कार्यसमिति वर्तमान विधान सभाओं के कांग्रेसी सदस्यों को यह हिदायत दे कि वे सरकार की नीतियों के साथ समझौता किए बिना निरंतर उसके विरोध की नीति अपनाएं।"

अपने प्रस्ताव के समर्थन में युसुफ़ मेहरअली ने उपस्थित जनसमूह को

बतलाया कि तीन दिन बाद दिल्ली में कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक हो रही थी जिसमें वह यह तय करना था कि संयुक्त संसदीय समिति के प्रतिवेदन पर होनेवाली बहस के दौरान विधान सभाओं के कांग्रेसी सदस्य क्या दृष्टिकोण अपनाएं।

सही ढंग से सोचनेवाला प्रत्येक भारतीय समझता था कि संयुक्त संसदीय समिति के प्रतिवेदन के प्रति क्या दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए। यह घोषणा भी अनेक बार की जा चुकी थी कि "स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है तथा भारत के लिए संविधान बनाने का अधिकार किसी भी अभारतीय को नहीं दिया जा सकता है।"

युसुफ़ मेहरअली ने अपने भाषण में आगे कहा कि देश में कुछ नेता संयुक्त संसदीय समिति के प्रतिवदेन में कतिपय संशोधन स्वीकार कर लिये जाने पर उसे अपनी ओर से स्वीकृति प्रदान करने के लिए तैयार थे। कुछ ऐसे भी नेता थे, जो यह अपेक्षा कर रहे थे कि इस प्रश्न पर सरकार का हृदय परिवर्तन हो जाएगा। डा. मोहम्मद अंसारी ने उन्हीं दिनों अपने एक वक्तव्य में कहा था कि यदि सरकार का हृदय परिवर्तन हो जाता तो वे उसके साथ सहयोग के लिए तैयार थे। युसुफ़ मेहरअली ने इस बात पर बल दिया कि सरकार के साथ सहयोग का प्रश्न ही नहीं उठता था। उनकी दृष्टि में, सही ढंग से सोचनेवाले प्रत्येक भारतीय का यह कर्तव्य था कि वह डा. अंसारी तथा उन जैसे विचारों वाले अन्य लोगों को यह बतलाता कि कांग्रेस ब्रिटिश सरकार के साथ सहयोग नहीं कर सकती थी। अपने भाषण के अंत में युसुफ़ मेहरअली ने भावुकतापूर्वक कांग्रेस से अपील की कि वह संयुक्त संसदीय समिति के प्रतिवेदन की अस्वीकृति के लिए देश में एक सतत अभियान चलाए तथा एक निर्दोष-सा प्रस्ताव पारित करके चुपचाप न बैठ जाए। उन्होंने तालियों की गड़गड़ाहट के बीच जोरदार शब्दों में कहा था कि जिस प्रकार का अभियान साइमन कमीशन के भारत आगमन के अवसर पर छेड़ा गया था उसी प्रकार का अभियान संयुक्त संसदीय समिति के प्रतिवेदन के विरुद्ध छेड़ा जाना चाहिए था। युसुफ़ मेहरअली के इस भाषण की, कांग्रेस समाजवादी दल के उग्र राजनीतिक दृष्टिकोण के समर्थन में एक स्मरणीय योगदान के रूप में, सराहना की गई।

युसुफ़ की दृष्टि में स्वराज्य के लिए भारत का संघर्ष जनता के आर्थिक संघर्ष के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा था। उन्होंने दल की बंबई शाखा के श्रम सचिव के नाते कांग्रेस समाजवादी दल के इस दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए 23 मार्च, 1935 के बॉम्बे क्रानिकल में एक सुबोध लेख लिया था, जिसमें कहा गया था, "मजदूरी में की जाने वाली कटौतियों, छंटनी तथा श्रम निरपेक्ष उत्पादन प्रणालियों के कारण श्रमिकों की हालत बिगड़ती जा रही है। बेरोजगारी में वृद्धि उन्हें भुखमरी के कगार पर ले जा रही है। इन परिस्थितियों में श्रमिक क्या करें ? श्रमिक संगठित

हो जाएं और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करें। संघर्ष के लिए श्रमिकों का सुदृढ़ संगठन खड़ा किया जाए। आर्थिक शिकायतों को दूर कराने के लिए सतत संघर्ष चलाने के प्रयोजन से बनाए गए संगठन को ट्रेड यूनियन (श्रमिक संघ) कहा जाता है। श्रमिक संघ वर्ग संघर्ष का एक उपकरण होता है, वह श्रमिकों के समान हितों की पूर्ति के लिए संघर्ष करता है। श्रमिक संघ अकेले ही श्रमिकों के समान हितों एवं शिकायतों का निवारण नहीं करा सकते। श्रमिकों को यह समझना चाहिए कि उनकी आर्थिक मांगें राजनीतिक स्वतंत्रता के बिना पूरी तरह नहीं मानी जा सकतीं। श्रमिक वर्ग को अपनी जीवन दशाएं सुधारने के लिए राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए लड़ना होगा।"

समाजवादी दल का मंच : "स्वतंत्रता के इस संघर्ष में श्रमिक वर्ग अकेला नहीं है। स्वतंत्रता के लिए वे कृषक तथा मध्यम वर्ग भी संघर्ष कर रहे हैं, जो श्रमिकों के समान ही शोषित हैं। स्वतंत्रता के संघर्ष में श्रमिक वर्ग तभी विजयी होगा जबकि वह कृषक वर्ग तथा मध्यम वर्ग के साथ एकजुट होकर लड़ेगा। अतः स्वाधीनता संघर्ष को सघन बनाने की दृष्टि से जनता के शोषित वर्गों को राजनीतिक मंच पर एकजुट हो जाना चाहिए। यह मंच कांग्रेस समाजवादी दल हो सकता है जो स्वाधीनता संघर्ष में जुटे तीन वर्गों का राजनीतिक संगठन है। कांग्रेस समाजवादी दल स्वाधीनता संघर्ष में जूझते रहकर यह परिभाषित करने का प्रयास भी करता है कि उसकी दृष्टि में स्वाधीनता अथवा स्वतंत्रता का ठीक ठीक अभिप्राय क्या है। दल के मतानुसार आर्थिक स्वतंत्रता के बिना राजनीतिक स्वतंत्रता असंभव है। यह स्वतंत्रता का मूल्यांकन श्रमजीवी वर्गों की भौतिक जीवन दशाओं में होने वाले सुधार के मानदंड के द्वारा करता है। कांग्रेस समाजवादी दल की दृष्टि में स्वाधीनता संघर्ष में जनसाधारण की भागीदारी वांछनीय है, क्योंकि उन्हें स्वाधीनता की तत्काल आवश्यकता है।"

"राजनीतिक सत्ता जनसाधारण के हाथों में तभी आ सकती है जबकि वे स्वाधीनता संघर्ष में भाग लें। दल का कार्यक्रम यह है कि समूची राजनीतिक सत्ता उत्पादक जनसाधारण को हस्तांतरित की जाए। कांग्रेस समाजवादी दल ने स्वाधीनता संघर्ष को विकसित करने की दृष्टि से जनसाधारण को उनकी तात्कालिक आर्थिक आवश्यकताओं के आधार पर संगठित किया। वह श्रमिकों को उनकी अपनी शिकायतों के निवारण के लिए संघर्ष करने की दृष्टि से श्रमिक संघों (ट्रेड यूनियन) के गठन में सहायता देता है। वह किसानों को अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की दृष्टि से किसान संघ बनाने में मदद करता है। वह छात्रों तथा शिल्पियों के हितों की पूर्ति के लिए उन्हें संगठित करता है।"

इस प्रकार युसुफ़ मेहरअली ने 1935 में ही श्रमिक वर्ग को सावधान कर दिया था कि वह शुद्ध 'आर्थिकवाद' का शिकार न हो/वरन वह श्रमिक वर्ग के

भीतर राजनीतिक एवं क्रांतिकारी चेतना उत्पन्न करने की अनिवार्यता को समझे। यह एक ऐसा संदेश था जिसकी आज भी बहुत अधिक प्रासंगिकता है।

एक ओजस्वी समाजवादी के नाते युसुफ़ देश की किसी भी ज्वलंत समस्या की अनदेखी नहीं कर पाते थे। 1930 के दशक में अनेक राजनीतिक कार्यकर्ताओं को देश की विभिन्न जेलों में नजरबंद रखा गया था। कांग्रेस समाजवादी दल की बंबई शाखा ने अखिल भारतीय नजरबंद दिवस मनाने के लिए 7 अप्रैल, 1935 को चौपाटी पर एक सार्वजनिक सभा की। सभा की अध्यक्षता युसुफ़ ने की। उन्होंने देशभक्तों को जेल के सींखचों के पीछे बंद करने की दमन-नीति के विरुद्ध सशक्त प्रतिरोध किया, तथा श्रोताओं से मार्मिक शब्दों में अपील की कि वे राजनीतिक बंदियों के आश्रितों की सहायता के लिए संग्रह किए जा रहे 'सहायता कोष' में उदारतापूर्वक योगदान करें।

युसुफ़ मेहरअली की मूल दिलचस्पी युवाओं को समाजवादी आंदोलन में सक्रिय भागीदारी के लिए संगठित करने में थी। उन्होंने युवा-सम्मेलनों के आयोजन एवं कांग्रेस समाजवादी दल को सुदृढ़ बनाने के निमित्त युवाओं का सहयोग जुटाने की दृष्टि से समूचे देश का भ्रमण किया। 28 अप्रैल, 1935 को जबलपुर में महाकौशल युवा सम्मेलन को संबोधित करते हुए युसुफ़ ने 1934 में कांग्रेस समाजवादी दल के गठन को समकालीन इतिहास की सबसे अधिक महत्वपूर्ण घटना बताकर उसकी सराहना की तथा युवाओं से अनुरोध किया कि वे एक ओर जनसाधारण की घोर दरिद्रता एवं दूसरी ओर थोड़े से लोगों की विपुल संपन्नता के बीच विद्यमान ज्वलंत विषमता के निवारण पर अपनी शक्ति संकेंद्रित करें। उन्होंने साम्राज्यवाद को पूंजीवाद की शोषक विश्व शक्तियों की अभिव्यक्ति के रूप में चित्रित किया तथा युवाओं से अनुरोध किया कि वे ब्रिटिश साम्राज्यवाद से लोहा लेने के लिए समाजवादी शक्तियों को बल पहुंचाएं।

उन्होंने जनता को साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष के लिए संगठित करने और समाजवाद का संदेश प्रसारित करने के निमित्त जो अनवरत यात्राएं कीं वे तत्कालीन ब्रिटिश भारत तक सीमित न रहीं। युसुफ़ ने देशी राज्यों की यात्राएं भी कीं। युसुफ़ मेहरअली तथा भारतीय समाजवादी आंदोलन के पितामह आचार्य नरेंद्र देव जुलाई, 1935 में भावनगर राज्य की यात्रा पर गए। 7 जुलाई, 1935 को भावनगर में अपने एक भाषण में युसुफ़ ने भावभीने शब्दों में देशी राज्यों की जनता से साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष की मुख्यधारा में सम्मिलित होने की अपील की और यह साहसपूर्ण घोषणा भी कर डाली कि स्वतंत्र भारत में राजाओं का कोई स्थान नहीं रहेगा तथा आधुनिक भारत में वे एक विसंगत तत्व हैं। एक देशी राजा द्वारा शासित राज्य की भूमि पर इस प्रकार की स्पष्ट घोषणा करना एक साहसपूर्ण कार्य था, और वह भी उस जमाने में।

युसुफ़ मेहरअली सदा यह मानते रहे कि समाजवादी आदर्शों के प्रसार के लिए सघन राजनीतिक प्रशिक्षण की आवश्यकता है। अतः उन्होंने सामयिक विषयों पर भाषणों, राजनीतिक प्रशिक्षण शिविरों के आयोजनों, राजनीतिक शिक्षण के लिए पाठ्यक्रम की तैयारी तथा संगठित राजनीतिक अभियानों पर भारी बल दिया। युसुफ़ मेहरअली में इस प्रकार के शैक्षणिक कार्य संपन्न करने की असाधारण क्षमता थी।

कांग्रेस समाजवादी दल की बंबई शाखा ने 31 अगस्त तथा 21 सितंबर, 1935 को 'चीन : कल और आज' तथा 'समाजवाद का आधार' सरीखे ज्ञानवर्धक विषयों पर भाषणों का आयोजन किया। चीन पर भाषण करते समय उन्होंने विस्तार से समझाया कि अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का गुरुत्वाकर्षण केंद्र किस प्रकार धीमे से खिसककर अटलांटिक से प्रशांत महासागर में जा पहुंचा है। मेहरअली के मतानुसार इस संक्रमण का मुख्य कारण जापान का अभ्युदय, चीन में क्रांति, सोवियत रूस का उदय तथा तीन-चौथाई ब्रिटिश साम्राज्य के नियंत्रण केंद्र के रूप में सिंगापुर के सैनिक अड्डे का निर्माण था। अपने ज्ञानप्रद भाषण में युसुफ मेहरअली ने 1911 की अपूर्ण क्रांति और चीन गणतंत्र के राष्ट्रपति के रूप में डा. सनयात सेन की चीन वापसी तथा राष्ट्रवाद, लोकतंत्र एवं समाजवाद—इन तीन सिद्धांतों पर चीन-गणतंत्र की नींव डालने के उनके अथक प्रयासों का उल्लेख किया।

युसुफ़ मेहरअली प्रायः किसी ज्वलंत प्रश्न पर जनता का ध्यान केंद्रित करने के लिए कुछ विशिष्ट दिवस मनाने के मामले में भारी कल्पनाशक्ति का प्रदर्शन करते थे। कांग्रेस समाजवादी पार्टी की बंबई शाखा ने 11 नवंबर, 1935 को पड़ने वाले युद्धबंदी दिवस को 'युद्ध विरोधी दिवस' के रूप में मनाया। उस आयोजन में साम्यवादी भी शामिल थे। उस अवसर पर बंबई में तीन सभाएं की गयीं। एक सभा की अध्यक्षता डा. राममनोहर लोहिया ने की। इन सार्वजनिक सभाओं में युसुफ़ मेहरअली ने अपने भाषणों में समस्त साम्राज्यवादी युद्धों पर भरपूर आक्रमण किया तथा इस तथ्य पर बल दिया कि इस प्रकार के युद्ध श्रम परायण जनसाधारण को मुक्ति दिलाने के स्थान पर कहीं अधिक भयावह परिणामों को जन्म देते हैं। उन्होंने कहा कि यदि भारत को युद्ध में घसीटा गया तो वह इंग्लैंड का साथ नहीं देगा तथा पूर्ण स्वराज्य के लिए अपने संघर्ष को अधिक प्रखर बनाने का प्रयास करेगा। युसुफ़ मेहरअली ने 1935 में ही 1939 के द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रति भारत में समाजवादियों के उस दृष्टिकोण की भविष्यवाणी करके अपने भविष्य द्रष्टा होने का परिचय दे दिया था जिसकी परिणति 1942 के 'करो या मरो' संघर्ष में हुई जिसमें समाजवादियों ने एक वीरतापूर्ण और चिरस्मरणीय भूमिका निभाई।

समाजवादी लोग भारत में तो राष्ट्रवाद के प्रति समर्पण में किसी से पीछे थे ही नहीं, उन्होंने विश्व के विभिन्न भागों में स्वतंत्रता और प्रगति के लिए चलाए जा रहे राष्ट्रीय आंदोलनों के प्रति भी सदैव अचूक एकात्मता का प्रदर्शन किया।

समाजवादियों की इस गर्वीली परंपरा की रक्षा करते हुए कांग्रेस समाजवादी दल की बंबई शाखा ने मिस्र के राष्ट्रीय आंदोलन के प्रति एकात्मता के प्रदर्शन के लिए 29 नवंबर, 1935 को चौपाटी पर एक सभा आयोजित की। इस सभा की अध्यक्षता युसुफ़ मेहरअली ने की तथा सभा ने उनका यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया—"बंबई कांग्रेस समाजवादी दल के तत्वावधान में आयोजित बंबई के नागरिकों की यह सभा मिस्र की वीर जनता को उसके स्वतंत्रता संघर्ष में बंधुत्वपूर्ण बधाई देती है तथा स्वतंत्रता आंदोलन में सर्वदा अग्रणी मिस्री छात्रों की सार्वजनिक वृत्ति तथा वीरता की भरपूर प्रशंसा करती है। यह सभा हाल के प्रदर्शनों में हताहत लोगों के परिजनों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना और सहानुभूति भी अभिव्यक्त करती है।"

1936

सन 1936 में मेरठ में हुआ कांग्रेस समाजवादी दल का सम्मेलन एक महत्वपूर्ण सम्मेलन था। इस सम्मेलन का लेखा-जोखा प्रस्तुत करने के लिए 28 जनवरी, 1936 को दल की ओर से बंबई के जिन्ना सभागार में एक सार्वजनिक सभा की गई। सभा में बोलते हुए युसुफ़ मेहरअली ने कहा कि सम्मेलन के समक्ष चर्चा का मुख्य मुद्दा कांग्रेस समाजवादी दल की दृष्टि में उभरा कांग्रेस का चित्र था। समाजवादियों द्वारा किए गए कांग्रेस के मूल्यांकन पर प्रकाश डालते हुए युसुफ़ ने कहा कि कांग्रेस देश में सबसे अधिक शक्तिशाली संगठन था तथापि उसके सामने विशाल श्रमिक जनसाधारण को अपनी ओर आकर्षित करने का कार्य शेष था। जब तक कांग्रेस के कार्यक्रमों और उसकी नीतियों में दूरगामी संशोधन नहीं कर लिए जाते तब तक वह जनता के शोषित वर्गों की कल्पना को स्पर्श तथा उनकी निष्ठा प्राप्त नहीं कर सकती थी। इस दृष्टि से उसके विधान में इस प्रकार संशोधन की अपेक्षा थी जिससे कि कृषकों, श्रमिकों तथा अन्य शोषित वर्गों को उनके संगठनों के माध्यम से पर्याप्त प्रतिनिधित्व प्राप्त हो जाता। कांग्रेस का लक्ष्य ऐसा पूर्ण स्वराज्य होना चाहिए जिसके अंतर्गत राज्य की प्रभुसत्ता उत्पादक जनसाधारण को हस्तांतरित की जाए एवं बुनियादी उद्योगों तथा खदानों और बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया जाए। भूमि पर जोतने वाले का स्वामित्व स्थापित हो और जमींदारी प्रथा का उन्मूलन किया जाए। कांग्रेस को बिना किसी हिचक के यह घोषण करनी चाहिए कि यह देशी राज्यों के भारत में विलय के पक्ष में है। उसके कार्यक्रमों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण मुद्दा श्रमिकों और कृषकों के ऋणों को रद्द करना होना चाहिए जिससे कि वे भार मुक्त होकर नया जीवन शुरू कर सकें। इस कार्यक्रम से सुसज्जित हो जाने पर कांग्रेस अपने चारों ओर देश के संभावित विस्फोटक तत्वों को एकत्र कर सकेगी तथा मौलिक

अधिकारों संबंधी करांची प्रस्ताव को मूर्त रूप दे पाएगी।

युसुफ़ मेहरअली का लालन-पालन बंबई जैसे शहरी परिवेश के राजनीतिक वातावरण में हुआ था, तथापि उनके मन में उस कृषक वर्ग के प्रति गहरी सहानुभूति थी, जो भारत की जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग है। 26 सितंबर, 1936 को आंध्र समाजवादी सम्मेलन में दिया गया उनका अध्यक्षीय भाषण कृषक समाज की समस्याओं के प्रति उनकी गहरी दिलचस्पी का पर्याप्त प्रमाण प्रस्तुत करता है। इस भाषण में उन्होंने कांग्रेस समाजवादी दल के कृषि संबंधी कार्यक्रम पर बल दिया था। कृषि योग्य भूमि पर बढ़ते दबाव का उल्लेख करते हुए युसुफ़ मेहरअली ने स्पष्ट किया कि 1881 में भूमि पर आश्रित लोगों की संख्या देश की तत्कालीन जनसंख्या का केवल 58 प्रतिशत थी, 1901 में यह संख्या बढ़कर 61.06 प्रतिशत हो गयी और 1931 में 73.9 प्रतिशत तक जा पहुंची। युसुफ़ मेहरअली के विचार से यह स्थिति भारत में ब्रिटिश शासन के 150 वर्षों के अंतराल में उद्योग और व्यवसाय की उपेक्षा का परिणाम थी। उन्होंने बताया कि यह उपेक्षा इसलिए अक्षम्य थी क्योंकि ब्रिटिश शासक पाश्चात्य जगत के औद्योगिक दृष्टिकोण से संपन्न थे।

युसुफ़ ने भारत में ब्रिटिश राज्य के अंतर्गत भूमिहीन श्रमिकों की निरंतर बढ़ती संख्या की समस्याओं का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। 1842 की मनरो रिपोर्ट का हवाला देते हुए उन्होंने बताया कि उस समय भारत में भूमिहीन कृषकों की संख्या प्रायः नगण्य थी। तीस वर्ष बाद 1872 की जनगणना से यह तथ्य सामने आया कि उस समय देश में भूमिहीन कृषकों की संख्या कम-से-कम 75 लाख थी। अगली आधी शती में जनगणना के आंकड़ों से यह तथ्य खुला कि प्रत्येक 1000 कृषकों में से 291 को श्रमिकों के रूप में कार्य करने के लिए विवश होना पड़ता था, तथा उनमें से अधिसंख्य के पास निजी भूमि न थी। अगली जनगणना 1931 में हुई, जिससे यह पता लगा कि वह संख्या बढ़कर 407 हो गयी थी, अर्थात एक दशक में उसमें 40 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। इस तथ्य परक पृष्ठभूमि को सामने रखकर युसुफ़ मेहरअली ने समाजवादियों से अपील की कि वह कृषक वर्ग की समस्याओं को सर्वोच्च प्राथमिकता दें तथा भारत में जमींदारी व्यवस्था के उन्मूलन के लिए जोरदार आंदोलन छेड़ें। उन्होंने रैयत अर्थात भूमिहीन श्रमिकों के ऋणों को रद्द करने तथा भू-राजस्व व्यवस्था के पूरी तरह सुधार के पक्ष में जोरदार अपील की। अगले वर्ष युसुफ़ मेहरअली ने 28 अप्रैल को गोधरा (गुजरात) में ऐसे ही एक अन्य सम्मेलन में भाषण देते हुए कृषक वर्ग को संगठित करने तथा एक क्रांतिकारी कृषि नीति और कार्यक्रम के आधार पर उनके संघर्षों को नेतृत्व प्रदान करने की तीव्र आवश्यकता पर बल दिया। युसुफ़ मेहरअली द्वारा जोरदार ढंग से प्रचारित इन कार्यक्रमों पर विहंगम दृष्टि डाली जाए तो भावी भारत के बारे में युसुफ़ मेहरअली की मसीहाई दृष्टि पर अचरज होता है।

4 अक्तूबर, 1936 को बंगाल कांग्रेस समाजवादी दल के सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए युसुफ़ मेहरअली ने सांप्रदायिक समस्या का एक अलग ढंग का विश्लेषण प्रस्तुत किया तथा अपनी समाजवादी दृष्टि से सांप्रदायिक संघर्ष के आर्थिक कारणों का एक गहन विश्लेषण तथा जटिल सांप्रदायिक समस्या का समाजवादी हल प्रस्तुत किया। इस सम्मेलन में युसुफ़ मेहरअली ने 'क्रांति की नयी व्यूह रचना' पर विस्तार से प्रकाश डाला। बंगाल में सांप्रदायिक समस्या का उल्लेख करते हुए युसुफ़ मेहरअली ने बंगाल के प्रतिनिधियों से कहा, "सिंध सरीखे कुछ अन्य प्रांतों की भांति आपके प्रांत में भी सांप्रदायिक समस्या मुख्यतया सामाजिक और आर्थिक है। आपके प्रांत में बहुसंख्या कृषकों की है जो प्राय: मुस्लिम है, हिंदू एक प्रकार का मध्यम वर्ग है तथा अधिकांश भूमि के स्वामी हैं। वर्ग त्रिभाजन और सांप्रदायिक विभाजन की सीमा रेखाएं अधिकांशतया एक ही है जिसके कारण वर्तमान असंतोष और कृषक विद्रोह को सांप्रदायिक रंग दे दिया जाता है। मुस्लिम जमींदार, जो मुस्लिम जनभावनाओं को उभारकर उनका राजनीतिक नेता बन गया है, दलित मुस्लिम कृषकों से कहता है कि हिंदू जमींदार और साहूकार उनका शोषण कर रहे हैं। इस समस्या का समाजवादी समाधान यह है कि हिंदू कृषक तथा मुस्लिम कृषक, हिंदू श्रमिक तथा मुस्लिम श्रमिक, तथा हिंदू एवं मुस्लिम मध्यम वर्ग में यह चेतना जगाई जाए कि उनके वास्तविक हित परस्पर विरोधी नहीं वरन एक समान हैं तथा इन एक-समान हितों की पूर्ति के लिए सम्मिलित प्रतिनिधित्व एवं सम्मिलित राजनीतिक संगठनों की आवश्यकता है। हिंदुओं और मुसलमानों के एक समान आर्थिक हितों पर बल देने के विषय में अपनी विफलता के कारण ही कांग्रेस आपके प्रांत के मुस्लिम कृषक वर्ग को अपने पीछे संगठित करने में विफल रही है।"

जब हम पीछे मुड़कर भारत में सांप्रदायिक समस्या के उस भीषण तांडव पर दृष्टि डालते हैं, जिसकी चरम परिणति अंतत: भारत के विभाजन में हुई, तब यह देखकर गहरी वेदना होती है कि राष्ट्रीय नेतृत्व लोगों के सांप्रदायिक अहंकार और पूर्वाग्रहों के सामने घुटने टिकाते जाने के बजाय उन्हें उनके आर्थिक हितों की एक-समानता के आधार पर एकजुट करने में किस तरह अक्षम्य रूप से विफल रहा है।

1937

एक समर्पित समाजवादी के नाते युसुफ़ मेहरअली सदा यह मानते रहे कि समाजवादी परिवर्तन के प्रयास में जुटने की कामना करने वाले राजनीतिक कार्यकर्ता को समाजवाद के दर्शन और व्यवहार के विषय में बौद्धिक रूप से पूरी तरह तैयार होना चाहिए। उसे सामाजिक-आर्थिक समस्याओं तथा राजनीतिक आंदोलन की पूरी जानकारी होनी चाहिए। उसे विश्व के विभिन्न भागों के सुधार, पुनर्जागरण और

क्रांतिकारी आंदोलनों से परिचित रहना चाहिए। इसके लिए वे सदैव कार्यकर्ताओं के राजनीतिक प्रशिक्षण की अनिवार्य आवश्यकता पर बल देते थे। इस संदर्भ में पहला प्रश्न यह उठता है कि कार्यकर्ताओं को क्या पढ़ना चाहिए। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए युसुफ़ मेहरअली ने परिश्रमपूर्वक 'क्या पढ़ें' शीर्षक से एक 'अध्ययन पाठ्यक्रम' तैयार किया था। युसुफ़ मेहरअली द्वारा लिखी गयी इस पाठ्यक्रम की भूमिका राजनीतिक प्रशिक्षण पर एक बहुआयामी निबंध है। इस उत्प्रेरक भूमिका में उन्होंने लिखा : "जीवन की गति-नियति परिस्थितियां उत्पन्न करती हैं तथा मनुष्य उनके साथ जूझते हैं। आज प्रश्नचिह्न बहुत बड़ा और उत्तर के प्रति अधिक आग्रहशील हो गया है। यह अस्तित्व के बुनियादी ताने-बाने को चुनौती दे रहा है। यदि हम अपने सामने खड़ी समस्याओं के साथ समुचित रीति से नहीं निपटेंगे तो हमारे ऊपर उनके हावी हो जाने का खतरा उत्पन्न हो जाएगा। प्रश्नचिह्न ऐसा चुनौतीपूर्ण कभी न था जैसा कि वह आज बन गया है। सभ्य जीवन हमारी समस्याओं के दबाव तले दम तोड़ता प्रतीत हो रहा है। हम सचमुच संहार की छाया तले जी रहे हैं। शस्त्रों के ढेर लगते जा रहे हैं तथा ऐसा प्रतीत होता है कि मनुष्य के रक्त मे खेली जानेवाली अपरिहार्य और बर्बर होली कोई बहुत दूर नहीं रह गयी है। युद्ध की काली छाया में आर्थिक असुरक्षा को भी सम्मिलित कर लेना होगा। उसका अंधकार दिन-प्रतिदिन सघन होता जा रहा है तथा हमारी सृजनात्मक क्षमताओं को कुंठित करता जा रहा है। इस असुरक्षा ने एच. जी. वेल्स के शब्दों में 'कुंठा के युग' का सूत्रपात कर दिया है। तथापि जीवन की गति-नियति को आसानी से अवरुद्ध नहीं किया जा सकता। घोरतम निराशा की घड़ियों में भी एक नयी प्रेरणा और एक नए संकल्प का दर्शन किया जा सकता है। मानवजाति के निम्नतम स्तरीय लोगों में भी स्वतंत्र जीवन की हलचल और आकांक्षा जागृत रहती है। ये हलचलें इस कारण और भी अधिक स्वस्थ हो गयी हैं क्योंकि यदि सामाजिक-आर्थिक शक्तियों को सही ढंग से व्यवस्थित कर लिया जाए तो आज मानव-इतिहास में प्रथम बार वे प्रत्येक व्यक्ति को उसके व्यक्तित्व के पूर्ण विकास का अवसर प्रदान करने में समर्थ है। परंतु समाज में व्याप्त अव्यवस्था इस प्रकार के विकास का मार्ग अवरुद्ध कर रही है। इस संकट के संदर्भ में दलित वर्गों की हलचल भ्रांति उत्पन्न करने का एक अन्य कारण बन जाती है। लाखों लोगों में यह चेतना जाग जाती है कि उन्हें भूखों मरने और ठिठुरने की विवशता को अस्वीकार कर देना चाहिए तथा उन्हें एक पूर्ण और समृद्ध जीवन की अपनी धरोहर प्राप्त होनी चाहिए। उसके साथ ही समाज के ताने-बाने में अविश्वास को बुनने की चेष्टा वर्तमान संकट को सघन बना देती है। हमारे काल की त्रासदी ने और भी भीषण रूप इसलिए धारण कर लिया है क्योंकि हमारे काल में संभावनाएं बहुत बढ़ गयी हैं। इस त्रासदी में भारी खतरे छिपे हैं। शक्तियों का यह क्रूर संतुलन

हमारे जीवन को इतना त्रासदी युक्त तथापि प्रायः वीरतापूर्ण बना देता है। उलझन में डालने वाली इन घटनाओं में क्या कोई नियोजन रीति-नीति छिपी है ? हम मूक दर्शक बने रहें अथवा एक अधिक सुरक्षित और विवेकपूर्ण विश्व के वास्तुकार बनें ? इन विनाशकारी तत्वों के बीच वैज्ञानिक समाजवाद आशा का एकमात्र आधार है। केवल यही पूर्णतया संतोषप्रद जीवन दर्शन प्रदान करता है। केवल यही उन अनेक जटिल समस्याओं का एक उपयुक्त समाधान प्रस्तुत करता है, जिनका समाधान अनुभव की दृष्टि से पूंजीवादी ढांचे के अंतर्गत असंभव प्रतीत होता है। केवल यही बेरोजगारी और गरीबी के उन्मूलन का पक्का प्रबंध कर सकता है तथा जनसाधारण के सामने एक नए और अधिक परिपूर्ण अस्तित्व का एवं उन समस्त स्थितियों का मार्ग प्रशस्त कर सकता है, जो जीवन को एक उल्लासकारी अनुभूति का रूप प्रदान करती है।

पाठ्यक्रम में कुछ ऐसी महत्वपूर्ण पुस्तकों के अध्ययन का प्रावधान है, जो वांछनीय दृष्टि के विकास में सहायता पहुंचाती हैं। इसमें सम्मिलित की गयी पुस्तकों का चयन एक निश्चित प्रयोजन को ध्यान में रखकर सावधानीपूर्वक किया गया है। उनके अध्ययन के द्वारा पृथक चिंतनधाराओं को एक समग्र दृष्टि में समाहित किया जा सकता है। यह लघु पाठ्यक्रम तैयार करने की कल्पना देश के विभिन्न भागों से कांग्रेस समाजवादी दल के कार्यालय में प्राप्त उन असंख्य जिज्ञासाओं पर से आई जिनमें विभिन्न विषयों पर अध्ययन के लिए सुझाव मांगे गए थे। बार बार उठनेवाली इन जिज्ञासाओं का अलग अलग समाधान करना कठिन हो गया तब यह सूझा कि सुबद्ध अध्ययन की दृष्टि से एक रूपरेखा तैयार की जाए। यह कार्य भारी कठिनाइयों के बीच शुरू हुआ तथा इसे अनेक मित्रों की उदारतापूर्ण सहायता के बिना किसी भी रूप में पूरा करना असंभव था। मैं पांडुलिपि के परिवर्द्धन तथा अनेक मूल्यवान सुझावों के लिए 'कांग्रेस सोशलिस्ट' के संपादक अशोक मेहता का, तथा पांडुलिपि की तैयारी में कृपापूर्वक सहायता प्रदान करने के लिए कमलादेवी चट्टोपाध्याय, जयप्रकाश नारायण, एम. आर. मसानी, डा. राममनोहर लोहिया, श्री एवं श्रीमती बी. पी. एल. तथा एम. एम. गांधी का विशेष रूप से आभारी हूं। आवरण का डिजाइन आर. एस. नायडू ने तैयार किया जिनके बनाए हुए व्यंग्य चित्र (कार्टून) 'कांग्रेस समाजवादी' साप्ताहिक के पाठकों को मुग्ध करते रहते हैं। इस पाठ्यक्रम के लेखक को इसकी अनेक कमियों की चेतना है। इसमें कुछ अभाव स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ते हैं, जैसे कि जर्मन खंड, जिसे पुस्तिका के प्रेस में जाने से पूर्व समय रहते तैयार नहीं किया जा सका। लेखक मैत्रीपूर्ण आलोचना तथा सुझावों का आभारपूर्वक स्वागत करता है, निश्चय ही उनसे अगले संस्करण में इसकी कमियों को सुधारने में सहायता मिलेगी।

1 मार्च, 1937 युसुफ़ मेहरअली

बंबई

युसुफ़ मेहरअली ने इस अध्ययन पाठ्यक्रम के आधार पर कांग्रेस समाजवादी दल के कार्यकर्ताओं के लिए सुंदर जुहू सागर तट पर एक सफल अध्ययन शिविर का आयोजन किया, जो 11 से 18 अक्तूबर तक चला। अध्ययन शिविर के पाठ्यक्रम में सम्मिलित निम्न विषय सूची से यह ज्ञात होता है कि मेहरअली ने प्रशिक्षण शिविर की योजना कितने परिश्रम से तैयार की थी :

1. समाजवादी दल का इतिहास	——	4 भाषण
2. आधुनिक पूंजीवाद का विकास	——	2 भाषण
3. समाजवाद का सिद्धांत	——	3 भाषण
4. साम्राज्यवाद	——	2 भाषण
5. फांसीवाद	——	1 भाषण
6. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास	——	3 भाषण
7. भारत में कृषि से संबद्ध समस्याएं	——	2 भाषण
8. भारत में श्रमिक तथा ट्रेड-यूनियन आंदोलन	——	3 भाषण
9. भारत में समाजवादी एकता की समस्याएं	——	1 भाषण
10. भारत में दमनकारी कानून	——	1 भाषण
11. सोवियत संघ	——	1 भाषण
12. अमेरिका में नए विचार	——	4 भाषण
13. निकट पूर्व में उमड़ता ज्वार	——	1 भाषण
14. स्पेन और उसका भविष्य	——	1 भाषण

इसके अतिरिक्त मार्क्स, ऐंजिल्स, लासैल, लेनिन, स्तालिन तथा ट्रोट्स्की पर एक एक भाषण।)

युसुफ़ मेहरअली की रुचि समाजवादी आंदोलन के सक्रिय कार्यकर्ताओं की राजनीतिक शिक्षा में तो थी ही, वे श्रमिक वर्गों की वैध मांगों के समर्थन के लिए दृढ़ कदम उठाने के भी हामी थे। लोगों को उनकी न्यायसंगत मांगों के पक्ष में एकत्र करने के लिए उन्होंने देश के विभिन्न भागों में तूफानी दौरे किए और वे यदा-कदा सरकार के कोपभाजन भी बने। जून, 1937 में उनकी मलाबार-यात्रा के अवसर पर जिला मजिस्ट्रेट ने एक आदेश जारी करके उनकी सार्वजनिक सभाओं पर इस आधार पर प्रतिबंध लगा दिया था कि उनके भाषणों से सार्वजनिक शांति भंग होने की आशंका थी। मेहरअली ने प्रतिबंधात्मक आदेश का उल्लंघन करके साहसपूर्वक कालीकट के नागरिक-सभा भवन (टाउन हाल) में एक सभा आयोजित की और उसमें भाषण दिया। सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया तथा छह महीने के कारावास का दंड सुना दिया। काफी जन प्रतिरोध के बाद उन्हें मद्रास

की कांग्रेसी सरकार ने रिहा किया, किंतु उन्होंने अपने तूफानी दौरे और अभियान जारी रखे।

1938

युसुफ़ मेहरअली कांग्रेस समाजवादी दल के सबसे अधिक फुर्तीले नेताओं में से थे। राष्ट्रीय अथवा अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि से महत्वपूर्ण कोई भी विषय शायद ही उनके ध्यान से चूकता हो। बंबई कांग्रेस समाजवादी दल ने युसुफ़ मेहरअली की अध्यक्षता में 22 मार्च, 1938 को चौपाटी पर एक सभा बुलाई जिसका उद्देश्य कांग्रेसी सरकार द्वारा बंबई नगर निगम के लोकतंत्रीकरण के लिए स्थानीय निकायों के चुनावों में वयस्क मताधिकार लागू करने की मांग उठाना था। 28 मार्च को फिर से मेहरअली की अध्यक्षता में बंबई के नप्पू गार्डन्स में एक सभा कांग्रेस समाजवादी दल के तत्त्वावधान में हुई जिसका उद्देश्य आस्ट्रिया के पतन से उत्पन्न स्थिति पर विचार करना था। कांग्रेस समाजवादी दल के तत्वावधान में ही 13 अप्रैल, 1938 को लाहौर में एक सार्वजनिक सभा में मनसा राज्य के किसानों द्वारा चलाए जा रहे दमन विरोधी संघर्ष के प्रति पूर्ण समर्थन व्यक्त किया गया। यह प्रस्ताव युसुफ़ मेहरअली ने प्रस्तुत किया था।

सन 1938 में कांग्रेस समाजवादी दल के लाहौर अधिवेशन में साम्यवादियों और समाजवादियों के बीच सीधा टकराव हुआ। कांग्रेस समाजवादी दल एक बड़े संगठनात्मक संकट के कगार पर जा पहुंचा।

साम्यवादी लोग कांग्रेस समाजवादी दल के भीतर घुस गए थे और उन्होंने समाजवादी एकता की आड़ में उस पर अधिकार जमाने की चेष्टा की थी। उसी समय एक दस्तावेज पकड़ा गया जिससे साम्यवादियों के षड्यंत्र की योजना का भेद खुल गया।

लाहौर सम्मेलन के अवसर पर जिस समय मीनू मसानी अध्यक्षीय भाषण दे रहे थे तभी सम्मेलन स्थल के एक कोने से हलचल शुरू हुई जहां साम्यवादी कार्यकर्ता बैठे हुए थे। यदि सम्मेलन के आयोजक सतर्क न होते तो कांग्रेस समाजवादी दल के टुकड़े हो जाते अथवा दल पर साम्यवादियों का वर्चस्व स्थापित हो जाता। युसुफ़ मेहरअली को स्वयंसेवी संगठनों के संचालन का भरपूर अनुभव था, उन्होंने स्वयंसेवकों की सहायता से दल को दृढ़तापूर्वक उस संकट से उबार लिया। इस प्रकार युसुफ़ कांग्रेस समाजवादी दल के रक्षक सिद्ध हुए।

युसुफ़ की राजनीतिक गतिविधि भारत तक सीमित न थी। जुलाई-अगस्त, 1938 में उन्होंने अपनी स्वतंत्रता और समाजवाद के लिए संघर्षशील भारत के गैर सरकारी राजदूत की भांति यूरोप और अमेरिका का दौरा किया।

इंडिया लीग ने उनके स्वागत में लंदन के कैक्सटन हाल में एक विशाल समारोह का आयोजन किया। ट्रिब्यून के संपादक विलियम मेलर ने समारोह की अध्यक्षता की तथा उसमें संसद सदस्य रेजीनाल्ड सोरेन्सन और कु. मेनिका ह्वाटले सरीखे प्रसिद्ध लोग सम्मिलित हुए। संवाददाता एजेंसी रायटर ने उनके भाषण को 'भावनापूर्ण' बताया। मेहरअली ने इसमें भारत का पक्ष प्रस्तुत किया, संघ के विरुद्ध संघर्ष पर प्रकाश डाला और भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में कांग्रेस समाजवादी दल की भूमिका पर बल दिया। वीरास्वामी के रेस्तरां में आयोजित एक अन्य स्वागत समारोह में मेहरअली द्वारा दिए गए एक भाषण को 'टाइम्स आफ इंडिया' ने 'ज्ञानवर्द्धक' बताया। उन्होंने भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के विकास पर विस्तार से प्रकाश डाला। विश्व युवा कांग्रेस में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए उन्होंने 4 अगस्त को यूरोप से अमेरिका के लिए प्रस्थान किया। इस कांग्रेस में भाग लेकर वे 24 दिसंबर, 1938 को भारत लौटे। इस अवसर पर समाजवादी कार्यकर्ताओं और अनेक स्वतंत्रता सैनिकों ने उनका भावभीना स्वागत किया।

1939

सन 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध का आरंभ हुआ। युसुफ़ मेहरअली कांग्रेस समाजवादी दल के इस दृष्टिकोण के साथ पूरी तरह सहमत थे कि साम्राज्यवादी युद्ध के विरुद्ध जिसमें भारत को उसकी सहमति के बिना ही घसीट लिया गया था, एक विराट संघर्ष छेड़ा जाना चाहिए। कांग्रेस समाजवादी दल के प्रवक्ता युद्ध के प्रबलतम विरोधी थे, तथा सोवियत संघ के युद्ध में सम्मिलित होने के समय तक साम्यवादी भी साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष को प्रखर बनाने के पक्ष में थे। 1939 की गरमियों में कांग्रेस समाजवादी दल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक के बाद युसुफ़ मेहरअली, डा. राममनोहर लोहिया, अच्युत पटवर्धन, आचार्य नरेंद्र देव और एस. एम. जोशी महात्मा गांधी से मिलने गए। उन्होंने गांधी जी के साथ युद्ध के उलझावों की चर्चा की तथा उनसे आग्रह किया कि युद्ध की स्थिति का पूरा लाभ उठा कर भारत में साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष को प्रखर बनाया जाए। साम्यवादियों के चिंतन का प्रायः सर्वसम्मत सूत्र यह था : 'इंग्लैंड की कठिनाई हमारे लिए उपयुक्त अवसर है।' उनके मन में प्रतीकात्मक आंदोलनों के प्रति अधिक आकर्षण न था क्योंकि उनके द्वारा युद्ध काल में ब्रिटिश शासकों पर अधिक दबाव नहीं डाला जा सकता था। समाजवादी धीरे धीरे ऐंग्लो-अमेरिकी तथा सोवियत गुटों के बीच गुट निरपेक्षता की नीति की ओर झुकते जा रहे थे। इस नीति का श्रेय प्रायः पंडित जवाहरलाल नेहरू को दिया जाता है परंतु जैसा कि युसुफ़ मेहरअली ने अनेक अवसरों पर कहा था कि गुटनिरपेक्ष-नीति तथा अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में जनता एवं सरकारों की एक

तीसरी शक्ति के संगठन के सबसे अधिक शक्तिशाली प्रवक्ता डा. राममनोहर लोहिया थे। समाजवादी नेताओं के साथ गांधी जी की बातचीत के समय यह बात बहुत स्पष्ट हो गयी थी कि युद्ध में भारतीय जनता की भागीदारी के प्रश्न पर गांधी जी अंग्रेजों के साथ समझौते के लिए तैयार न थे। समाजवादी नेता व्यक्तिगत सत्याग्रह की गांधी जी की उस योजना से सहमत न थे जिसे एक वर्ष बाद व्यावहारिक रूप दिया गया। युसुफ़ मेहरअली अंग्रेजों के विरुद्ध अधिक सघन जनसंघर्ष के प्रति दृढ़तापूर्वक प्रतिबद्ध थे, तथापि वे यह नहीं चाहते थे कि महात्मा गांधी के मार्गदर्शन में प्रारंभ होने वाले व्यक्तिगत सत्याग्रह का समाजवादी लोक सक्रिय रूप से विरोध करें। युसुफ़ मेहरअली तथा कांग्रेस समाजवादी दल के अन्य नेताओं ने महात्मा गांधी को यह आश्वासन दिया कि यदि वे भारत में ब्रिटिश साम्राज्यशाही के विरुद्ध जनांदोलन छेड़ेंगे तो समाजवादी गांधी जी को अपना भरपूर समर्थन प्रदान करेंगे। इतिहास ने इस तथ्य को प्रमाणित कर दिया है कि 8 अगस्त, 1942 के 'भारत-छोड़ो' आंदोलन द्वारा छिड़े संघर्ष में स्वयं को झोंककर समाजवादियों ने भारत के स्वाधीनता संघर्ष को दृढ़ समर्थन प्रदान किया था।

युसुफ़ मेहरअली ने 7 जुलाई, 1940 को डेहरी-आन-सोन में हुए बिहार के समाजवादियों के सम्मेलन की अध्यक्षता की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा : "समाजवादियों को चाहिए कि वे बहुतांश कांग्रेसजनों को उग्र नीतियों और कार्यक्रमों के पक्ष में खड़ा करने के लिए अथक परिश्रम करें। हम रामगढ़ अधिवेशन के प्रस्तावों के प्रकाश में आगे बढ़े, तथा जो लोग स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कार्य कर रही इस महान संस्था (कांग्रेस) के प्रति निष्ठावान हैं, उन्हें देश को स्वतंत्रता की राह पर आगे बढ़ने की प्रक्रिया में सहायता पहुंचाने के कार्य में प्रसन्नतापूर्वक प्रत्येक बलिदान के लिए तैयार रहना चाहिए।"

यह वह समय था जब देश में युद्ध विरोधी वातावरण गरम होता जा रहा था। महात्मा गांधी एक एक कदम करके आगे बढ़ना चाहते थे अत: उन्होंने साम्राज्यवादी युद्ध के विरुद्ध प्रतीकात्मक प्रतिरोध प्रकट करने के लिए व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू करने का निश्चय किया। इस सत्याग्रह के नियमों के अनुसार प्रत्येक व्यक्तिगत सत्याग्रही से अपेक्षा की गयी थी कि वह खुलेआम जनता से यह अपील करेगा कि वह युद्ध में किसी भी प्रकार से सहायता न करे क्योंकि हमें उसमें हमारी सहमति के बिना ही घसीट लिया गया था।

मेहरअली प्रतिबंधित व्यक्तिगत-सत्याग्रह से पूरी तरह संतुष्ट न थे। वे उसे उग्र जनसंघर्ष का विकल्प नहीं मानते थे। तथापि, व्यक्तिगत सत्याग्रह में उन्हें यह संभावना दिखलाई पड़ती थी कि व्यक्तिगत क्रिया को जनसंघर्ष का रूप दिया जा सकता था तथा उसके द्वारा समझौते की राजनीति से पृथक एक स्वतंत्र मार्ग तैयार किया जा सकता था। अत: युसुफ़ व्यक्तिगत सत्याग्रह से अलग-थलग नहीं रहे।

सी. आई. डी. पुलिस कमिश्नर, बंबई विशेष शाखा—(1) गोपनीय फाइल में 17 दिसंबर, 1940 की तारीख में निम्न उल्लेख है :

भारत प्रतिरक्षा नियमों के नियम सं. 129 (2) के अंतर्गत कार्यवाही—

(क) युसुफ़ मेहरअली की ओर से 16 दिसंबर, 1940 को चंपा गली में सत्याग्रह करने की पूर्व सूचना;

(ख) उन्हें 17 दिसंबर, 1940 को सवेरे 5 बजे गिरफ्तार कर लिया गया;

(ग) उन्हें भायखला रेलवे स्टेशन से रेलगाड़ी द्वारा नासिक रोड केंद्रीय कारागार भेज दिया गया।

(2) वर्गीकरण के लिए सामाजिक स्तर, प्रतिष्ठा आदि।

(क) श्री युसुफ़ जे. मेहरअली बी. ए., एल-एल. बी. तथा अखिल भारतीय कांग्रेस समाजवादी दल के महासचिव हैं। वे अखिल भारतीय कांग्रेस समाजवादी दल के सदस्य हैं। वे अखिल भारतीय कांग्रेस समिति तथा बंबई प्रदेश कांग्रेस समिति के सदस्य हैं। वे अनेक अन्य सामाजिक संगठनों से भी जुड़े हैं, जैसे—गुमाश्ता महामंडल, बंबई छात्र संघ इत्यादि। उनके लिए 'बी' श्रेणी उपयुक्त रहेगी। यह उल्लेख मैंने अपने आदेश में कर दिया था;

(ख) मैं सिफारिश करता हूं कि सरकार भारत सुरक्षा अधिनियम के नियम 26 (1) के अंतर्गत उनकी नजरबंदी के आदेश जारी करे।

(3) गिरफ्तारी आदि की प्रतिक्रिया। युसुफ़ जे. मेहरअली की गिरफ्तारी के कारण आज 17-12-1940 को मूलजी जेठा क्लाथ मार्केट, लक्ष्मीदास मार्केट, स्वदेशी मार्केट और समस्त खादी भंडार बंद रहे। कपास बाजार, स्वर्ण-विनिमय बाजार तथा शेयर बाजार खुले तो हैं परंतु वे कोई धंधा नहीं करेंगे। मंगलदास मार्केट और नाल बाजार खुले हैं। बंबई प्रदेश कांग्रेस समिति ने आज (17-12-1940) शाम को कांग्रेस सदन में एक सार्वजनिक सभा बुलाई है, जिसमें एस. एल. सिलम और पुरुषोत्तम त्रिकमदास वर्तमान राजनीतिक स्थिति पर भाषण देंगे।

युसुफ़ मेहरअली एक ऐसे तूफानी पंछी थे जिन्होंने साम्राज्यवाद के विरुद्ध सघन होते जाते संघर्ष के समाजवादी परिप्रेक्ष्य को अथक रूप से प्रचारित-प्रसारित किया।

उन्होंने त्रिपुरी कांग्रेस सम्मेलन के विचारार्थ निम्न प्रस्ताव प्रस्तुत करने की पूर्व सूचना दी थी, जिसमें कांग्रेस समाजवादी दल का चिंतन पूरी तरह समाहित है :

"दस वर्ष पूर्व लाहौर में कांग्रेस ने भारत के लिए पूर्ण स्वराज्य की राह पर पांव रखा था। तब से भारतीय जनता संघर्षों, यंत्रणाओं, पराजय और विजय में अविचल रहकर उस राह का अनुगमन करती रही है। अब पूर्ण स्वराज्य के लिए

सीधे संघर्ष का समय आ गया है।"

"कांग्रेस प्रांतीय तथा संघीय उपबंधों सहित 'भारत शासन अधिनियम, 1935' के विरुद्ध संघर्ष करने और उसे नष्ट करने के प्रति प्रतिबद्ध है, तथापि उसके विनाश के लिए संघर्ष छेड़ने से पहले उसने जनता की शक्ति और एकता के विकास का काम हाथ में उठाया है। अब वह समय आया है जब संघीय योजना के उद्‌घाटन के प्रयास का केवल प्रतिरोध करने के बजाय ब्रिटेन का वर्चस्व समाप्त करने तथा राष्ट्र के आत्मनिर्णय के अधिकार को अनुल्लंघनीय बनाने वाली आवश्यक विधियों का निर्माण करने के लिए आक्रामक संघर्ष आरंभ किया जाए।"

"कांग्रेस के बढ़ते हुए तथा व्यापक प्रभाव, कृषकों, श्रमिकों तथा जनता के अन्य वर्गों में चेतना के विकास, तथा भारतीय राज्यों की जनता के विकासमान संघर्षों को ध्यान में रखते हुए कांग्रेस को विश्वास है कि उस उमड़ते हुए ज्वार को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अस्तित्व मात्र के लिए एक सशक्त चुनौती का रूप दिया जा सकता है।"

"इस प्रयोजन की पूर्ति के लिए विधायी तथा जनस्तरीय गतिविधियों में तथा राज्यों एवं शेष भारत के आंदोलनों के बीच सामंजस्य की स्थापना आवश्यक है।"

"कांग्रेसी मंत्रालयों के कार्य में गति लाना तथा उन्हें जनता की संघर्षकारी क्षमता के विकास के जो अवसर प्राप्त हैं उनका प्रामाणिकतापूर्वक उपयोग आवश्यक है।"

"जो लोग संघर्ष में सम्मिलित होने के लिए तैयार हों उन्हें केंद्रीय नियंत्रण में गठित स्वयंसेवक संगठन में भरती किया जाए। यह संगठन कांग्रेस की संघर्षकारी भुजा के रूप में कार्य करे।"

"कांग्रेस देसी राज्यों की जनता के बीच आई जागरूकता को अपने पिछले सम्मेलन के बाद होनेवाली देश की सबसे अधिक महत्वपूर्ण घटना मानती है तथा अनेक भारतीय राज्यों की जनता को भारी कठिनाइयों के बावजूद उसके द्वारा किए जा रहे संघर्षों के लिए बधाई देती है।"

"पिछले वर्ष की घटनाओं से यह स्पष्ट हो गया है कि शेष भारत की जनता की भांति देसी राज्यों की जनता का भी वास्तविक शत्रु साम्राज्यवाद है।"

"कांग्रेस यह स्वीकार करती है कि स्वतंत्रता संग्राम में देसी राज्यों की जनता के आंदोलन का एक प्रमुख स्थान है, तथा वह उन राज्यों की जनता को अपने सक्रिय समर्थन का आश्वासन देती है। कांग्रेस महात्मा गांधी की आभारी है कि उन्होंने स्वयं को इस आंदोलन में पूरी तरह झोंक दिया है तथा इसे प्राथमिक महत्व के एक राष्ट्रीय मुद्दे के रूप में उभारने में सहायता प्रदान की है।

"तथापि, कांग्रेस उन कतिपय अभिनव गतिविधियों की ओर से गंभीर रूप से चिंतित है, जो राष्ट्रीय संगठन की आंतरिक एकता को उसकी अत्यंत अपरिहार्यता की घड़ी में चुनौती दे रही है। कांग्रेस सभी संबंधित जनों का आह्वान करती है

कि वे उस एकता को बनाए रखने के लिए अथक प्रयास करें जो सैद्धांतिक मतभेदों के बावजूद कांग्रेस की शक्ति रही है तथा जिसकी जड़ें उसके लक्ष्य—शांतिपूर्ण तथा विहित साधनों द्वारा पूर्ण स्वराज्य के प्रति अखंड निष्ठा में दृढ़तापूर्वक रोपित हैं।"

"कांग्रेस को दृढ़ विश्वास है कि यदि इस अधिवेशन में निरूपित नीति को उसके अगले अधिवेशन तक उत्साह और एकतापूर्वक क्रियान्वित किया गया तो स्वतंत्र भारत के संविधान का निर्माण करने के लिए एक संविधान सभा के गठन की दृष्टि से उपयुक्त परिस्थितियां पैदा हो जाएंगी।"

1941

27 और 28 दिसंबर, 1941 को पटना में आयोजित अखिल भारतीय छात्र संघ के सातवें अधिवेशन के अध्यक्ष युसुफ़ मेहरअली थे, उन्होंने उस अवसर का उपयोग महात्मा गांधी द्वारा शुरू किए गए व्यक्तिगत सत्याग्रह के प्रति समाजवादियों की दृष्टि तथा विश्वयुद्ध के दौरान कठिन परिस्थिति में फंसे हुए ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध व्यक्तिगत सत्याग्रह को राष्ट्रव्यापी जनांदोलन के रूप में परिणति की सुसंगतता और अनिवार्यता को स्पष्ट करने के लिए किया। कांग्रेस में बहुत से गरमपंथी तत्व भी थे, जो यह चाहते थे कि कांग्रेस को जनांदोलन के माध्यम से युद्ध प्रयासों में अधिक प्रभावशाली ढंग से बाधा डालनी चाहिए। इस स्थिति का स्पष्टीकरण देते हुए युसुफ़ मेहरअली ने अपने युवा श्रोताओं से कहा कि वे व्यक्तिगत सत्याग्रह के इस मूल्यांकन से असहमत थे कि वह बुरी तरह विफल रहा था, तथापि उन्होंने स्वीकार किया कि यदि उसके स्थान पर जनांदोलन छेड़ा गया होता तो उसके परिणाम अपेक्षाकृत अच्छे निकलते, किंतु उसके बावजूद महात्मा गांधी द्वारा संचालित व्यक्तिगत सत्याग्रह के महत्व को नकारा नहीं जा सकता था। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि तीस हजार लोगों द्वारा किए गए व्यक्तिगत सत्याग्रह के कारण कुछ समय से विद्यमान राजनीतिक ठहराव और निष्प्रयोजन विवाद तथा युद्ध के दौरान अंग्रेजों के साथ समझौते के समस्त अनुमान हमेशा के लिए समाप्त हो गए एवं कांग्रेस प्रत्यक्ष कार्यवाही की राह पर आगे बढ़ने के लिए सन्नद्ध हो गयी। युसुफ़ ने आग्रहपूर्वक कहा कि व्यक्तिगत सत्याग्रह के फलस्वरूप राष्ट्र की समझौता परायण मन:स्थिति संघर्ष परायणता की मन:स्थिति में परिवर्तित हो गयी थी।

मेहरअली ने छात्रों से कहा कि वे यह समझें कि 30 हजार से अधिक लोगों के व्यक्तिगत सत्याग्रह, प्रांतों में कांग्रेसी मंत्रिमंडलों के त्यागपत्र तथा युद्ध के दौरान मंत्रियों समेत सैकड़ों विधान सभा सदस्यों के जेल जाने से विश्व के सम्मुख यह

बिंब स्पष्ट रूप से उभर आया था कि कांग्रेस ने साम्राज्यवादी युद्ध से पूर्णतया संबंध विच्छेद कर लिया था तथा वह अपने स्वाधीनता संघर्ष को स्थापित करने के लिए तनिक तैयार न थी।

उन दिनों इस प्रश्न पर गहरा विवाद छिड़ा हुआ था कि छात्रों को राजनीति में भाग लेना चाहिए अथवा नहीं। मेहरअली ने छात्रों के राजनीति में भाग लेने के अधिकार का, विशेषतया उस स्थिति में सशक्त समर्थन किया जबकि राष्ट्र स्वतंत्रता-प्राप्ति के जीवन-मरण संघर्ष में जूझ रहा हो। उन्होंने छात्रों का आह्वान किया कि वे प्रथम तो राष्ट्रीय स्वातंत्र्य संघर्ष के साथ स्वयं को जोड़ें, तथा दूसरे, भारत में जिन प्राचीन प्रथाओं और परंपराओं की उपयोगिता समाप्त हो चुकी है उनका भार ढोने के बजाय उनके विरुद्ध विद्रोह करें। उन्होंने छात्रों से आग्रह किया कि वे सांप्रदायिक समस्याओं को हल करें, घिनौनी जाति प्रथा को जड़ से उखाड़ फेंकें, अछूतों की सेवा करें तथा पर्दा प्रथा को समाप्त करने के लिए कार्य करें। उन्होंने बलपूर्वक कहा कि ये सामाजिक गतिविधियां भले ही सुधारवादी प्रतीत हों, वास्तव में परंपराओं में जकड़े भारतीय समाज के संदर्भ में उनके गहरे अर्थ और अभिप्राय हैं।

सांप्रदायिक समस्या का विश्लेषण करते हुए मेहरअली ने कहा कि यदि देश के युवाजन अतीतकालीन राग-द्वेष के प्रभावों से स्वयं को मुक्त कर लें, तो वे हिंदू-मुस्लिम एकता के राजदूत बन सकते हैं। वे यह स्वीकार करते थे कि यदि हिंदुओं और मुसलमानों की एक जैसी आर्थिक समस्याओं तथा उनके समाधान के लिए होने वाले संघर्ष पर ध्यान केंद्रित किया जाए तो हिंदू-मुस्लिम एकता की स्थापना सुगम हो जाएगी। तथापि, उनका प्रयोजन भारत में हिंदू-मुस्लिम समस्या के आर्थिक विश्लेषण का अति-सरलीकरण करना न था, अतः वे हिंदू-मुस्लिम एकता को स्थायी आधार प्रदान करने के लिए हिंदुओं और मुसलमानों के बीच बृहत्तर सांस्कृतिक-विलयन-प्रक्रिया के पक्षधर थे।

मेहरअली ने छात्र सम्मेलन में अंतर्राष्ट्रीय स्थिति की चर्चा की तथा युवाओं का ध्यान ब्रिटिश प्रधानमंत्री के उस ढीठतापूर्ण वक्तव्य की ओर दिलाया जिसमें उन्होंने कहा था कि अटलांटिक-घोषणा पत्र के प्रावधान युद्ध में मित्र राष्ट्रों की विजय के बाद भी भारत पर लागू नहीं होंगे। इस वक्तव्य से ब्रिटिश सरकार के दृष्टिकोण का बोध होता था।

युसुफ़ ने छात्रों का आह्वान किया कि वे राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं में गहरी रुचि लें तथा प्रतिदिन कम-से-कम एक घंटा समय छात्र संघ के संगठन पर लगाएं। छात्र सम्मेलन में मेहरअली के भाषण से वातावरण में उत्तेजना आ गयी तथा उसने युवा वर्ग को आगे आ रहे महान संघर्ष में सक्रिय भागीदारी के लिए अभिप्रेरित किया।

1942

बंबई नगर निगम का यह सौभाग्य रहा कि उसे फीरोजशाह मेहता सरीखे राष्ट्रीय स्तर के नेताओं के मार्गदर्शन में कार्य करने का अवसर मिला। अत: स्वतंत्रता सैनिकों तथा समाजवादियों का बंबई नगर के प्रतिष्ठित महापौर पद के लिए एक निर्भय स्वतंत्रता सैनिक तथा समर्पित समाजवादी युसुफ़ मेहरअली के निर्वाचन पर गर्व से फूल उठना स्वाभाविक था। युवा समाजवादी महापौर का निर्वाचन काफी नाटकीय रहा। मेहरअली का निर्वाचन 2 अप्रैल, 1942, बृहस्पतिवार को परिषद् सदस्यों से भरे सदन ने अनेक दर्शकों की उपस्थिति में किया। उसी समय प्रो. एस. आर. डावर ने महापौर के निर्वाचन को इस आधार पर चुनौती दी कि उसके लिए नियमानुसार तीन स्पष्ट दिनों का नोटिस नहीं दिया गया। तनावपूर्ण सदन में अध्यक्षता कर रहे अधिकारी ने निर्णय दिया कि महापौर के चुनाव से पहले के दो दिन अर्थात रविवार एवं सोमवार को सार्वजनिक अवकाश था अत: बृहस्पतिवार को होने वाले निर्वाचन के लिए अवकाश के दिन नामांकन पत्र स्वीकार करना संभव न था अत: मंगलवार को प्रस्तुत किए गए नामांकन पत्र पूर्णतया विहित एवं वैध थे। अध्यक्षीय निर्णय सुनने पर वातावरण का तनाव ढीला पड़ गया और निर्वाचन सुगमता से हो पाया। मतगणना के बाद ज्ञात हुआ कि युसुफ़ मेहरअली को 65 मत प्राप्त हुए थे जबकि उनके दो प्रतिद्वंद्वियों को क्रमश: 26 और 9 मत ही मिल पाए थे।

भारत का द्वार खटखटा रहे द्वितीय विश्व युद्ध के उस संकट काल में नगर-पार्षदों को संबोधित करते हुए युसुफ़ मेहरअली ने कहा :

"सबसे पहले मुझे अनुमति दीजिए कि मैं भारत और विश्व के इतिहास के इतने संकटपूर्ण दौर में इस उच्च पद पर अपने निर्वाचन के लिए आपका आभार प्रकट कर सकूं। आपने मुझे जो महान सम्मान प्रदान किया है उसे मैं स्वीकार करता हूं तथा मैं उसके लिए आपका अत्यंत आभारी हूं। परंतु यह बधाइयां लेने और देने का आनंददायी समय नहीं है, क्योंकि स्वयं इतिहास हमारे द्वार पर दस्तक दे रहा है। हमारा नगर इस क्षण तात्कालिक संकटग्रस्त क्षेत्र में नहीं आता परंतु शीघ्र ही ऐसा हो सकता है, अनुभव यह सिखाता है कि वास्तविक अथवा काल्पनिक खतरों की अपेक्षा उनसे उत्पन्न होने वाली घबराहट के कारण अधिक हानि तथा अधिक चोट पहुंचती है। बंबई के नागरिक मार्गदर्शन के लिए सदा हमारी ओर आशा भरी दृष्टि से देखते रहे हैं, तथा आज जब विश्व का एक अपेक्षाकृत बड़ा भाग तनाव, कठिनाई और अनिश्चितता के दौर और काल से ग्रस्त है तथा जब इनमें से अनेक जटिल एवं कठिन समस्याएं हमारी अधिक सुरक्षित स्थिति को चुनौती दे रही हैं; हमारे लिए यह सही एवं उचित होगा कि हम अपना ध्यान तथा चिंतन उन नागरिकों की सेवा पर केंद्रित करें जिनके सिर पर संकट मंडरा रहा है।

"मित्रो ! आपने मुझे यह जानते हुए इस पद के लिए चुना है कि मैं एक कांग्रेसजन एवं समाजवादी हूं, तथा एक वर्ष के अपने कार्यकाल के दौरान मैं स्वाभाविक रूप से उन प्रवृत्तियों से जुड़ा रहूंगा जिनके साथ मैं अभी तक जुड़ा रहा हूं। किंतु, मैं आपको आश्वासन देता हूं कि जब तक मैं इस आसन पर हूं तब तक मैं आपकी कृपापूर्ण सहायता के बल पर इस सदन के अधिकारों तथा विशेषाधिकारों पर किसी भी प्रकार के तथा किसी भी पक्ष द्वारा किए गए आक्रमण का प्रतिरोध करूंगा। इस सदन के सदस्य मुझ पर यह भरोसा रखें कि मैं इस सभा की कार्यवाही निष्पक्ष भाव से; अपने समक्ष निर्णय के लिए आने वाले विषयों पर पूरी तरह न्यायिक दृष्टि अपनाकर एवं एक दीर्घ तथा स्मरणीय काल में इस आसन के एवं उस कांग्रेस म्युनिसिपल पार्टी के संग जिसकी सदस्यता मेरे लिए गौरव का विषय है, जुड़ी हुई उच्च परंपराओं के अनुरूप संचालित करूंगा।

"मैं, स्वाभाविक रूप से, इस सदन के सदस्यों के अतिरिक्त नगर निगम के विविध विभागाध्यक्षों से सहयोग की कामना करूंगा। अपने कठिन कर्तव्यों के ठीक ढंग से पालन में वे सदैव मुझ पर भरोसा रख सकते हैं। मैं यह भी कहना चाहूंगा कि मैं लालफीताशाही तथा अक्षमता का कट्टर शत्रु हूं। मुझे वे जहां कहीं भी दिखाई पड़ जाएंगी मैं उन पर रोक लगाने के लिए अपने पद की समस्त शक्ति का उपयोग निर्भयता और निष्पक्षता पूर्वक करूंगा। इस कार्य में मैं सहज ही जनता का इतना सहयोग चाहूंगा कि वे लालफीताशाही तथा अक्षमता के प्रत्येक प्रकरण की ओर ध्यान दिलाएं। आपने मुझे जो सम्मान दिया है उसके लिए मैं आपका आभारी हूं।"

महापौर पद के लिए युसुफ़ मेहरअली का निर्वाचन बड़ा नाटकीय रहा था। जिस समय महापौर के लिए नामांकन की दृष्टि से उनके नाम का चयन किया गया उस समय वे लाहौर जेल में नजरबंद थे। कांग्रेस के कतिपय पुराने दिग्गजों ने महापौर पद के लिए मेहरअली के चयन का घोर विरोध किया परंतु सरदार वल्लभभाई पटेल ने अपनी पूरी शक्ति उनके पक्ष में लगा दी जिसके फलस्वरूप अंततः युसुफ़ मेहरअली का उस पद के लिए कांग्रेसी उम्मीदवार के रूप में चयन कर लिया गया। ब्रिटिश सरकार ने उन्हें महापौर पद के चुनाव में भाग लेने के लिए कारागार से मुक्त कर दिया। जेल की कोठरी से महापौर के आसन तक की उनकी यह एक अनूठी यात्रा थी।

बंबई के प्रथम समाजवादी महापौर युसुफ़ मेहरअली के कार्यकाल पर विहंगम दृष्टि डाली जाए तो यह देखकर गहन संतोष होता है कि अपने निर्वाचन के पश्चात उन्होंने बंबई नगर निगम के महान सदन के समक्ष अपने भाषण में जो कुछ कहा था उसका अक्षरशः पालन किया। उन्होंने निगम की कार्यवाही का संचालन यथासंभव पूर्ण न्यायिक दृष्टि अपनाकर गरिमा तथा शालीनतापूर्वक किया।

बंबई के महापौर के नाते उन्होंने नागरिक-प्रतिरक्षा के मामले में बंबई के नागरिकों को भारत की ब्रिटिश सरकार की दया पर छोड़ने से इनकार कर दिया तथा युद्ध काल के दौरान शहर की नागरिक-प्रतिरक्षा के लिए नगर-निगम की ओर से एक स्वयंसेवी जन-जत्थे (पीपुल्स वालेंटरी ब्रिगेड) का संगठन किया।

महापौर के उच्च पद पर आसीन होने के बाद भी युसुफ़ मेहरअली ने उस पद की शानशौकत और प्रतिष्ठा की वेदी पर समता की उस भावना को बलि नहीं चढ़ने दिया, जो उन्होंने एक समाजवादी के नाते अपने भीतर विकसित की थी। एक बार जब बंबई के राज्यपाल ने युसुफ़ मेहरअली को रात्रि-भोज पर राजभवन में आमंत्रित किया तब उन्होंने यह पुष्टि प्राप्त हो जाने पर ही आमंत्रण स्वीकार किया कि उनका कार-चालक भी उनके साथ भोज में सम्मिलित हो सकेगा।

एक लोकतांत्रिक समाजवादी के नाते युसुफ़ मेहरअली राजनीतिक शिक्षण तथा लोकमत को संगठित करने की वांछनीयता में विश्वास करते थे। अंतकाल में युसुफ़ ने 1942 के ऐतिहासिक वर्ष में 'पद्मा प्रकाशन' की नींव डाली जिसके संपादक वे स्वयं थे। उनके प्रथम दो प्रकाशनों—कमलादेवी चट्टोपाध्याय की पुस्तक 'युद्ध से खंडित चीन में' (इन वार टौर्न चाइना) तथा युसुफ़ मेहरअली की पुस्तक 'भारत के नेता' (लीडर्स आफ इंडिया) के प्रथम खंड का प्रेस और पाठकों ने समान रूप से स्वागत किया।

मेहरअली के पद्मा प्रकाशन ने 1942 की अगस्त क्रांति की पूर्व संध्या में महात्मा गांधी के आशीर्वाद से 'भारत-छोड़ो' (क्विट इंडिया) नामक पुस्तक प्रकाशित की। लगभग चार सप्ताह की अल्प अवधि में ही उसके लगभग छह संस्करण बिक गए तथा देश के प्रत्येक कोने से उसकी मांग आती रही। उस काल में इस पुस्तक की असाधारण लोकप्रियता ने सर्वसत्ताधारी नौकरशाही को कुपित कर दिया तथा पुस्तक पर प्रतिबंध लगा दिया गया। इससे पद्मा प्रकाशन की लोकप्रियता में चार चांद लग गए।

बंबई में कांग्रेस महासमिति के अधिवेशन की चरम परिणति के रूप में 8 अगस्त, 1942 को 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पारित हुआ जिसे समाजवादियों का पूर्ण समर्थन मिला। इसके बाद तो युसुफ़ मेहरअली ने विशेषतया युवा वर्ग को भारत में ब्रिटिश सरकार पर अंतिम प्रहार के लिए तैयार करने की दृष्टि से देश के विभिन्न भागों में अथक प्रयास किया। 1942 के ऐतिहासिक कांग्रेस महासमिति-अधिवेशन में भाग लेने के लिए जब महात्मा गांधी बंबई पधारे तब मेहरअली को महापौर के नाते उनका स्वागत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

1 अगस्त, 1942 को लोकमान्य तिलक की पुण्यतिथि के अवसर पर बंबई के चौपाटी मैदान में आयोजित सभा में बोलते हुए युसुफ़ मेहरअली ने नागरिकों से खुलेआम अपील की कि वे अंतिम स्वतंत्रता संघर्ष के लिए तैयार रहें जो जेल

जाने तक सीमित नहीं रहेगा, वरन वह भारत में ब्रिटिश शासन को नष्ट करने के लिए खुला विद्रोह होगा। उन्होंने महात्मा गांधी एवं अन्य राष्ट्रीय नेताओं की गिरफ्तारी की स्थिति में 1942 के अखिल भारतीय कांग्रेस महासमिति के अधिवेशन से पहले ही समाजवादी कार्यकर्ताओं की अनेक बैठकें आयोजित कीं। महात्मा गांधी की गिरफ्तारी के पश्चात अनेक समाजवादी नेताओं तथा कार्यकर्ताओं ने भूमिगत आंदोलन में जो महत्वपूर्ण भूमिका निभाई उसका श्रेय काफी कुछ युसुफ़ मेहरअली को दिया जा सकता है, क्योंकि उन्होंने अपने समाजवादी सहयोगियों को समय रहते यह चेतावनी दे दी थी कि वे भूमिगत प्रतिरोध के संगठन के लिए तैयार रहें। 19 अगस्त, 1942 को समाजवादियों को ढूंढ़ने में पुलिस की असफलता के लिए भी युसुफ़ मेहरअली को ही श्रेय दिया जाना होगा क्योंकि उन्होंने इस विषय में उन्हें सतर्क कर दिया था। इसके बावजूद युसुफ़ अपनी गिरफ्तारी को नहीं टाल पाए। उनकी नजरबंदी से उनके हृदय को गंभीर क्षति पहुंची। यद्यपि बर्बर मृत्यु उनके स्वास्थ्य को लील गयी, पर युसुफ़ की आत्मा सदा अजेय बनी रही।

1947

सन 1942 के आंदोलन में से अनेक समाजवादी नेता भूमिगत आंदोलन के राष्ट्रीय नायकों के रूप में उभरकर सामने आए। उन्होंने समाजवादी दल के पुनर्गठन का निश्चय किया। साधनों के अभाव में कोई भी आंदोलन गठित नहीं किया जा सकता। समाजवादी आंदोलन के पुनर्गठन के लिए संसाधन एकत्र करने की दृष्टि से प्रमुख समाजवादी नेताओं के हस्ताक्षरों से एक अपील जारी की गयी—"समाजवादी भारत के निर्माण में हमें सहायता दीजिए"।

संभवतया यह अंतिम महत्वपूर्ण अपील थी जिस पर अपने समाजवादी सहयोगियों के संग युसुफ़ मेहरअली ने हस्ताक्षर किए थे।

अपील इस प्रकार थी :

"मित्रो !

हम स्वतंत्रता की चौखट पर खड़े हैं। 15 अगस्त को हमारा देश औपनिवेशिक स्वराज्य प्राप्त कर लेगा तथा उसके बाद शीघ्र ही एक स्वतंत्र गणराज्य बन जाएगा। एक पीढ़ी द्वारा भोगा गया संत्रास और उसका बलिदान रंग लाया है, भले ही इस रंग में पीड़ा और दुख की कटुता घुल गयी है। भारत के कुछ भाग 150 वर्षों तक अपनाई गयी "फूट डालो और राज्य करो" नीति तथा हमारे राष्ट्रीय जीवन के दोषों के कारण मातृभूमि से विलग हो गए हैं। घृणा एवं रोषवश बांटे गए भूभाग जब तक पुनः स्नेह तथा स्वैच्छिक एकता की भावना से आपस में जुड़ नहीं जाते, तब



युसुफ़—एक आध्यात्मिक गौरव



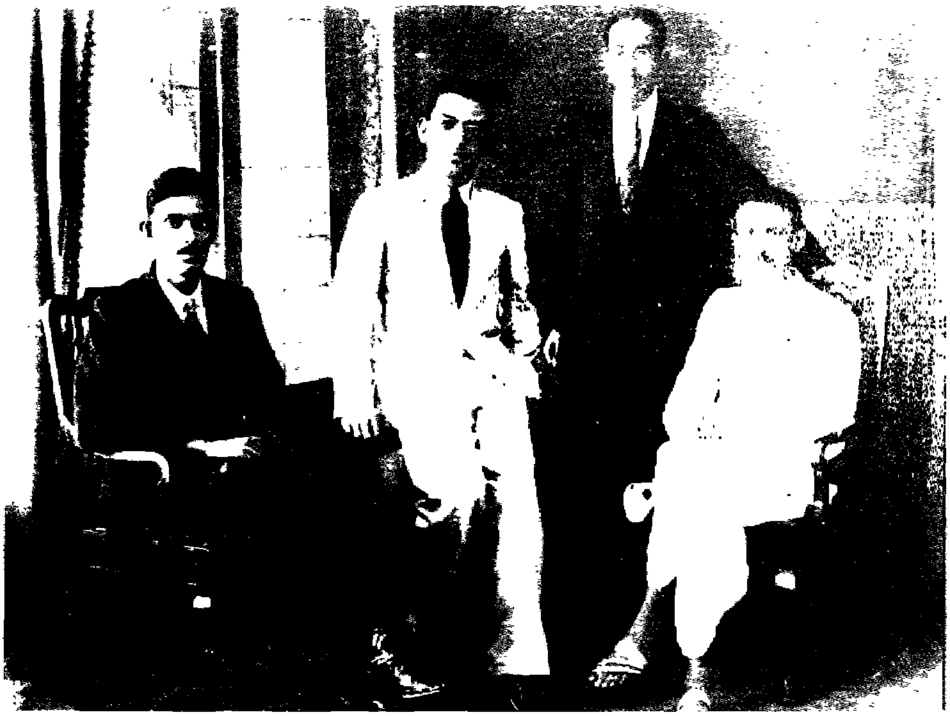
युसुफ़, जयप्रकाश और सुभाष—उत्कृष्टता, सक्रियता और साहस की प्रतिमूर्ति



युसुफ़ के साथ युवा कामरेड बंधु गोरे व अन्य



युसुफ़ मेहरअली और राममनोहर लोहिया—दो तूफान



मीनू मसानी, सोली बाटलीवाला, युसुफ़ मेहरअली तथा उपेंद्र देसाई—सामुदायिक रूप से कार्य करनेवाला युवा दल



युसुफ़ के जीवन के अविस्मरणीय पल



युसुफ़ मेहरअली ने कच्छ में राज्य ज़न आंदोलन को गति प्रदान की

BRITISH "LION" TURNS A RAT

SIMON COMMISSION FLIES FROM

Bombay's Backdoor

Where is Britain's Steel frame?

Where is her proverbial courage ?

She dares not a clean fight.

Who receives the Simon Commission ?

SYCOPHANTS ! BLACKLEGS ! NONENTITIES.

BY POONA D. S. P's ORDER

Britain's Prestige is Lost

Indians, Do Your Duty

LET THE BOYCOTT BE MOST SEVERE

BOYCOTT THE COMMISSION

युसुफ़ की कल्पनाशीलता का उदाहरण—यह पोस्टर



युसुफ़ ने 1942 के ऐतिहासिक कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेने आए राष्ट्रपिता की बंबई के 'प्रथम नागरिक' के रूप में अगवानी की



जयप्रकाश, अशोक मेहता और मेहरअली—निष्पक्ष और लोकतांत्रिक मजदूर संगठन आंदोलन की शुरुआत



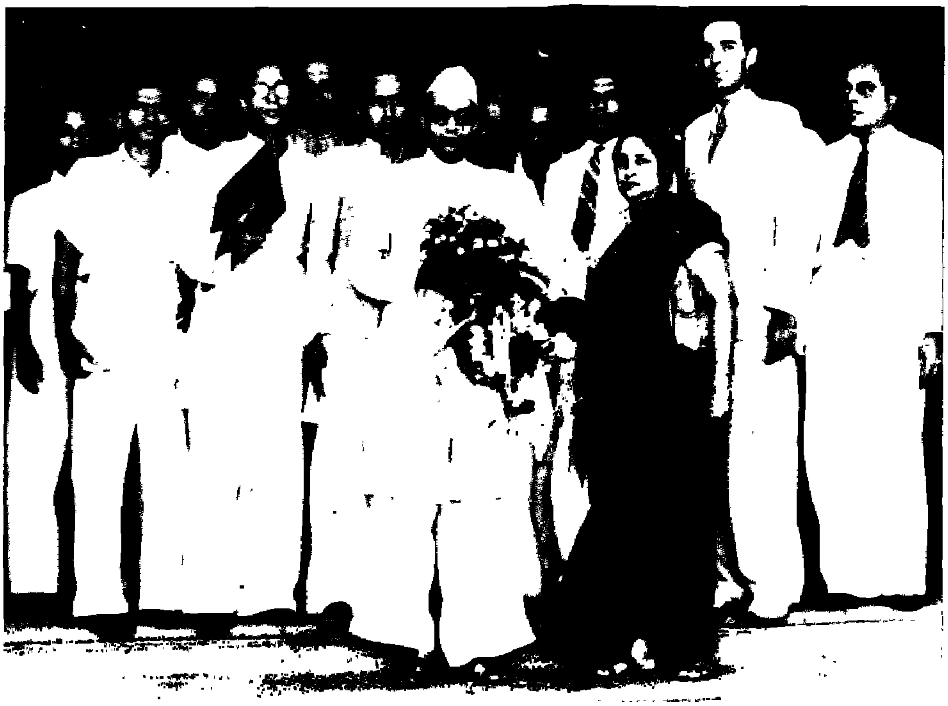
आर.ए. खेडीकर, एम.वी. डोंडे, युसुफ़ मेहरअली, एन.एम. जोशी, आर.एस. रूईकर और मनीबेन कारा—वरिष्ठ मजदूर नेताओं का समागम



युसुफ़ लंदन में अरुणा आसफअली तथा अन्य के साथ



पारखी युसुफ़ प्रख्यात संगीतज्ञ अलाउद्दीन खां के साथ चेतना, बंबई में आयोजित 'राष्ट्रीय प्रदर्शनी' के उद्‌घाटन अवसर पर



लंदन से जहाज द्वारा लौटने पर बल्लार्ड पियरे, बंबई में युसुफ़ की अगवानी कमला देवी, अच्युत पटवर्धन, मीनू मसानी, मोईनुद्दीन हैरीस आदि ने की

तक भारत की नियति अर्थहीन एवं उसकी स्वतंत्रता अपूर्ण रहेगी।

"हमें विश्वास है कि समाजवाद ही वह शक्ति है, जो देश के खंडित भागों को एक टिकाऊ एकता के सूत्र में पिरो सकती है।

"हमने जो स्वतंत्रता प्राप्त की है जनता के लिए, उसका भी तब तक कोई विशेष महत्व नहीं होगा जब तक कि वह अर्थ अभाव, सामाजिक दमन तथा आर्थिक शोषण से स्वतंत्र न हो। यदि इस स्वतंत्रता को चिरस्थायी बनाना है, तो उसे शीघ्र ही एक सामाजिक रूपांतरण तथा एक ऐसी नयी समाज व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त करना होगा जिसमें न कोई भिखारी हो, न राजकुमार, न कोई जाति से ऊंचा हो, न नीचा, मानव का शोषण न हो, तथा जिसमें सबको सेवा तथा आत्माभिव्यक्ति एवं विकास के समान अवसर प्राप्त हों।

"हमें विश्वास है कि सामाजिक न्याय तथा स्वतंत्रता के इन लक्ष्यों तक जाने के लिए केवल समाजवाद ही हमारा मार्गदर्शन कर सकता है।

"हमारा देश विश्व के निर्धनतम देशों में से एक है, तथा हमारे देशवासियों का बहुतांश अत्यधिक अभाव और दरिद्रता में जी रहा है। दरिद्रता और अभाव का निराकरण तीव्र आर्थिक विकास, औद्योगिकीकरण तथा कृषि के पुनर्जीवन पर निर्भर है।

"हमें विश्वास है कि ऐसा तीव्र आर्थिक विकास नियोजित अर्थव्यवस्था की समाजवादी प्रणाली के अंतर्गत ही संभव है।

"अंततः सांस्कृतिक दृष्टि से हम एक अत्यंत पिछड़ी हुई जाति हैं।

"हमें पुनः यह विश्वास है कि एक जन संस्कृति के निर्माण तथा भारत में सामान्यजन को उसके वर्तमान पशु स्तर से उठाकर मानवीय स्तर तक ले जाने का कार्य समाजवाद ही कर सकता है।

"इस प्रकार हम लोग समाजवादी दल की ओर से इस विश्वास के साथ कि, भारत का भविष्य समाजवाद पर निर्भर है, अपने उन समस्त देशवासियों से जो भारत के भविष्य में हमारी आस्था में साझेदार हैं, विनती करते हैं कि वे एक समाजवादी अर्थात स्वतंत्र, संपन्न और संयुक्त भारत के निर्माण में हमें सहायता प्रदान करें।

"समाजवादी भारत का निर्माण एक दिन में नहीं हो पाएगा। उसके लिए अनेक रूपों में कठोर, सतत रचनात्मक कार्य करना होगा। समाजवादी दल वह कार्य करना चाहता है। अब आपको उसे उपकरण प्रदान करने हैं। अब तक जो कार्य हुआ है वह महत्वहीन नहीं है, परंतु तीव्र परिवर्तन और संक्रमण के इस काल में उसे और तीव्रता से सब ओर फैलाया जाना चाहिए। समाजवादी दल पूरा समय देनेवाले समर्पित कार्यकर्ताओं की एक विशाल टोली को भरती करके प्रशिक्षित करना चाहता है। उसे एक स्वस्थ एवं सशक्त श्रमिक संघ आंदोलन विकसित करना होगा। और यदि समाजवाद को वास्तविक अर्थात उसे एक श्रमिक लोकतंत्र का रूप ग्रहण करना है, तो समाजवादी दल को एक 'श्रमिक शिक्षण कार्यक्रम' हाथ में लेना होगा

क्योंकि श्रमिकों का सांस्कृतिक स्तर उठाए तथा उनको राजनीतिक परिपक्वता प्रदान किए बिना श्रमिक लोकतंत्र एक दिवास्वप्न बनकर रह जाएगा। इसके अतिरिक्त समाजवादी दल को कृषकों तथा भूमिहीन श्रमिकों के संगठन बनाने होंगे। उसे एक सर्वांगसंपूर्ण सहकारिता आंदोलन विकसित करना होगा। अंततः दल को अध्ययन तथा शोध, अपने निजी बौद्धिक आधार, साहित्य तथा समाजवादी पुनर्रचना की रूपरेखाओं के सृजन, एवं प्रचार तथा प्रकाशन का कार्य करना होगा।

" हमारे सामने भारी कार्य हैं जिनकी पूर्ति के लिए आस्था और निष्ठा के अतिरिक्त धन की भी आवश्यकता होगी। हमारा अनुमान है कि हमें अपनी वर्तमान योजनाओं के क्रियान्वयन की दिशा में एक समुचित पहल करने के लिए कम-से-कम दस लाख रुपए की आवश्यकता होगी। केंद्र और राज्यों में यह स्वाभाविक है कि दल वर्तमान भारत के प्रत्येक भाग में कार्य करेगा। दल के सामान्य कामकाज के अतिरिक्त हमारे सामने तीन निश्चित योजनाएं हैं—प्रथम, श्रमिक संघों के कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के लिए श्रमिक महाविद्यालयों की स्थापना की योजना, द्वितीय, दृश्य एवं श्रव्य शिक्षण-प्रणाली तथा वयस्क-साक्षरता के माध्यम से श्रमिकों की शिक्षा के लिए श्रमिक शिक्षण आंदोलन की योजना, तथा तृतीय एक ऐसे सामाजिक एवं आर्थिक शोध संस्थान की स्थापना की सबसे अधिक महत्वपूर्ण योजना जिसमें पर्याप्त संख्या में विशेषज्ञों तथा शोधकर्ताओं का दल एवं एक उपयुक्त पुस्तकालय हो।

" हमें जो कार्य करना है उसकी तुलना में दस लाख रुपए की राशि बहुत छोटी है। परंतु हम आपसे यह मामूली-सी राशि प्रारंभिक राशि के रूप में मांग रहे हैं तथा हमें आशा है कि समाजवादी दल आपके प्रारंभिक समर्थन के सहारे जो कार्य करेगा उसके बलबूते पर वह आपसे इसके आगे तथा इसकी अपेक्षा अधिक समर्थन प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त कर लेगा।

" हमें आशा है कि हमने आपके सम्मुख जो श्रेष्ठ प्रयोजन प्रस्तुत किए हैं उनकी सिद्धि के लिए आपमें से प्रत्येक अपनी सामर्थ्य के अनुसार दल की सहायता करेंगे। हमें यह भी आशा है कि समाजवादी दल आपकी सहायता और आपके सहयोग के बल पर स्वतंत्रता, समृद्धि, प्रसन्नता तथा श्रेष्ठ जीवन से संपन्न नए भारत के निर्माण में सफल रहेगा।

नरेंद्र देव	पुरुषोत्तम त्रिकमदास
कमलादेवी चट्टोपाध्याय	अहमद दीन
युसुफ़ मेहरअली	अशोक मेहता
अरुणा आसफ़ अली	अच्युत पटवर्धन
राममनोहर लोहिया	जयप्रकाश नारायण
	7 अगस्त, 1947

युसुफ़ मेहरअली एक समर्पित समाजवादी थे। उनका समाजवाद मानवीयता संपन्न था। युसुफ़ मेहरअली ने जिस समाजवाद की शिक्षा दी और जिसका अपने जीवन में पालन किया उसके मानवीय और नैतिक स्रोतों का उल्लेख करते हुए डा. जाकिर हुसैन ने उनकी स्मृति में बंबई में स्थापित 'युसुफ़ मेहरअली केंद्र' के उद्घाटन समारोह के अवसर पर कहा था :

युसुफ़ मेहरअली ने अपने एक मित्र से कहा था, "मुझे कुरूपता और बर्बरता से घृणा है, जिसके कारण मैं समाजवादी हूं। मेरा समाजवाद सुरूपता और नैतिक आधारों पर आधारित है, आर्थिक आधारों पर नहीं।" उनका यह कथन उनके व्यक्तित्व के एक अन्य तथा संभवतया सुंदरतम पक्ष को उजागर करता है। उनकी प्रेरणा का स्रोत उद्योग और अर्थव्यवस्था के अधिक सक्षम तथा उपयोगितावादी संगठन का विचार नहीं वरन मनुष्य जानबूझकर अथवा अनजाने ही एक-दूसरे के प्रति जो अमानवीय व्यवहार करते हैं, उससे मनुष्य के मन में उत्पन्न होने वाला आदिमखेद था। यह खेद उन्हें दार्शनिक, धार्मिक पुरुष तथा कवि बना सकता था, किंतु युसुफ़ मेहरअली बहुत सौभाग्यशाली थे, उसने उन्हें एक मित्र बना दिया।

डा. जाकिर के सत्य और सौंदर्य से परिपूर्ण ये शब्द युसुफ़ मेहरअली की समाजवादी आस्था और वैचारिक निष्ठा की सराहना की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति हैं।

5. देशी रियासतों में विद्रोह

देशी नरेशों ने विद्रोह पर तुले राष्ट्र के प्रति विश्वासघात किया। इसके बदले में अंग्रेजों ने अपने प्रति निष्ठावान नरेशों को अपने अपने राज्यों पर शासन करते रहने की अनुमति प्रदान कर दी।

—आचार्य जे. बी. कृपलानी

स्वतंत्रता से पूर्व कच्छ भारत के पश्चिमी भाग में एक देशी राज्य था और अब वह गुजरात राज्य का अंग है। उसका क्षेत्रफल 6500 वर्गमील तथा समुद्र तट 150 मील लंबा है। युसुफ़ मेहरअली के पितामह कच्छ के एक प्रमुख व्यापारी थे। वे जाति अथवा धर्म का भेदभाव किए बिना अनेक संस्थाओं और व्यक्तियों के प्रति अपनी दानशीलता के लिए विख्यात थे। मेहरअली ने अपनी टिप्पणियों में लिखा था :

(1) कच्छ को देखकर 16वीं अथवा 17वीं शताब्दी के भारत की कल्पना होती है।

(2) वायुयानों के इस युग में वहां रेलमार्ग अथवा मोटर मार्ग तो है ही नहीं, अच्छे बैलगाड़ी मार्ग भी नहीं हैं।

(3) वहां केवल तीन हाईस्कूल हैं, कालेज एक भी नहीं है।

अनेक वर्षों से कच्छ में विधि-सम्मत शासन न था। वहां शासक तथा उसके चाटुकारों का आतंक व्याप्त था। 1926 में 'कच्छी प्रजाकीय परिषद' की स्थापना हुई तथा जनसाधारण की चेतना जगाने का गंभीर प्रयास किया गया। 1936 में युसुफ़ मेहरअली कच्छ में परिषद के वार्षिक सम्मेलन में सम्मिलित हुए। उनके प्रेरणादायी भाषण ने युवाओं को प्रभावित किया था। 1938 में उन्हें सर्वसम्मति से 'कच्छी प्रजाकीय परिषद' का अध्यक्ष चुन लिया गया।

परिषद का वार्षिक सम्मेलन 26-27-28 दिसंबर, 1938 को मूंदड़ा में हुआ। सम्मेलन को शानदार सफलता मिली। किसानों, महिलाओं तथा युवाओं ने उसमें बड़ी संख्या में भाग लिया।

मेहरअली जनता के प्रत्येक वर्ग को एकत्र करने में सफल रहे। वार्षिक सम्मेलन के मंच से उन्होंने देश की राजनीतिक स्थिति का एक सर्वेक्षण प्रस्तुत किया

तथा यह घोषणा की कि आम जनता अब जाग चुकी है। कांग्रेस द्वारा साइमन आयोग के बहिष्कार, पूर्ण स्वाधीनता की घोषणा और सविनय अवज्ञा आंदोलन ने आम जनता की मन:स्थिति बदल डाली है। उनमें आत्मविश्वास जाग उठा है। ब्रिटिश सरकार द्वारा कांग्रेस पर प्रतिबंध लगा दिए जाने के बावजूद स्त्रियों और पुरुषों ने भारी संख्या में सरकारी आदेशों का उल्लंघन करके जेल जाना स्वीकार किया। इससे यह पता चलता है कि जनता को सदा तक नहीं दबाया जा सकता। उन्होंने घोषणा की कि कुछ देशी राज्यों में 'उत्तरदायी शासन' के लिए संघर्ष छिड़ चुका है तथा अन्य राज्यों में वह किसी भी क्षण छिड़ सकता है। उन्होंने सम्मेलन से आग्रह किया कि वह दर्जनों प्रस्तावों के स्थान पर केवल एक प्रस्ताव पारित करे कि कच्छ नरेश तीन महीने के भीतर 'उत्तरदायी शासन' की स्थापना की घोषणा कर दें अन्यथा हमें उसकी प्राप्ति के लिए सत्याग्रह छेड़ देना चाहिए। उन्होंने परिषद् को सशक्त बनाने के लिए कोष संग्रह की अपील की, तथा तत्काल सम्मेलन में ही एक लाख से अधिक कौड़ी एकत्र हो गयीं।

मेहरअली जन्मजात नेता थे। उन्होंने किसानों, युवाओं तथा महिलाओं के अलग अलग सम्मेलन आयोजित किए, जिनमें उनसे कहा गया कि वे सत्याग्रह के लिए तैयार रहें। उन्होंने समूचे वातावरण में प्राण फूंक दिए तथा सम्मेलन में सर्वत्र उत्साह व्याप्त हो गया।

मेहरअली तथा कच्छ नरेश के बीच भेंट तथा परिषद की मांगों पर चर्चा हुई। मेहरअली ने कच्छ नरेश के सम्मुख उत्तरदायी शासन के अर्थ की व्याख्या सूत्र रूप में इस प्रकार की :

(1) (क) भाषण की स्वतंत्रता, (ख) प्रकाशन की स्वतंत्रता, (ग) संगठन खड़ा करने की स्वतंत्रता;

(2) एक निर्वाचित विधानमंडल;

(3) विधानमंडल द्वारा निर्वाचित तथा उसके ही प्रति उत्तरदायी कार्यपालिका;

(4) राजपरिवार को मिलने वाले प्रिवीपर्स (मानदेय) की राशि राज्य के राजस्व के 10 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए।

मेहरअली ने यह भी कहा कि यदि 'महामहिम' कोई अन्य संशोधन तथा सुझाव परिषद् के सम्मुख रखना चाहें तो परिषद् उस पर सहर्ष विचार करेगी।

कच्छ नरेश ने इन मांगों पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। मेहरअली ने उन्हें सूचित किया कि यदि 31 मार्च, 1939 तक उत्तरदायी शासन की घोषणा न की गयी तो वे समूचे कच्छ में शांतिपूर्ण सत्याग्रह छेड़ देंगे। मेहरअली और उनके साथियों ने जनसाधारण को संगठित करना प्रारंभ कर दिया। उन्होंने इस कार्य के लिए रचनात्मक गतिविधियां किसानों का संगठन, हिंदू-मुस्लिम एकता, खादी प्रचार, शराब की दुकानों पर धरना आदि, आरंभ करने की अपील की। वे जहां भी गए

उन्होंने वहीं इस बात पर बल दिया कि कच्छ में सांप्रदायिक युवा संगठन नहीं बनने चाहिए। उन्होंने जोर देकर कहा कि हमारे आंदोलन की सफलता के लिए सांप्रदायिक एकता अनिवार्य है। उन्होंने युवाओं से कहा कि वे प्रत्येक गांव की सामाजिक-आर्थिक दशाओं के बारे में जानकारी एकत्र करें। उन्होंने कहा कि उस जानकारी से उनको अपने आर्थिक पिछड़ेपन का बोध हो जाएगा तथा वे यह समझ जाएंगे कि उत्तरदायी शासन नया युग लाने में किस प्रकार सहायक बन सकता है। मेहरअली समाजवाद के पाठ ठेठ जड़मूल से आरंभ करते थे।

मेहरअली ने बंबई पर भी ध्यान केंद्रित किया जहां कच्छवासी भारी संख्या में निवास करते थे। उन्होंने उनकी अनेक सभाओं में भाषण दिए तथा उनमें उत्साह फूंकने की चेष्टा की। वहां से कच्छ जाकर सत्याग्रह करने के लिए स्वयंसेवक दस्ते संगठित किए गए। कोष संग्रह के लिए भी समितियां बनाई गयीं। उन्होंने कच्छ राज्य के संघर्ष को समर्थन प्रदान करने के लिए बंबई में बुलाई गयी एक जनसभा में भाषण देने के लिए कांग्रेस अध्यक्ष सुभाष चन्द्र बोस को निमंत्रित किया।

संघर्ष में तेजी लाने की दृष्टि से युसुफ़ मेहरअली ने कच्छ में महिलाओं की एक सभा बुलाई जिसकी अध्यक्षता लेडी प्रमिला थैकरसी ने की। एक युवा सम्मेलन भी हुआ जिसकी अध्यक्षता निर्भयराम पोपट ने की। ये दोनों नेता मूलतया कच्छी थे।

कच्छ नरेश ने जनसाधारण के विरुद्ध दमनकारी उपाय अपनाने शुरू कर दिए परंतु जनता का मनोबल ऊंचा था। लोग दमन के विरोध में सड़कों पर निकल आते तथा सत्याग्रह करके जेल जाना स्वीकार कर लेते। कच्छ प्रजाकीय परिषद् की कार्यकारिणी परिषद् के सदस्य वेलजी ठाकरसी की गिरफ्तारी पर युसुफ़ मेहरअली ने निम्न वक्तव्य दिया :

"कच्छ की दकियानूसी दंड संहिता में हाल में ही जोड़े गए राजद्रोह खंड का आश्रय कच्छ के इतिहास में प्रथम बार लिया गया है। उसके प्रयोग से यह संकेत मिलता है कि संबंधित अधिकारी जनता के उत्साह के सामने घबरा उठे हैं। मैं इस गिरफ्तारी का स्वागत करता हूं। मुझे आशा है कि इसके पीछे गिरफ्तारियों का एक क्रम चालू होगा। जनता तैयार है। सैकड़ों लोग सत्याग्रही के रूप में भरती हो चुके हैं। मैं राज्य-कारागार को दिन में दो बार भरना शुरू कर दूंगा।

"दमन से क्रांति का प्रारंभ मात्र होता है। भारत में पिछले वर्षों का अनुभव इसका ज्वलंत प्रमाण है, कि जनता के संकल्प के सामने दमन का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। कल के जेल के पंछी भारत में आज मंत्री हैं। राजकोट की स्मृतियां सबके मन में ताजा हैं और अब कच्छ ने राजकोट के मार्ग पर कूच कर दिया है। मैं कच्छ की जनता से अपील करता हूं कि वह पूरी शक्ति के साथ शांति बनाए रखे तथा आगे आनेवाले शानदार संघर्ष की तैयारी करे।"

22 मार्च, 1939 को गांधी जी ने घोषणा कर दी कि सभी देशी राज्यों में सत्याग्रह स्थगित कर दिया जाए। कच्छ प्रजाकीय परिषद ने गांधी जी के आदेश का पालन किया। आंदोलन वापस ले लिया गया।

युसुफ़ मेहरअली ने अपने संगठन चातुर्य के बल पर तीन-चार महीने की अल्पावधि में दमनीय जनता को उठ खड़े होने तथा अपने लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए संघर्ष करने को जाग्रत कर दिया। कच्छ संघर्ष ने मेहरअली के भीतर गतिशील नेतृत्व की क्षमता का एक अन्य उदाहरण प्रस्तुत कर दिया।

भारतीय राज्यों के शासनारूढ़ स्वेच्छाचारी नरेशों ने प्रत्यक्ष संघर्ष रोक दिए जाने को जनता की दुर्बलता समझ लिया। इस मामले में कच्छ अपवाद न था। मेहरअली जितने समय राज्य से बाहर रहे उस बीच राज्य की ओर से परिषद-कार्यकर्ताओं पर अमानवीय अत्याचार किए गए। सामंती जमींदारी प्रथा के भुतहा अवशेष गिरासियाओं ने प्राय: स्वयं को विपन्न कर लिया था किंतु उन्हें दूसरों को कष्ट पहुंचाने की अपनी विरासत और परंपरा पर गर्व था। उन्हें भड़का दिया गया, जिसके फलस्वरूप परिषद की शांतिपूर्ण गतिविधि में उनके हिंसक हस्तक्षेप ने एक गंभीर जोखिम का रूप ले लिया था। राज्य चुपचाप नहीं बैठा था। वह व्यक्ति की सुरक्षा तथा जनता द्वारा विचारों की अभिव्यक्ति तथा संघ-समुदायों के भीतर संगठित होने की स्वतंत्रता का आश्वासन देने में विफल हो चुका था, जिसके कारण यह गंभीर शंका उत्पन्न हो गयी थी कि गिरासियाओं की हिंसक गतिविधि से उत्पन्न शालीनतारहित और निर्लज्जतापूर्ण घटनाओं के पीछे राज्य शासन का हाथ था।

जब मेहरअली कच्छ लौटे तब वातावरण में सचमुच उदासी छाई हुई थी। लोग बेचैन थे। युगों पुराने दमन से छुटकारा पाने के लिए जल्दी से संघर्ष शुरू होने की आशा धीमे धीमे उदासीनता की मन:स्थिति में परिणित होती जा रही थी। 'राजकोट-प्रयोग' धीरे-से राह बनाता जा रहा था। वह लोगों की साहसी आत्मा पर घातक प्रभाव डाल रहा था। वे आगे बढ़ना चाहते थे परंतु उनसे कह दिया गया था कि वे अपनी भावनाओं पर लगाम लगाए रहें। आगे बढ़ने की महत्वाकांक्षा पर इस प्रकार अंकुश लगाने की प्रतिक्रिया देशी राज्यों की प्रजा के आंदोलनों के लिए आगे चलकर घातक सिद्ध हुई। त्रावणकोर की जनता मध्यकालीन कच्छ की अपेक्षा कहीं अधिक प्रगतिशील थी, वहां अनेक लोगों ने राज्य-कांग्रेस छोड़ दी थी। ऐसी स्थिति में कच्छ की नव जाग्रत जनता पर उसके नाटकीय प्रभाव की कल्पना करना कठिन नहीं होगा।

अपने कार्यक्षेत्र में लौटने पर मेहरअली ने स्वयं को कुंठा के ऐसे वातावरण के बीच पाया। जनता की संभावित शक्ति और संघर्ष एवं बलिदान की सामर्थ्य में अपूर्ण आस्थावान व्यक्ति तो वहां व्याप्त निराशा से स्वयं भी ग्रस्त हो जाता, परंतु

कच्छ की जनता के नेता का निर्माण श्रेष्ठतर धातु से हुआ था, उसके शब्दकोश में 'पराजय' शब्द था ही नहीं। उन्होंने स्थिति का सर्वेक्षण और मूल्यांकन करने के बाद उसके खतरनाक पक्षों को समझ लिया। वे समझ गए कि उठाए गए निर्णायक कदम ही स्थिति को संभाल सकते हैं। यह स्पष्ट हो जाने के बाद कोई झिझक न रही। उन्होंने घोषणा कर दी कि "संघर्ष के रोक देने का अर्थ यह नहीं निकाल लेना चाहिए कि प्रत्येक चोट सह ली जाएगी।"

एक प्राचीन कहावत है : 'जहां चाह वहीं राह'। परिषद की ओर से राज्य के एक गांव मनकुवा में एक जनसभा आयोजित की गयी। यह परिषद के लिए शक्ति-परीक्षण का अवसर था। "यहां स्वयंसेवकों पर आक्रमण किया गया। राष्ट्रीय ध्वज और गांधी टोपियां जलाई गयीं।" सभा आरंभ होने से काफी पहले से ही राज्य के विभिन्न भागों से किसानों की बड़ी बड़ी टोलियां मनकुवा पहुंचने लगी थीं। मेहरअली निश्चित समय पर पहुंचे। वातावरण तनावपूर्ण था, परंतु "मेहरअली के आगमन से थोड़ा पहले ही एक विशाल पुलिस दल सभा-स्थल पर पहुंच गया था। काफी बड़ी संख्या में गिरासियों को लेकर गिरासिया नेता ने सभा-स्थल को घेर लिया तथा मंच पर अधिकार जमा लिया था। वे लोग लाठियों और तलवारों से लैस थे। स्थिति सचमुच भयावह थी।"

यह स्पष्ट था कि गिरासिया लोग सभा को भंग करने पर तुले थे। पुलिस से सहज ही यह अपेक्षा थी कि वह घुसपैठिया गिरासियों को वहां से हटाती तथा उन सशस्त्र अवांछनीय तत्वों से जनता की रक्षा करती। परंतु पुलिस ने किया कुछ और ही। पुलिस दल के मुखिया ने मेहरअली से कहा कि वे सभा किसी अन्य स्थल पर कर लें। उन्होंने इस अवांछनीय सुझाव पर रोष प्रकट किया तथा उसे अस्वीकार कर दिया। उस संकटपूर्ण स्थिति के बावजूद वे मंच तक गए जिस पर गिरासिया पहले से ही अधिकार जमाए हुए थे। उन्होंने घुसपैठियों के नेता को चेतावनी दी, गिरासिया नेता ने भी प्रत्युत्तर में सौगंध खाई कि वह अपने लोगों को वहां से नहीं हटाएगा तथा सभा भंग करके ही रहेगा। परंतु मेहरअली धमकियों से डरने वाले न थे। उन्होंने घोषणा कर दी कि सभा वहीं होगी चाहे उसके परिणाम कुछ भी निकलें। गिरासिया नेता ने समझ लिया कि उसका खेल समाप्त हो गया है। वह समझौते के लिए तैयार हो गया। उसने कहा कि "यदि मेहरअली किसी अन्य स्थल पर सभा कर लें तो उनकी सभा में किसी भी प्रकार का व्यवधान नहीं डाला जाएगा। मेहरअली ने उस सब बकवास को अनसुना कर दिया तथा कहा कि "पहले से घोषणा की जा चुकी है कि सभा इस स्थल पर होगी अत: सभा यहीं होगी।"

जन-नेता की इस दृढ़ता ने श्रोताओं को अभिभूत कर दिया। जनता अपने अधिकारों की रक्षा के लिए तैयार थी। उससे पहले तक फैली निराशा और तनाव

की स्थिति समाप्त हो गयी। समूचे वातावरण में एक नया जीवन हिलोरें लेने लगा।

अब कदम पीछे नहीं हटाया जा सकता था। गिरासियों ने जनता की मन:स्थिति के परिवर्तन को भांप लिया। वे पीछे हट गए। जनता का संकल्प विजयी हुआ। प्रतिक्रियावादी शक्तियों के विरुद्ध शक्ति-परीक्षण में परिषद् विजयी रही। कच्छ की जनता ने भारतीय राज्यों की संघर्षशील जनता के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया। जनता की संकल्पबद्ध एवं संगठित शक्ति का प्रवाह अवरुद्ध करने की सामर्थ्य किसी में नहीं होती।

6. जेल-डायरी

न रचतीं पाषाणी प्राचीरें कारागार
न छड़ें लोहे की पिंजड़े
भोले और शांत मन
समझ लेते हैं आश्रम उसको।

—रिचर्ड लवलेस

सन 1942 के प्रारंभ में युसुफ़ मेहरअली लाहौर केंद्रीय जेल में थे। जेल में उन्होंने एक दिलचस्प व्यंग्य लिखा—'पाकिस्तान-यात्रा'। यह यात्रा कल्पना की एक उड़ान थी और यह पाकिस्तान के जन्म से बहुत पहले भरी गयी थी। इस साहित्यिक कृति का एक अंश उनकी स्पंदनशील जेल-डायरी थी जिसके पृष्ठों से मेहरअली की इस प्रतिभा का बोध होता है कि वे मनुष्यों और इतिहास के उत्कट अध्येता तथा एक ऐसी तीक्ष्ण दृष्टि के धनी थे, जिसके बल पर वे मानव-मस्तिष्क के भीतर तक प्रवेश कर सकते थे।

केंद्रीय जेल लाहौर के एकांत में लिखी गयी मेहरअली की जेल-डायरी के कुछ अंश :

I

जैसे ही मैं केंद्रीय जेल लाहौर के बाहरी द्वार से भीतर पहुंचा मेरे दाहिनी ओर एक बोर्ड लगा था जिस पर जेल की जनसंख्या का विवरण विशेष रूप से प्रदर्शित किया गया था। संख्या 2,565 थी। इसका अर्थ यह हुआ कि इस कारागार में बंबई प्रेसीडेंसी के किसी भी कारागार से अधिक बंदी थे। सामान्यतया यरवदा जेल में 1500 बंदी रखे जाते हैं तथा अन्य केंद्रीय जेलों में प्राय: 1200। बंदियों का विवरण केवल इतना भर न था। मेरा ध्यान एक अन्य विवरण की ओर गया—यहां मृत्युदंड प्राप्त बंदियों की संख्या थी—83। यह संख्या मुझे अत्यधिक असामान्य प्रतीत हुई क्योंकि हमारी ओर यह संख्या तीन-चार के बीच ही रहती है। इस बोर्ड पर

समाजशास्त्रीय जानकारी का कितना बड़ा कोष अंकित था तथा साथ ही छिपा हुआ भी था !

इस तुलना ने मेरे मन में उलझन पैदा कर दी। क्या ऐसा है कि पाकिस्तान में बंबई की अपेक्षा अपराधों एवं अपराधियों की संख्या अधिक है ? यह कल्पना अपने-आप में बेहूदा लगती थी। ऐसे आदर्श राज्य में ऐसा कैसे हो सकता था ? अब केवल एक ही अन्य निष्कर्ष बचा था कि इस (पाकिस्तान) का निर्माण अपराधों की संख्या के अनुरूप किया जा रहा है। अथवा, लघुतर पाकिस्तान-विधि-संहिता गिल्बर्ट और सुलीवान के नाटक में दिए गए इस प्रख्यात परामर्श का अनुसरण कर रही है कि दंड को अपराध के अनुरूप बनाया जाए। अथवा शायद बंबई की कम संख्या का कारण बूढ़े गांधी की सन्निधि हो, क्योंकि उनका हृदय परिवर्तन का सिद्धांत अपराधों की संख्या को घटाने में सहायता प्रदान करके जेल की जनसंख्या के योग पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

भीतरी द्वार पार करने से पहले मुझे भारी-भरकम पीले साफे लगाए कई बंदी दिखाई पड़े। बाद में मुझे ज्ञात हुआ कि वे 'अभ्यस्त बंदी' थे। वे बंदी 'अभ्यस्त बंदी' कहलाते हैं, जो जेल को अपनी एक बार से अधिक उपस्थिति से गोरव प्रदान करते हैं। बंबई में 'अभ्यस्तों' को काली टोपी दी जाती है, पीला रंग लंबी सजा वाले बंदियों के लिए सुरक्षित रखा जाता है।

मेरा नाम, पता, पद इत्यादि सावधानीपूर्वक लिखे जाने तथा मेरे सामान की तलाशी के पश्चात मुझे भीतरी द्वार से घंटाघर की मीनार की ओर ले जाया गया। विशाल द्वार खुलते ही दिखाई पड़नेवाला पहला परिदृश्य सुहावना था, जेल-प्राचीरों की तनावपूर्ण नीरसता को भंग करनेवाली झाड़ियों, वृक्षावलियों तथा प्रारंभिक अवस्था में घास के एक कामचलाऊ मैदान के दर्शन हुए।

घंटाघर के समीप एक अन्य दंड प्राप्त बंदी—मुंशी ने एक रजिस्टर में मेरे बारे में संपूर्ण विवरण नए सिरे से लिखा। इसके बाद मुझे एक लंबे रास्ते से जेल के उस भाग में ले जाया गया जिसे बमघर कहा जाता था।

II

मैंने स्वयं को सुनाते हुए ऊंचे स्वर में दोहराया : 'बमघर', और मुझे लगा कि मेरा मन एक गुदगुदाहटपूर्ण सुख से भर उठा है। पहले तो मैंने सोचा कि मुझे जिस चौक में ले जाया जा रहा है वह ईंटों के स्थान पर बमों से बना है। उन महंगाई के दिनों में ईंटें महंगी मिलती थीं जबकि बमों का कोई मूल्य ही न था, क्योंकि कार्यकुशल पाकिस्तान-पुलिस उन्हें इतने अचूक ढंग से, बार बार तथा इतनी बहुतायत से खोज निकालती थी कि वह उनकी नियमित एवं अबाध आपूर्ति करने

में सक्षम थी। तथापि, वार्तालाप की दृष्टि से मैंने अपने साथ चल रहे भयानक आकृति वाले वार्डन से पूछा कि उस स्थान को 'बमघर' क्यों कहा जाता था।

उसने उत्तर दिया, "क्योंकि यहां अनेक वर्षों तक खतरनाक आतंकवादी बंदियों को रखा गया था।"

यह उत्तर सुनकर पहले तो मेरे मन में निराशा की भावना उत्पन्न हुई किंतु शीघ्र ही उसका स्थान एक अन्य भावना ने ले लिया। अकेले और वह भी शाम के समय अनेक खतरनाक आतंकवादियों के साथ भेंट की संभावना से निश्चय ही मेरा मनोबल ऊंचा नहीं उठ सकता था, परंतु उस संभावना को टालने का कोई उपाय भी तो न था। मैंने सुन रखा था कि मन का चौकन्नापन प्रायः चमत्कारपूर्ण रीति से काम कर डालता है, अतः मैंने निश्चय कर लिया कि मैं ऊपर से परिस्थितियों के अनुरूप शांत एवं सौम्य बना रहूंगा।

चौक में जिस सौहार्द्र से मेरा स्वागत किया गया उसने मेरे चिंतन में एक अधिक सुखद धारा जोड़ दी। वहां प्रत्येक व्यक्ति अत्यधिक मित्रतापूर्ण और सहायक था। मेरे लिए एक कमरे की व्यवस्था की गयी तथा वहां कई लोगों ने मेरा सामान उसमें लगाने में मेरी सहायता की। मुझे बहुत जल्दी ऐसा प्रतीत होने लगा कि मैं उस नूतन जगत का ही हूं।

हमारे चौक में एक सीधी पंक्ति में 20 कोठरियां थीं। उनके बीच में कुछ छूटा हुआ स्थान था। दस कमरे थे, बीच के छूटे हुए स्थान पर रसोईघर था, तथा उसके बीच अन्य दस कमरे थे। अहाते में कारखाना भी था जिसमें राजनीतिक बंदियों से दैनिक जेल-कार्य पूरा करने की अपेक्षा थी। कारखाने के सामने बंदियों ने स्वयं एक छोटा-सा घास का मैदान बना लिया था। वह सुहावना था। चौक में एक छोटा-सा मनोरंजन कोर्ट तथा एक शाक-उद्यान भी था। उसके परे एक छोटी-सी बंद जगह थी जिसे कमरे का विस्तार कहा जा सकता है, परंतु उसके सामने की ओर समूचे क्षेत्र में लोहे के एक सरीखे सींखचे जड़े हुए थे। आने-जाने के लिए एक द्वार से बाहर के खुले आंगन में होकर रास्ता था। यह पूर्णतया एक पिंजड़ा था, ठीक वैसा ही जैसा कि चिड़ियाघर में होता है। ऐसा ही वातावरण रहा होगा जिसमें कवि की व्यथा इस प्रकार अभिव्यक्त हुई थी :

न रचतीं पाषाणी प्राचीरें कारागार
न छड़ें लोहे की पिंजड़े...

जेल और चिड़ियाघर में आखिरकार अनेक समानताएं हैं। दोनों में प्रबंध की विविधता एक समान ही होती है। चिड़ियाघर का अधीक्षक जंगल के कानून से निपटता है, उधर जेल-अधीक्षक उससे भी कहीं अधिक प्राचीन कानूनों को लागू करता है जिन्हें सभ्य भाषा में जेल-संहिता कहा जाता है।

मेरा कमरा जेल का एक सामान्य कमरा था। दीवारें सफेदी से पुती थीं,

खिड़कियां न थीं, वातायन ऊंचाई पर थे, लगभग छत के समीप। इसमें मौसम का तनिक हस्तक्षेप न था। जेल का प्रारूप सुधार के लिए नहीं वरन डराकर अपराध से रोकने के लिए होता है अत: जेल की दीवारों और जेल के कमरों को इस दर्शन की मुखर अभिव्यक्ति होना ही चाहिए। वास्तुकला और भवन-निर्माण पर जलवायु का प्रभाव अपने आप में एक दिलचस्प विषय है, परंतु आपराधिक न्याय शास्त्र में प्रतिशोधात्मक तत्व अभी तक सर्वोच्च होने के कारण जेलों के वास्तुकार ऐसे मूढ़ नहीं होते कि वे जेल के बंदियों की सुविधा सरीखी किसी मूर्खतापूर्ण और अप्रासंगिक बात के बारे में सोचकर अपनी नौकरी को संकट में डाल दें।

III

मुझे पाकिस्तान के जेल जीवन की जटिलताओं को समझने में अधिक समय नहीं लगा। जब मैं यहां पहुंचा था तब हम लोग अधिक न थे, कुल चौदह थे—जिनमें से आधे 'आतंकवादी' थे—जबकि वास्तव में मुझे अपने जीवन में मिलने वाले लोगों में वे सबसे अधिक सज्जन तथा शांत लगते थे। उनमें से एक सरदार गुलाब सिंह जो आजीवन कारावास का दंड भोग रहे थे, हमारे चौक के 'प्रबंधक' थे, और सचमुच बढ़िया तथा दूसरों के काम आने वाले पुरुष थे। अन्य आजीवन कारावास भोग रहे बंदियों में मलिक कुंदन लाल, किशोर लाल, रूपचंद और हंसराज थे। मेरे दो निकटतम पड़ोसी—एक ओर दैनिक पत्र 'सियासत' के प्रतिष्ठित संपादक मौलाना सैयद हबीब और दूसरी ओर एक तथाकथित आतंकवादी रूपचंद थे। और सचमुच वे कैसे अनोखे आतंकवादी थे कि इतने शर्मीले और शांत कि जब तक उनसे कुछ न कहा जाता था तब तक वे किसी से बोलते तक न थे।

मौलाना सैयद हबीब हमारे जेल चौक के वरिष्ठ राजपुरुष थे। वे एक सशक्त एवं आग्रहशील व्यक्तित्व के धनी थे। उनमें एक हठीले स्वभाव तथा महान क्षमता का संयोग था। इस्लाम धर्म तथा इस्लामी इतिहास के विद्वान तथा अनेक ग्रंथों के लेखक मौलाना एक सशक्त वक्ता तथा उर्दू के अग्रणी पत्रकार हैं। वे शहीदगंज मस्जिद आंदोलन के नेताओं में से एक थे। उन्होंने अनेक वर्षों तक अफगानिस्तान की राजनीति के संग प्रभावशाली संपर्क बनाए रखा था। वे उस प्रकार के राजनीतिज्ञ हैं, जो कहीं भी किसी भी विधायी निकाय की शोभा बढ़ा सकते हैं। परंतु उन्होंने अपने असाधारण रूप से बिखरावपूर्ण और बहुआयामी राजनीतिक जीवन में आए नानाविध परिवर्तनों और पक्षांतरों के दौरान अनेक शक्तिशाली शत्रु बना लिये हैं जिनमें पाकिस्तान का प्रधानमंत्री भी शामिल है। वर्षों से जेल भोगने के कारण उनका स्वास्थ्य चौपट हो गया है। जेल में वे बहुत अच्छे संगी हैं। उनमें एक सजीव एवं त्वरित व्यंग्य वृत्ति है। वे प्रार्थनामय भी हैं। वे प्रतिदिन पारंपरिक पांच के स्थान

पर सात बार नमाज अदा करते हैं।

हमारे सदस्यों की संख्या शीघ्र ही बढ़ने लगी। मुझे विशेषतया वह दिन याद है जिस दिन चौधरी कृष्ण गोपाल दत्त, ब्रजकृष्ण चांदीवाला तथा ओंकारनाथ को इस जेल में स्थानांतरित किया गया था। दिल्ली के बृजकृष्ण जी एक विरल व्यक्ति थे—एक सच्चे गांधीभक्त। शांत, विनीत और व्यक्तिगत जीवन में संत स्वरूप बृजकृष्ण का व्यक्तित्व आदर का पात्र था, जिसमें स्नेह की काफी मात्रा सम्मिलित थी। मैं उन्हें कई वर्षों से जानता था। जो व्यक्ति आपको पसंद हो उससे कहीं भी होनेवाली भेंट सुखद होती है तथापि एक नए और अजनबी वातावरण में उसका सुख कुछ और ही होता है।

उनका संग बहुत लोग चाहते थे। इसका एक अन्य कारण भी था। वे न शक्कर खाते थे न नमक, न वैसा कोई खाद्य पदार्थ जिसमें शक्कर अथवा नमक हो। और क्योंकि पाकिस्तानी जेलों में भी इस प्रकार के खाद्य पदार्थों की आपूर्ति सीमित ही रहती है अत: उनकी कृपा प्राप्त करने के लिए आम होड़ लगी रहती थी। मेरे प्रति उनके विशेष कृपा भाव पर कभी कभी मेरे साथी-बंदी आश्चर्य करने लगते थे। मेरी इस सफलता का नुस्खा इस प्रकार है। मैं आमतौर पर उनके संग अहिंसा के विषय पर उच्चस्तरीय नैतिक चर्चा तथा रचनात्मक कार्यक्रम की प्रशंसा करता और अधिक कठिनाई के दिनों में महात्मा गांधी की प्रशंसा में दो-चार शब्द कह देता और अंत में चतुराईपूर्वक उनके पास बची हुई शक्कर अथवा नमक का उल्लेख कर देता।

चौधरी कृष्ण गोपाल दत्त संसद में विपक्ष के उपनेता थे अत: पाकिस्तान में उनका बड़ा शोर था। वे चिड़िया के समान प्रसन्न और चिंतामुक्त जीवन व्यतीत करते थे, परंतु उनमें नेताओं सरीखी गर्वीली प्रवृत्ति न थी तथा निम्न पंक्तियों की भावना के अनुरूप वे हंसी-मजाक से भरपूर थे।

> जीने योग्य होता है जीवन
> दे पाते हैं जब आह्लाद हम
> थोड़ा-सा, मैं—
> दे नहीं सकता क्यों तुमको ?

वे समीप होते तो समय कटता नहीं, पंख लगाकर उड़ जाता।

यह बहुत विलक्षण बात है कि राजनीति (तथा कभी कभी व्यापार) के अतिरिक्त उनकी रुचि के दो अन्य विषय हैं—इकबाल का काव्य और होमियोपैथी। उनकी आलोचना करना सुरक्षित नहीं है क्योंकि उससे यह सम्मोहक राजकुमार आगबबूला हो उठता है। वे अपमान तो तनिक भी नहीं सह सकते। भले ही कोई प्रसंग हो या न हो वे हमेशा इकबाल की कविताओं के उद्धरण दिया करते हैं। और जहां तक होमियोपैथी का प्रश्न है उसके प्रति तो उनका इतना कठोर आग्रह

है कि जिन दिनों वे यूरोप और अमेरिका में थे, वे इतिहास और कला की दृष्टि से प्रसिद्ध उन दर्शनीय स्थलों की सैर को नहीं गए जिन्हें देखकर दूर और पास के असंख्य पर्यटक आनंद लेते हैं, उन्होंने अपना पूरा-का-पूरा समय होमियोपैथी के प्रसिद्ध चिकित्सकों से भेंट अथवा उस तन्मयता से उनके चित्र खोजने में व्यतीत कर दिया जिस तन्मयता से बहुत थोड़े से ही लोग ब्रिटिश संग्रहालय की प्रख्यात कला-कृतियों का निरीक्षण करते हैं। सौभाग्यवश होमियोपैथी के प्रति उनकी जितनी गहन निष्ठा है उतनी ही गहन उस चिकित्सा प्रणाली में उनकी क्षमता भी है। व्यावसायिक चिकित्सक न होने के कारण वे बहुत उदार भी हैं। वे न परामर्श का शुल्क लेते हैं, न औषधि का मूल्य। परंतु औषधि के बारे में तय करने से पहले वे रोगी की शरीर-परीक्षा के साथ ही सौंदर्य-बोध की परीक्षा भी करते हैं, और यदि रोगी कम-से-कम आधा दर्जन कवियों की कृतियों से उद्धरण नहीं दे पाता तो उन्हें दुख होता।

कृष्ण गोपाल दत्त के साथ दिल्ली प्रदेश कांग्रेस के नेता ओंकारनाथ आए थे। जेल में पूरा एक दिन भी न बीत पाया था कि वे जेल के प्रत्येक निवासी से परिचित हो चुके थे, तथा सबको मित्र बना चुके थे। वे सामाजिक तथा प्रत्येक भले के प्रति एड़ी से चोटी तक उदार हैं। उनके पास संसार को सुधारने की ढेरों योजनाएं भरी पड़ी हैं। वे सबके प्रिय बन गए। उनकी सद्भावना प्राप्त करने के लिए औद्योगिक संग्रहालयों की प्रशंसा करना आवश्यक था, विशेषतया दिल्ली में उनके द्वारा स्थापित संग्रहालय की।

एक अन्य स्वागत योग्य नवागंतुक गोविंद सहाय थे। वे कांग्रेस सरकार के दिनों में उत्तर प्रदेश प्रांत के राजस्व मंत्री रफी अहमद किदवई के निजी सचिव थे। इस बार वे छुट्टी मनाने के लिए कश्मीर जा रहे थे। वे किसी मित्र से मिलने को एक दिन के लिए लाहौर में रुके थे। हुआ यह कि उस दिन लाहौर में कोई सार्वजनिक सभा हो रही थी तथा उनसे उस सभा में बोलने का आग्रह किया गया। उन्होंने सरकार की रीति-नीति की ऐसी भरपूर प्रशंसा की कि वे जैसे ही अपने ठिकाने पर लौटे उन्हें पकड़कर पाकिस्तान ले जाया गया तथा छह महीने के लिए इस सराहनीय प्रयोजन से केंद्रीय जेल में रखा गया कि उनके द्वारा की गयी प्रशंसा को परिपक्व होने के लिए पर्याप्त समय मिल जाए।

कुछ दिन बाद कुलबीर सिंह मेयो अस्पताल से जेल में आ पहुंचे। पाकिस्तान में उनका नाम चर्चित था। ग्यारह वर्ष पूर्व उनके बड़े भाई भगत सिंह को यहीं हमारे निवास से कोई तीन फर्लांग की दूरी पर फांसी दी गयी थी। आज यहां से अस्सी मील की दूरी पर जेल के एक अन्य पंछी उनके छोटे भाई कुलतार सिंह कारागार में पड़े हैं। वे अभी जीवन के केवल पचीसवें वर्ष में चल रहे हैं। जेल में लगी बीमारी ने उन्हें तोड़ डाला है तथा उनकी काया किसी जमाने की गठीली

युवा काया की दयनीय मूर्ति बनकर रह गयी है। उनके रोग का अभी तक निदान नहीं हुआ है। लायलपुर, मौंटगुमरी, मुलतान, रावलपिंडी, देवली और लाहौर जेलों के मौन चीत्कार यदि मुखर हो पाते तो वे यह कहानी सुना सकते थे कि कुलबीर का सुंदर और हृष्ट-पुष्ट शरीर किस तरह एक ढांचा बनकर रह गया है। परंतु शरीर की दुर्बलता मन की शक्ति का दमन करने में विफल रही है और आज भी उन्हें खिलखिलाकर हंसते तथा पीड़ा के बावजूद कोई अच्छी-सी कहानी सुनाते हुए देखा जा सकता है। उनके चेहरे पर खेलने वाली सहज मुस्कुराहट के अवशेषों के माध्यम से एक अपराजेय आत्मा तथा एक महानतर लजीलेपन से जुड़ी महान व्यक्तिगत चुंबकीयता की हलचल का दर्शन किया जा सकता है। और सबसे बड़ी विशेषता यह कि उनकी वाणी से उनके ज्ञान की व्यापकता का बोध होता है।

IV

पाकिस्तान में कई ऐतिहासिक स्मारक हैं तथा उनमें से कुछ जेल की चहारदीवारी के भीतर हैं। वे काल के साथ पुराने नहीं पड़े हैं क्योंकि इतिहास ने अभी हाल ही में उनसे भेंट की है। यहां वह बैरक है जिसमें लाला लाजपतराय को रखा गया था। यहां लकड़ी की वे टिकटिकी हैं जिन पर भगतसिंह और उनके दो साथियों—सुखदेव तथा राजगुरु के जीवित देहों ने यह ऋण चुकाया था, जो अतीत भविष्य के प्रति चुकाता है, यहां वह विशाल छापाखाना है जो मौलाना जफर अली खां से जब्त किया गया था और जिस पर किसी समय 'जमींदार' नामक पत्रिका के अवज्ञापरक और धुआंधार लेख तथा घोषणा पत्र छपते थे तथा जो आज निर्जीव सरकारी स्टेशनरी छापता है। यहां वह प्रसिद्ध कुआं है जिसका जल महाराजा रणजीत सिंह को अतिप्रिय था और जो आज समस्त जेलवासियों की प्यास बुझाता है।

V

मेरे संग एक 'आतंकवादी' बेदी मलिक कुंदन लाल थे, जो आजीवन कारावास का दंड भोग रहे थे। हम लोग यदा-कदा बातचीत किया करते थे, आखिर एक दिन उन्होंने अपना हृदय खोल दिया।

वे संस्मरणात्मक स्वर में बोले, "मुझे और मेरे साथियों को वर्षों पहले जेल में डाल दिया गया था। तब मैं 19 वर्ष का था। अब मैं 31 वर्ष का हो गया हूं और अभी तो लंबा समय पड़ा है। युवावस्था तो लगभग समाप्त ही हो गयी। हमारा स्वास्थ्य भी पहले जैसा नहीं रहा। इस पर कुछ वर्षों तक निम्नतम 'सी' श्रेणी तथा अनेक भूख हड़तालों की छाया पड़ी है। हम जिस संसार से परिचित थे, वह मर चुका है। यदि हम जेल से छूट जाएं तो भी क्या हम नए संसार को जान पाएंगे



आचार्य भागवत, युसुफ़ मेहरअली और अन्ना रणदिवे, राष्ट्रीय सेवा दल को संबोधित करते हुए



युसुफ़ अपने भाई अहमद के साथ—स्नेह का बंधन



युसुफ़ रुग्णावस्था में भी एकाग्रचित्त



युसुफ़ मेहरअली और अच्युत पटवर्धन—1942 के भूमिगत असहयोग आंदोलन में प्रेरणा और संघर्ष के स्रोत

Praja Parishad
BHUJ (Cutch State)
26 5 39

My dear Jawaharlal,

Herewith a letter from the Editor of the Virginia Quarterly Review sent to me to be forwarded to you

The situation has been tense here for some time — Volunteers beaten, meeting broken, national flags & gandhi caps burnt by Girasias, who inhabit this part of the world and some [illegible] so useful to the State. After the [illegible] meeting was banned on the familiar ground of likelihood of breach of peace. The State was banking upon suspicion a bit too much. We decided to hold the meeting and the whole atmosphere became electrical. Both sides made preparations at Mankua Village. The Girasia chief, Thakore of Mankua brought his rajputs armed with lathis, knives, swords. and threatened everything on earth if the meeting was not abandoned. I was not less defiant and it seemed a question of touch and go. He came down and suggested that he would permit the meeting provided the venue was changed. This we also rejected. When everything seemed unsettled, they sprang a surprise by withdrawing the objection and "permitting" the meeting. It was very risky, but very necessary to [illegible] firm. This has had an excellent effect here.

Mahatmaji wrote a letter to the Maharao of Cutch in his usual manner appealing for [illegible]

Hoping this finds you in good health

Yours sincerely,
Yusuf [illegible]

युसुफ़ की खूबसूरत हस्तलिपि का नमूना



अध्ययनरत युसुफ़

और उसमें अपना स्थान बना पाएंगे ! इस बीच हम धैर्यपूर्वक और नियति को स्वीकार करके यहां रह रहे हैं। किंतु हमारी आत्मा अभी तक सशक्त है। कभी कभी जब कवि के ये शब्द बरबस मन को झकझोर डालते हैं :

विस्मृत सबसे
घुल रहे हैं हम
घुल रहे हैं,

तब हम प्रसन्न रहने का एक अतिरिक्त प्रयास करते हैं।"

इन मित्रों को जिन आरोपों पर दंड दिया गया था वे तो स्मृति में धुंधले पड़ गए हैं, उनके अपने विचार पल्लवित और पुष्पित हो गए हैं। स्वाधीनता संग्राम मार्ग में अनेक नए दुर्ग जीतता हुआ आगे की ओर बढ़ रहा है, तथा राजनीतिक कार्य की पद्धतियां बदल गयी हैं। अब नए विचारों को मंच पर अपना वर्चस्व स्थापित करना है। तथापि अब भी प्रतिशोध का दर्शन —'ईंट का जवाब पत्थर से', बदला नहीं है।

VI

जिस समय हम जेल में इस प्रकार आनंदमय जीवन व्यतीत कर रहे थे, बाहर कतिपय विध्वंसक शक्तियां पाकिस्तान की कल्याणकारी सरकार के मार्ग में कठिनाइयां खड़ी करने के लिए षड्यंत्र रच रही थीं। व्यापारियों को बिक्रीकर के प्रश्न पर आम हड़ताल की घोषणा, समस्त दुकानें बंद करने तथा समूचे व्यापार को ठप्प करने मात्र से संतोष न हुआ और अब उन्होंने विधि द्वारा स्थापित सरकार को उलटने से तो नहीं किंतु विवश करने के प्रयोजन से सत्याग्रह की घोषणा कर दी। इस तथ्य में तनिक संदेह नहीं किया जा सकता कि झंझट खड़ा करने वालों को सम्माननीय सर छोटूराम की ढिलाई तथा देवदूतों सरीखी सहनशीलता से बल मिला है।

हड़ताल लगभग एक मास से चल रही थी तथा अनेक देशों के समाचार पत्र उसके समाचार मुखपृष्ठों पर छाप रहे थे, और अब धूम-धड़ाके से सत्याग्रह आरंभ हो गया।

सत्याग्रह के पहले दिन ही पाकिस्तानी व्यापार मंडल के अध्यक्ष लाला बिहारी लाल चानना के नेतृत्व में 100 सत्याग्रहियों का एक जत्था रवाना हुआ जिसके पीछे लगभग एक लाख लोगों का जुलूस था। उनमें से 95 सत्याग्रहियों की गिरफ्तारी से उत्तेजित भीड़ में अदम्य उत्साह का संचार हो गया।

दूसरे दिन, मो. जफरअली खां के दाढ़ी-रहित सुपुत्र मो. अख्तर अली खां के नेतृत्व में 118 सत्याग्रहियों के जत्थे ने सत्याग्रह किया। उन सबको सुरक्षा की

दृष्टि से पकड़ लिया गया जिस पर भीड़ ने कल जितना ही उत्साह प्रदर्शित किया।

दीर्घकाल से पीड़ित अधिकारियों ने अंत में (शुद्ध आत्मरक्षा की दृष्टि से) इन व्यापारियों को वास्तविकताओं का स्वाद चखाने का निर्णय कर लिया। तुरंत ही कठोरतम कार्यवाही की रूपरेखा तैयार कर ली गयी। रात को ब्लैक आउट किया जाता और दिन में थ्रो आउट अर्थात भीड़ पर बल प्रयोग। अस्पतालों में भरती रोगियों की संख्या में सहसा वृद्धि हो गयी तथा चिकित्सक देर तक काम करते रहे।

यह कहना विचित्र-सा लगता है कि इस सबने निरोधक के रूप में कार्य करने के बजाय आंदोलन की लपटों को भड़का दिया। सत्याग्रही पाकिस्तान के हर भाग में फैल गए। कुछ ही दिनों के बाद अकेले लाहौर में 2000 से अधिक गिरफ्तारियां हुईं।

व्यापारी मंडल ने घोषणा कर दी कि उसने पहले से ही 20,000 सत्याग्रहियों की भरती कर ली है। अमृतसर के एक लखपति व्यापारी बाबा गुरमुख सिंह ने सार्वजनिक रूप से यह घोषित कर दिया कि व्यापार के निरंतर बंद रहने के कारण जिस व्यापारी पर बुरा प्रभाव पड़ा हो वह अपने कर्मचारियों के वेतन तथा अन्य प्रशासनिक व्यय की राशियां उनसे ले लें। हड़ताली दुकानदारों से दुकानों का भाड़ा वसूल न करने के मामले में मकान-मालिकों के बीच होड़ लग गयी। अनेक नगरों में नि:शुल्क रसोड़े (जिन्हें पाकिस्तान में लंगर कहा जाता है) खोल दिए गए। ऐसी संभावनाएं दिखाई पड़ने लगीं कि सर छोटूराम का चमत्कार एक भीषण दु:स्वप्न बन जाएगा।

VII

एक सरकारी अधिकारी ने विद्रोह के परिणामों का विश्लेषण करते हुए ठीक ही कहा कि "लालाओं के दुष्टतापूर्ण षड्यंत्रों से जेलों में बंदियों के जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।" उन्होंने जेलों में अंधाधुंध सत्याग्रही बंद कर दिए। जेलों के भीतर भारी संख्या में तंबू लगाए गए। मुझे यह कहना होगा कि एक बार के लिए तो सरकार ने साहस का परिचय दिया। उसने सत्याग्रही व्यापारियों तथा उनके साथियों को जेलों में सबसे निचली 'सी' श्रेणी में रखा। इसका एक दिलचस्प पक्ष यह है कि जेलों में बंद व्यापारियों में ऐसे लोग भी थे जो प्रतिवर्ष हजारों रुपए आयकर के रूप में चुकाते थे। एक व्यापारी प्रतिवर्ष 18,000 रु. आयकर तथा सुपर टैक्स के रूप में चुकाता था। उनमें से अनेक ने युद्ध कोष में भारी राशियां दी थीं, परंतु पाकिस्तान सरकार लोगों का सम्मान करना नहीं जानती। कारागार में बंदियों की संख्या में भारी वृद्धि हो गयी तथा पहले से ही कार्यभार से लदे जेल अधिकारियों को और अधिक कठोर परिश्रम करना पड़ा।

व्यापारियों के अनेक नेता भारत सुरक्षा नियमों के अंतर्गत गिरफ्तार कर लिये गए तथा नियति का कुछ ऐसा विधान कि उन्हें हमारे चौक—बमघर में रखा गया। उन्हें अनिश्चितकाल तक नजरबंद रखा जाना था। अन्य लोग 'सी' श्रेणी में रखे गए थे, उन पर मुकदमे चलाए जा रहे थे। उन सबको एक साथ कारखाने में रखा गया था। बंदियों में बाबा गुरमुख सिंह भी थे जिन्होंने हड़ताल को जारी रखने की दृष्टि से बड़े पैमाने पर आर्थिक सहायता देने का प्रस्ताव प्रस्तुत करके अच्छी-खासी सनसनी उत्पन्न कर दी थी। 'भल्ला जूता आपका स्वागत करता है' वाले लाला धनीराम भल्ला थे, समृद्ध और वयोवृद्ध सरदार जगत सिंह क्वात्रा थे जिन्हें हथकड़ी लगाकर जेल लाया गया था तथा जो अपनी दुग्ध-धवल लंबी दाढ़ी में भव्य लग रहे थे। जनाब मोहम्मद दीन और रशाद हुसैन, बेलीशाह और कैलाश चंद्र भार्गव थे। कवि अनंतराम वहाशे थे जिनकी दित्तियां हम आनंद ले लेकर सुनते थे, जापान होकर आए लखपति लाला रामचंद्र थे। वे अकेले ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें लाहौर किले में भेज दिया गया था। हमारे चौक के बाहर तथा परे आंदोलन के कुछ अन्य नेता थे जिनमें से लाला द्वारका दास, लाला कृपाराम, लाला कुंदन लाल लांबा, गुलाम हैदर बट्टा पाकिस्तान के औद्योगिक दिग्गजों में से ये कुछ महत्वपूर्ण लोग थे।

उनके साथ बाबा ग़नी आए। उन्होंने पाकिस्तान की जेलों में रेकार्ड स्थापित किया था—यह उनकी 25वीं जेल यात्रा थी। यह कहना सरल नहीं होगा कि उन्हें क्यों लाया गया, क्योंकि उन्हें किसी भी प्रकार से व्यापारी नहीं कहा जा सकता, न वे ऐसे लोगों में से थे जो बिक्रीकर जैसे विषय पर झंझट मोल लें। परंतु जहां कहीं संघर्ष छिड़ जाता है वे वहीं पहुंच जाते हैं। वे उस वर्ग में आते हैं जिनका मत है कि महत्व संघर्ष का है पुरस्कार का नहीं।

हम सब बाबा ग़नी को उनकी जेल-यात्राओं की रजत-जयंती पर बधाई दे रहे थे कि किसी ने कहा, "बाबा ग़नी, अब आप नेता हो गए।"

वे झट से बोले, "मैं और नेता ! यह व्यर्थ की बात है। नेता होने के लिए तीन वस्तुओं की आवश्यकता होती है। मेरे पास उनमें से एक भी नहीं है।"

फिर किसी ने पूछा, "तीन वस्तुएं ? क्या हैं वे ?"

"तीन बकार।"

"तीन बकार ? आप पहेली बुझा रहे हैं। क्या हैं वे तीन बकार ?"

बाबा ने उत्तर दिया, "बहुत स्पष्ट है, तीन बकार हैं—बंगला, बेगम और बक (अंग्रेजी शब्द बक का अर्थ है पैसा)। नेता होने के लिए तीनों का प्रबंध कर लेना चाहिए।

सभी लोग उनका उत्तर सुनकर मौज में आ गए और तालियां बजाने लगे। बीच में से किसी ने कहा, "शाबाश बाबा ! भगवान आप पर कृपा करे और आपको तीनों बकार प्रदान करे।"

VIII

एक दिन मैं अशोक मेहता की छोटी-सी पुस्तिका 'इंडिया कम्स आफ एज' पढ़ रहा था, जो एक आर्थिक शोध पत्र है तथा जिसमें पी-एच. डी. थीसिस के समस्त तत्व विद्यमान हैं। ऐसे समय मेरे कमरे में लाला धनीराम भल्ला के अतिरिक्त भला और कौन प्रवेश कर सकता था। व्यापारी सत्याग्रहियों में वे मुझे बहुत दिलचस्प प्रतीत हुए। मैं उन्हें पसंद करता था। उनमें वे सब लक्षण विद्यमान थे जो अपने पुरुषार्थ के बल पर धनी बनने वाले किसी भी व्यक्ति में होते हैं, तथा जिसे धन की सामर्थ्य और चमक-दमक भ्रष्ट नहीं कर पाती। उन्होंने अपनी मूलभूत सादगी तथा मित्र-भावना काफी मात्रा में बनाए रखी थी।

उन्होंने अशोक की छोटी पुस्तिका मेरे हाथों से ले ली, और मैंने उन्हें बताया कि वह भारतीय उद्योगों में पूंजी के केंद्रीकरण का एक संक्षिप्त एवं बुद्धिग्राही विश्लेषण है। मैं इस विषय में पाकिस्तान की स्थिति जानने को उत्सुक तो था ही, मैंने काफी देर तक भल्ला जी से प्रश्न और पूरक प्रश्न किए। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि मैं जो कुछ खोज रहा था उसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण उनका अपना परिवार था। पाकिस्तान में भल्ला परिवार के वित्तीय विस्तार का एक संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

धनीराम भल्ला :	प्रबंध-निदेशक, भल्ला शू कंपनी (900 एजेंसियां, उत्पादन एक लाख जोड़े प्रतिदिन, पूरे उत्पादन की युद्ध कार्य के लिए सरकार द्वारा खरीद) संस्थापक-निदेशक, ट्रेडर्स बैंक; निदेशक, बजवाड़ा बैंक
योधराज भल्ला :	सचिव, पंजाब नेशनल बैंक
बलराज भल्ला :	प्रबंध निदेशक, सिटी बैंक
शिवराज भल्ला :	प्रबंध निदेशक, ट्रेडर्स बैंक
जगराज भल्ला :	प्रबंध निदेशक, पंजाब कोआपरेटिव बैंक
जसराज भल्ला :	प्रबंध निदेशक, बारी दोआब बैंक
हरकिशन लाल भल्ला :	निदेशक, ट्रेडर्स बैंक

(यह सूची संपूर्ण नहीं है, केवल उदाहरण प्रस्तुत करती है। अन्य निदेशकीय संदर्भों को जानबूझकर छोड़ दिया गया है। इस प्रकार यह कुछ ऐसी सामग्री है जिसका प्रयोग अशोक मेहता अपनी पुस्तिका के अगले संस्करण में कर सकते हैं।

IX

एक शाम हमने सुना कि शोरिश कश्मीरी को मौटगुमरी जेल से लाहौर स्थानांतरित कर दिया गया है। यह सोचकर कि वे जेल में मेरे साथी हो सकते हैं मेरा मन अनायास उत्तेजित हो उठा क्योंकि शोरिश की अच्छी ख्याति थी। वे अखिल भारतीय मजलिसे अहरार के महासचिव थे। उनके बारे में कहा जाता था कि मौलाना अताउल्लाह शाह बुखारी और मुंशी अहमद दीन की भांति वे पाकिस्तान के एक अग्रणी वक्ता, कवि और संभावनाओं से परिपूर्ण लेखक थे। यह स्पष्ट है कि पाकिस्तान सरकार उनकी भाषण शैली की प्रशंसक न थी क्योंकि उन्हें बार बार जेल जाना पड़ा था। और इस समय वे पांच वर्ष के कठोर कारावास का दंड भोग रहे थे जिसमें से वे लगभग तीन वर्ष जेल में बिता चुके थे। उनके स्वास्थ्य पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ा था।

रात में लगभग 9 बजे हमारे चौंक में एक बहुत लंबे और दुबले-पतले युवक ने प्रवेश किया जिसके चेहरे पर दाढ़ी न थी और जो एकदम लड़का-सा लगता था। उसने अभी बीसी भी पार न की होगी।

शोरिश इस प्रकार का व्यक्ति है, जो यह मानता है कि ख्यातिपूर्ण जीवन का सघन एक घंटे का समय अनाम जीवन के एक युग की अपेक्षा कहीं अधिक श्रेष्ठ होता है। वह प्राय: मन की तरंग से कार्य करता है, पुनर्विचार के आधार पर बहुत कम। वह एक कवि की भांति उत्साही, निष्ठावान, अत्यंत संवेदनशील और बातूनी है। वह मन:स्थिति के अनुसार कार्य करता है। वह अपनी पसंद और नापसंद के प्रति आग्रहशील है तथा उसकी स्मृति आश्चर्यजनक है। किसी ने मुझसे कहा था कि उर्दू की जो काव्यकृतियां शोरिश को कंठस्थ न हों उनके बारे में समझना चाहिए कि वे निरर्थक हैं। उनके आने से वातावरण उद्दीप्त हो उठा।

शोरिश प्राय: अपने अन्य अहरार मित्रों की चर्चा किया करता था। उनमें मौलाना हबीबुर्रहमान अपने जीवन के आठवें दशक में हैं, निरंतर जेल और 'सी' श्रेणी के कारण उनका स्वास्थ्य पूरी तरह चौपट हो गया है, परंतु उनका हृदय शेर जैसा है। वह मौलाना अताउल्लाह शाह बुखारी और उनके असंख्य वक्ताओं के बारे में चर्चा किया करता था। मौलाना रात को 10 बजे भाषण आरंभ करते और सवेरे 2-3 बजे तक बोलते जाते थे तथा उनके श्रोता पूरे समय सम्मोहित से बैठे रहते, मौलाना अजहर अली अजहर के बारे में, जो हजारों कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करते, अनेक मोर्चों पर एक साथ संघर्ष करते, लिखते, बोलते, डांटते तथा संगठन को आगे बढ़ाने के लिए तनाव झेलते; अन्य अनेक साथियों के बारे में भी; परंतु जब वे चौधरी अफजल हक के बारे में चर्चा करते तो सबसे अधिक भावनापूर्ण ढंग से। उनकी मृत्यु से अहरार आंदोलन को बहुत भारी धक्का लगा।

थोड़े समय के लिए हमारे चौक में एक अन्य प्रसन्न-वदन योद्धा तथा आश्चर्यजनक साहस और बलिदान के धनी मौलाना मुहम्मद हुसैन आ गए थे। विविध देशों, विशेषतया निकट और मध्य पूर्व के इस्लामी देशों के राजनीतिक और सामाजिक विकास से परिचित मौलाना मुहम्मद हुसैन के स्मृति कोष में ज्ञानवर्द्धक चुटकुलों का विशाल भंडार था। वे अपने साथ जो पुस्तकें लाए थे उनमें से कई उनके मित्र सैयद अब्दुल अला मौदूदी की कृतियां थीं, जो इंद्रधनुष के सभी रंगों में चित्रित उस नवीनतम तथा अधिक आकर्षक धर्मशास्त्र के प्रधान पुरोहित थे जो आस्थावानों को पुनर्जीवन प्राप्त इस्लाम में लौट आने का संदेश देते थे। मुहम्मद हुसैन अपनी भिन्न राजनीतिक आस्थाओं के बावजूद मित्र मंडली जुटाने वाले व्यक्ति थे।

इतना ही नहीं उन्होंने अपने पारिवारिक हितों की सर्वथा उपेक्षा करके अपनी संपूर्ण संपत्ति सार्वजनिक गतिविधियों पर फूंक डाली थी। उन्हें फिर से गिरफ्तार करके जैसे ही लाहौर लाया गया वैसे ही उन्हें यह बताया गया कि उनकी बेटी गंभीर रूप से अस्वस्थ है तथा उसका एक बड़ा ऑपरेशन होगा जिसके परिणाम कुछ भी हो सकते हैं। पिता की ममता, दयनीय चिंता और घोर लाचारी ने उनका हृदय विदीर्ण कर डाला परंतु उन्होंने अपना धैर्य बनाए रखा जिसके कारण वे सब लोगों के प्रशंसा-पात्र बने।

उनके अतिरिक्त सहरगुल खान थे। वे एक तेजस्वी पठान थे। उनकी मूंछें भयंकर दिखाई पड़ती थीं परंतु उनका हृदय बालवत था, उनमें हास्य-विनोद की पैनी समझ तथा ग्रामीणों जैसी 'दूरदर्शिता' थी, जो किसी भी प्रकार की शहरी औपचारिकता का डटकर सामना कर सकती थी। यद्यपि वे एक उत्कट समाजवादी थे तथापि वे अपने किसी सहकर्मी को पुस्तकों का अनुशीलन करते देख लेते तो उसका मजाक उड़ाते । वे किताबी कीड़ा बनने के विरुद्ध प्रायः प्रत्यक्ष कार्यवाही की धमकी दिया करते थे। जेल का जीवन लोगों की शरीर-रचना के साथ किस प्रकार खिलवाड़ करता है इसका वे जीता-जागता उदाहरण थे। जयप्रकाश द्वारा आरंभ की गयी देवली नजरबंदी शिविर की प्रसिद्ध भूख-हड़ताल में वे भी सम्मिलित हुए थे तथा उसकी विजय का मूल्य जीवनभर चुकाते रहे। उन्हें ऐसे भीषण दौरे पड़ते कि हम एक दर्जन लोग भी उन्हें संभाल नहीं पाते थे। ओह राजनीति ! संतों ने तुझमें जो आकर्षण देखे आखिर वे हैं कहां ?

X

इस बीच व्यापारियों का सत्याग्रह दृढ़ संकल्प के साथ चलाया जा रहा था तथा मुख्यमंत्री के सभी लोग और सभी हथकंडे उसे लीलने में असमर्थ रहे थे। स्थिति निरंतर बिगड़ती गयी तथा उस समय तो संकट चरम शिखर पर जा पहुंचा जब

सैकड़ों स्त्रियां जुलूस बनाकर सड़कों पर निकल आईं। पुलिस लाठी-प्रहार करती तथा प्रतिदिन अनेक गिरफ्तारियां होतीं।

पत्रकार भी अधीर हो उठे तथा सरकार ने तीन पत्रकारों—दैनिक प्रताप के वीरेंद्र, पाकिस्तान ट्रिब्यून के ए. सी. बार्ली तथा एसोसिएटेड प्रेस के हुकुम चंद को नजरबंद कर दिया। अधिकारियों को एक संकटपूर्ण स्थिति का सामना करना पड़ रहा था। वे नितांत असहाय थे। ये पत्रकार यों तो भले और भद्र लोग थे, तथापि उन्होंने ऐसे अभद्र कार्य किए थे जिन्हें कभी क्षमा नहीं किया जा सकता। भला बताइए कि प्रतिष्ठित पत्रकारों का लाठी-प्रहार के समाचारों की खोजबीन से क्या लेना-देना था ? क्या इसके बजाय वे किसी सम्माननीय मंत्री द्वारा बुलाए गए पत्रकार-सम्मेलन अथवा प्रशासन के नेता की चाय-पार्टी में जाकर वहां से सारे तथ्य (नाश्ते की सामग्री के अतिरिक्त) इकट्ठे नहीं कर सकते थे ? इन तीन प्रसिद्ध पत्रकारों का व्यवहार पत्रकारिता-सदाचार का खुला उल्लंघन था।

इस पर भी जब उनके गिरफ्तारी का समाचार प्रकाशित हुआ तो पाकिस्तान के पत्रकारों ने ऐसा तूफान मचाया मानो आकाश फट गया हो। अपने क्रांतिकारी दृष्टिकोण तथा सुसंपादन के लिए प्रसिद्ध दैनिक समाचार पत्र 'सिविल एंड मिलिटरी गजट' (सभ्य कम सैनिक अधिक) के कार्यालय में एक सभा की गयी। उसका क्या परिणाम निकला ? एक अत्यंत लोकतंत्रात्मक सरकार ने जो लोकमत के प्रत्येक उतार-चढ़ाव के प्रति पूरी तरह अनुक्रियाशील है, इस सर्वथा अनुचित आंदोलन के समक्ष घुटने टेक दिए। तीनों अपराधी पत्रकारों को तो रिहा कर ही दिया गया, संबंधित मंत्री ने संसद में खेद भी प्रकट किया। ऐसी घटनाएं उस प्रेस की बुद्धिमत्ता तथा समाचार पत्र संपादक-सम्मेलन की अचूकता पर से विश्वास डिगा देती है, जिसे साम्राज्य की चौथी जागीर कहा जाता है।

XI

लाहौर जेल में मुझे पहले दिन ही पता लग गया था कि एक प्रमुख खाकसार नेता इसी जेल में है। मैंने उससे मिलने में देर नहीं लगाई। मेरे मन पर खाकसार का पूरा चित्र उभर आया था—6 फुट लंबा, आग उगलती आंखें, चुनौती देती दाढ़ी, कड़कती आवाज। कल्पना कीजिए कि जब मेरा सामना एक दाढ़ी-रहित अपेक्षाकृत शर्मीले और नाजुक बदन वाले युवक से हुआ जो मुझसे सम्मोहक नम्रतापूर्वक मिला तब मुझे कितना आश्चर्य हुआ होगा। मैंने अपने आश्चर्य को इस प्रकार नियंत्रित रखा कि मुझसे किसी प्रकार की भूल न होने पाए।

खाकसार नेता का नाम बशीर अहमद सिद्दीक था। वे पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत के निवासी थे और खाकसार-नेतृत्व में उनका स्थान बहुत ऊंचा था। वे एक

निष्ठावान धर्मपरायण, शांत तथा अत्यंत साहसी पुरुष थे। हमें वे ऐसे लगते थे मानो कोई भेड़ किसी भेड़िए की खाल में घुस जाए। खाकसार आंदोलन ने प्रारंभ में जितनी महान सफलता प्राप्त की उसका श्रेय असंख्य डींग हांकने वालों तथा उनकी गाली-गलौज युक्त गर्जना को नहीं वरन बशीर सरीखे लोगों को दिया जाना चाहिए जो उसे स्वेच्छापूर्वक अपना श्रेष्ठतम दाय प्रदान करते हैं तथा जिन्हें भीषण तनाव के क्षणों में भी अपनी मूलगामी मानवता की विस्मृति नहीं होती।

कुछ सप्ताह पश्चात हमारे चौक में एक अन्य खाकसार नेता खान खुशाल खान को लाया गया। वे एक सांसारिक, बुद्धिमान और चतुर तथा अवसर के अनुरूप घूंसा जमाने अथवा मुस्कान फेंकने वाले व्यक्ति थे। वे अपने मत के प्रति आग्रहशील तथा दिलचस्प कोटि (किस्म) के आदमी थे।

हमारे साथ तीन सिख सैनिक थे जिन्हें हांगकांग में गिरफ्तार करके नजरबंदी के लिए इतनी दूर लाहौर लाया गया था। जिस समय हांगकांग और सिंगापुर के पतन का समाचार आया उस समय उनके चेहरों पर अद्‌भुत आश्चर्यभाव उभर आया था, और उनके मुंह से सहसा निकल पड़ा था—ऐसे अभेद्य दुर्गों का इतना शीघ्र और इतनी सुगमता से कैसे पतन हो गया ! कभी कभी सत्य कल्पना से भी अधिक अद्‌भुत होता है।

यहां दो अन्य आतंकवादी हैं, जिनमें से प्रत्येक को चार वर्ष के कारावास का दंड मिला है। उनमें से एक श्रमिक-संघवादी है जिसे युद्ध-प्रयास में बाधा पहुंचाने के आरोप में यहां लाया गया था, यद्यपि उसने बताया कि वह युद्ध प्रयास में सहायता पहुंचाना चाहता था। इनमें ओमप्रकाश गुजरान वाला जिला कांग्रेस समिति के उत्साही सचिव तथा सरदार सज्जनसिंह एक प्रमुख कार्यकर्ता एवं नागरिक-स्वतंत्रताओं के परिश्रमी योद्धा थे, अतः वे किसी भी देश की पुलिस के चहेते नहीं बन सकते थे।

जेल में जीवन के कैसे बहुरूपी परिदृश्य का प्रतिनिधित्व होता है ! मेरे संगी-सहचरों में राजनीति के दो प्रतिकूल ध्रुवों के समान अहरार और खाकसार थे। उनके अतिरिक्त कांग्रेस-नेता, कृषक-कार्यकर्ता, लखपति व्यापारी-राजकुमार, दमड़ी-विहीन श्रमिक-संगठक, उद्यमी आतंकवादी, विद्वान मौलाना, प्रख्यात पत्रकार, कवि, लेखक, संसद सदस्य। परस्पर विरोधी मत-मतांतर की कैसी दिलचस्प खिचड़ी थी यह ! इस पाकिस्तान जेल में लोगों का जैसा विलक्षण जमघट हुआ था वैसा इस विस्तृत विश्व में और कहां मिलेगा ! उन विविध मनुष्यों में केवल दो समानताएं थीं—उनका टूटा हुआ स्वास्थ्य और एक ही चौकन्नी सरकार द्वारा जेल में बंद किया जाना। और, प्रशासन जो हमेशा जनहित को प्राथमिकता देता है, इन उत्पाती लोगों तथा इनकी दुष्टतापूर्ण गतिविधियों पर दृष्टि रखता है तथा प्रथम बार अवसर मिलते ही उनको गिरफ्तार करता, उन पर मुकदमा चलाता और जेल में डाल देता है, अथवा

प्राय: मुकदमा चलाने की झंझट से बचने के लिए गिरफ्तार करने के बाद सीधे ही जेल में डाल देता है क्योंकि उसकी दृष्टि में वे इसी व्यवहार के पात्र हैं।

XII

पाकिस्तान की जेलों में एक रहस्यमय रजिस्टर रखा जाता है, जो काली-सूची कहलाता है। इसका उल्लेख सदा फुसफुसाकर ही करना चाहिए। यद्यपि सबको ज्ञात है कि यह रजिस्टर जेल में है तथापि कोई भी जेल-अधिकारी उसके अस्तित्व को स्वीकार करने का स्वप्न भी नहीं देख पाता। इसके अत्यंत गोपनीय पृष्ठों पर उन सब खतरनाक तथा भयंकर व्यक्तियों के नाम लिखे रहते हैं जिन्हें जेल में किसी भी राजनीतिज्ञ से भेंट करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। यह सूची जितनी व्यापक है उतनी ही विस्तृत भी है। इसमें प्रत्येक राजनीतिक विचारधारा के प्रमुख राजनीतिक कार्यकर्ताओं के नाम हैं—मुस्लिम लीग के नेता मलिक बरकत अली का नाम भी नहीं छूटा है। इसमें प्रत्येक जाति और धर्म का निष्पक्ष प्रतिनिधित्व है। यही स्थिति प्राय: प्रत्येक उद्योग और व्यवसाय की है। बंदियों में एक जीवनलाल कपूर है जो एक प्रमुख वकील तथा राजनीतिक पीड़ितों के नि:शुल्क मित्र हैं। उनका नाम भी उस सूची में है।

वास्तविकता यह है कि पाकिस्तान में अपना नाम काली-सूची में लिखवाने के लिए लोगों में भारी होड़ लगी हुई है, क्योंकि इसे किसी भी व्यक्ति की राजनीतिक-प्रभावशीलता के प्रति सरकारी मान्यता का प्रमाण मान लिया गया है। इसके अतिरिक्त लोकतंत्र के इस काल में जब कांग्रेस सरीखे कुछ संगठनों की विद्रोही गतिविधियों के कारण सरकारी सम्मान तथा उपाधियां स्वीकार करना सदा विवेक-सम्मत नहीं होता, किसी व्यक्ति को हाथ उठाकर वह कहने से मानसिक संतोष तो मिल ही सकता है कि उसका नाम सरकार की काली-सूची में है।

यह सूची कैसे बनाई जाती है ? मुझे विश्वसनीय ढंग से बताया गया कि यह सूची निम्न रीति से तैयार की जाती है—गुप्तचर विभाग का कोई भी अधिकारी (टेलीफोन डायरेक्टरी इत्यादि स्रोतों से) अकारण ही कई सौ ऐसे नाम छांट लेता है, जो उसे पढ़ने में कुटिल लगते हों। उसके बाद उन नामों को एक विशाल टोकरी में डालकर भली-भांति मिला लिया जाता है तथा अंत में प्राय: एक सेवा-निवृत्त न्यायाधीश की आंखों पर पट्टी बांधकर उससे पर्चियां निकलवाई जाती हैं। वह प्रतिष्ठित अधिकारी कितनी पर्चियां निकालेगा, यह इसी कार्य के लिए विशेष रूप से आमंत्रित मंत्रिपरिषद् की विशेष सभा में तय किया जाता है। मंत्रिपरिषद् का निर्णय राजनीतिक मांग और आपूर्ति के सुविख्यात नियम के आधार पर किया जाता है।

किसी व्यक्ति को यह जानने के लिए कि उसका नाम काली-सूची में है या नहीं निकटतम जेल के अधीक्षक से यह प्रार्थना करनी होती है कि वह अमुक राजनीतिक बंदी से मिलना चाहता है। यदि उसकी प्रार्थना ठुकरा दी जाए तो उसे यह ज्ञात हो जाएगा कि भाग्य उसके कितना अनुकूल है—अर्थात उसका नाम काली-सूची में है।

XIII

हमारे चौक में एक अच्छा रेडियो सेट हमें जेल में प्राप्त सुविधाओं में सबसे अधिक महत्वपूर्ण था। वह पाकिस्तान ट्रिब्यून के न्यासियों (ट्रस्टियों) की ओर से प्राप्त उपहार था। ऐसा उपहार न तो इससे पहले इतनी आत्मीयतापूर्वक भेंट किया गया था, न इतने उल्लासपूर्वक ग्रहण किया गया था। हमें केवल यह अनुमति थी कि हम उस पर पाकिस्तान तथा विविध हिंदुस्तानी स्टेशनों एवं बी. बी. सी. के कार्यक्रम ही सुन सकते हैं, तथापि हम इसके लिए बहुत आभारी थे। प्रतिदिन परिचित स्वर में यह परिचित घोषणा सुनना कि 'यह आल इंडिया रेडियो है' अथवा 'यह बी. बी. सी. लंदन है' मन को उल्लासित कर देता था। इसके लिए पाकिस्तान सरकार तथा विशेषतया जेल विभाग के मंत्री सर मनोहरलाल बधाई के पात्र हैं।

XIV

पाकिस्तान के विधि-जगत में अचानक एक नयी उत्तेजना फैल गयी। न्यायिक बाज़ भयंकर रूप से पंख फड़फड़ाने लगे थे। सदैव विकल आत्मा के. एल. गाबा विवाद का कारण बन गए थे।

गाबा ऐसे व्यक्तियों में से हैं जिन्हें अमेरिका में कीचड़ उछालने वाला कहा जाता है। कुछ वर्ष पूर्व उन्होंने एक पुस्तक लिखी थी जिसका उद्देश्य यह सिद्ध करना था कि अमेरिका वास्तव में भीतर से खोखला है। इसका कारण एक कुलीन घराने की अमेरिकी महिला कैथरीन मेयो की 'मदर इंडिया' नामक पुस्तक थी। इसके बाद उन्होंने एक अन्य पुस्तक भारत के देशी-नरेशों के विषय में यह सिद्ध करने के लिए लिखी थी कि वे जनता की कल्पना के अनुरूप ऊंचे लोग न थे। इस सबसे क्या लाभ निकलेगा ? इस मूर्तिभंजनकारी युग में महाराजाओं के तिलस्म को क्यों भंग किया जाए ? इससे किसको लाभ मिलेगा ? परंतु ये सब बातें दुर्दमनीय गाबा को कौन समझाता ?

गाबा की ऊर्जा असीम प्रतीत होती है। उन्होंने एक अन्य पुस्तक लिख डाली जिसका उलझन में डालने वाला नाम था, 'दा न्यू मैग्ना कार्टा' (नवीन जनाधिकार-घोषणापत्र)। इस पुस्तक को पाकिस्तान हाई कोर्ट तथा विशेषतया उसके

मुख्य-न्यायाधीश सर डगलस यंग पर चतुराई पूर्ण आक्रमण माना गया।

परंतु इस बार उन्होंने दृढ़ता से काम लिया। न्यायाधीश अमेरिका अथवा महाराजाओं की भांति अपने अपमान को चुपचाप सहने वाले न थे। न्यायालय की मानहानि के आरोप पर गाबा को गिरफ्तार कर लिया गया। गाबा बैरिस्टर ठहरे, उन्होंने अपना बचाव स्वयं किया। उन्होंने तर्क दिया कि पुस्तक बिक्री के लिए नहीं वरन निजी तौर पर बांटने के लिए थी। इस तर्क का न्यायाधीशों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उन्होंने न्यायालय से प्रार्थना की कि उन पर पुस्तक की सामग्री तथा उसमें दिए गए उन वक्तव्यों के आधार पर मुकदमा चलाया जाए जो अवैध समझे गए हों, न्यायालय की मानहानि के आरोप पर नहीं। न्यायाधीशों ने इस प्रार्थना को भी अस्वीकार कर दिया। उनकी यह दलील भी ठुकरा दी गयी कि पुस्तक में जिन न्यायाधीशों पर आरोप लगाए गए थे उन्हें उनके मुकदमे की सुनवाई नहीं करनी चाहिए। स्थापित परंपरा के अनुसार गाबा को छह महीने के कारावास का दंड सुनाया गया। उन्हें लाहौर जेल लाया गया किंतु हमारे पास नहीं रखा गया। यह सावधानी उचित ही थी क्योंकि पूर्व में वे पाकिस्तान उड्डयन क्लब के अध्यक्ष रह चुके थे।

XV

एक दिन सवेरे सवेरे हमें पता चला कि चर्चाओं के पश्चात व्यापारियों का सत्याग्रह वापस ले लिया गया। तत्काल ही सैकड़ों बंदियों की रिहाई के आदेश जारी कर दिए गए। किसी को कुछ पता न था कि वास्तव में समझौता किन शर्तों पर हुआ है। पिछले कुछ दिनों से राजा नरेंद्र नाथ, पंडित नेकीराम शर्मा तथा अन्य प्रभावशाली नेता सरकार और व्यापारी मंडल के बीच की खाई पाटने की कोशिश कर रहे थे, परंतु एक के बाद एक गतिरोध उत्पन्न होता रहा था। सत्याग्रह वापस लेने का निर्णय अचानक लिया गया। बाद में ज्ञात हुआ कि सरकार ने अपनी ओर से कुछ छूट देने का प्रस्ताव तो रखा था परंतु उसने व्यापारी मंडल की मांग के अनुरूप कोई निश्चित वादा नहीं किया था। इसके कारण व्यापारियों के मन में अपने नेताओं के प्रति भीषण रोष उत्पन्न हो गया। उन्हें लगा कि उनके नेताओं ने उनके साथ विश्वासघात किया तथा हड़ताल तोड़ने के लिए उस समय बाध्य किया जब वह अपने चरम पर जा पहुंची थी। व्यापारियों के कई वर्गों ने व्यापार शुरू करने से इनकार कर दिया जिससे वातावरण में कटुता व्याप्त थी, परंतु आंदोलन की एकता में एक बार दरार पड़ चुकी थी और अब आगे कुछ नहीं किया जा सकता था। बंदी बनाए गए कुछ नेताओं को अपने अनुयायियों के समान ही समझौते के बारे में कुछ ज्ञान न था। सत्याग्रह को वापस लेने वाले नेता कौन थे ? कोई थे भी या नहीं ? यदि थे तो वे स्वयं को गुप्त रखने में सफल रहे। अंततः हमारे युग

के एक अत्यंत असामान्य सामाजिक प्रयोग का अंत हो गया और यह अंत उस प्रयोग का एक अद्‌भुत अपकर्ष था।

XVI

मुझे समाचार मिला कि मेरी सजा घटाकर उतनी कर दी गयी है जितनी कि मैं भोग चुका हूँ। मुझे कहा गया कि मैं एक घंटे और यदि संभव हो तो आधा घंटे के भीतर तैयार हो जाऊं। उस छोटे-से चौक के वासी जब मुझे विदा देने के लिए एकत्र हुए तो मेरा चित्त भीषण कचोट रहा था। उनके संग सुखपूर्वक बिताए गए समय के बारे में सोचकर मेरे मन में भावनाओं का ज्वार उमड़ आया। वह एक ऐसा संग था जो कुछ समय पहले तक नितांत नया और अपरिचित-सा लगता था और अब केवल परिचित ही नहीं पुरातन भी लग रहा था। अपने अन्य मित्रों को जेल की दीवारों के उस ओर छोड़कर मैं शीघ्र ही जेल से बाहर आ गया।

7. जागरूक विधायक

कार्यपालिका द्वारा विधायी सत्ता का नामांकन किए जाने पर स्वतंत्र संविधान का सिद्धांत इस सीमा तक नष्ट हो जाता है कि उसे उबारा ही नहीं जा सकता। ***—एडवर्ड गिबन***

युसुफ़ मेहरअली ने बंबई नगर (दक्षिण) निर्वाचन क्षेत्र से चुने जाने पर 31 मार्च, 1949 को बंबई विधानसभा के सदस्य के रूप में शपथ ग्रहण की। वे 2 जुलाई, 1950 को अपनी मृत्यु के समय तक विधायक रहे। अपने संसदीय जीवन की इस छोटी-सी अवधि में उन्होंने अपने विलक्षण बुद्धि-कौशल, हास्य, व्यंग्य तथा अपनी विद्वत्ता और दरिद्र एवं दलित लोगों के प्रति गहन चिंता के द्वारा राज्य विधानसभा पर एक गहरी छाप छोड़ी। उन्होंने विधानसभा के मंच का उपयोग अपने संसदीय जीवन की किसी विद्वत्तापूर्ण उपलब्धि के लिए नहीं वरन उन मूक लोगों की पीड़ा को स्वर प्रदान करने के लिए किया जो मौन रहकर पीड़ा सहते एवं अनाम रहकर नष्ट हो जाते हैं। उन्होंने जनसाधारण की भूख और उसके रोष को, संसदीय संस्था की गरिमा एवं शालीनता को तनिक भी चोट पहुंचाए बिना विधानसभा में प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया। युसुफ़ मेहरअली ने बंबई विधानसभा पर जो अमिट छाप डाली थी वह उनके दिवंगत हो जाने पर उनकी स्मृति बन गयी। मेहरअली ने विधानसभा में जिन विषयों को छुआ उन्हें उन्होंने एक नयी तेजस्विता प्रदान की। उनका विश्लेषण सदा तर्कसंगत होता था, तथा वे अपनी तीखी चुटकियों से चर्चाओं में प्राण फूंक देते थे।

4 अप्रैल, 1949 को 'कर्नाटक विश्वविद्यालय विधेयक' को अपना संपूर्ण समर्थन प्रदान करते हुए युसुफ़ मेहरअली ने कर्नाटक के अतीतकालीन गौरव का उल्लेख किया, "कर्नाटक हमारे मन में ढेर सारी रोमांचक स्मृतियां जगा देता है। उसके महान अतीत की स्मृतियां—हलेबिड तथा बेलूर की भव्यता एवं विजयनगर तथा बीजापुर की महत्ता उसकी धुंधलाई हुई महिमा के कतिपय परिदृश्यों का स्मरण कराती है।" मुख्यमंत्री श्री बालगोविंद खेर ने विधानसभा को आश्वासन दिया था कि कर्नाटक विश्वविद्यालय 1950 में स्थापित हो जाएगा। युसुफ़ मेहरअली ने इस

आश्वासन का उल्लेख करते हुए हंसी के बीच कहा, "यदि विश्वविद्यालय 1950 में अस्तित्व में नहीं आ पाया तो उन्हें उसके प्रतिवाद के रूप में मुझसे एक भाषण को एवं मुझे विश्वास है कि इस सदन के अन्य सम्माननीय सदस्यों की ओर से भी, तैयारी रखनी चाहिए।" शिक्षा पर बोलते समय वे कर्नाटक की शास्त्रीय संगीत परंपरा की सराहना करना नहीं भूले और उन्होंने सदन से कहा : "मुझे आशा है कि कर्नाटक विश्वविद्यालय भी संगीत का प्रश्न हाथ में लेगा। भारतीय संगीत में कर्नाटक संगीत का स्थान प्रथम पंक्ति में है। जिन लोगों को संगीत का तनिक भी ज्ञान है वे यह स्वीकार करेंगे कि यह कैसा चमत्कारपूर्ण संगीत है।"

सितंबर, 1949 में बंबई विधानसभा 'मेहवस्सी भूस्वामित्व उन्मूलन अधिनियम' पर चर्चा के दौरान मानसिंह जी भासाहेब, युसुफ़ मेहरअली तथा राजस्व मंत्री मोरारजी देसाई के बीच दिलचस्प नोकझोंक हुई जिसकी एक झलक संसदीय कार्यवाही के निम्न अंशों में मिलती है :

सरदार मानसिंह जी भासाहेब : 1955 में समाप्त हो रहे (उससे पहले नहीं) भूस्वामित्व अधिकार को सरकार द्वारा (इसी समय) समाप्त करना किस सीमा तक विधि सम्मत होगा, यह बात संदेहास्पद है।...

...प्रतिधन (मुआवज़े) की जिस राशि अर्थात भू-राजस्व का तीन गुना राशि का सुझाव दिया गया है, बिल्कुल भी विवेक सम्मत प्रतीत नहीं होती।

युसुफ़ मेहरअली : महोदय, मुझसे पूर्व-वक्ता अपने माननीय मित्र की टिप्पणी के विरोध में मैं उनसे केवल यह कहना चाहूंगा कि उन्हें 1955 के बारे में नहीं सोचना चाहिए, वरन यह सरकार पांच वर्ष पूर्व ही उदारतापूर्वक जो प्रतिधन दे रही है उसे स्वीकार कर लेना चाहिए।... वर्तमान सरकार 1955 तक सत्ता में नहीं बनी रहेगी और यदि सत्ता समाजवादियों के हाथों में आ गयी तो न किसी कलेक्टर को प्रतिधन देने का अधिकार रह जाएगा न अपील की सुनवाई के लिए कोई राजस्व अधिकरण ही रहेगा।...यह सर्वविदित है कि माननीय राजस्व मंत्री मेमने की भांति भद्र हैं (हंसी) वे अत्यंत कोमल और मितभाषी हैं (हंसी)। मेरे माननीय मित्र का हित इसी में है कि किसान को उसका समुचित और न्यायसंगत अधिकार देने के लिए दूसरों के आने से पहले उन्हें उनसे जो कुछ मिले उसे वे स्वीकार कर लें।

मोरारजी देसाई : मेरे माननीय मित्र बंबई से (निर्वाचित) श्री मेहरअली ने अभी यह बताया कि यदि वे इस प्रांत में समाजवादी मंत्रिमंडल के निर्माण में सफल रहे तब भविष्य में क्या होने की संभावना है। उन्हें आशा है कि वैसा संभव हो पाएगा, परंतु मेरा विचार है कि इसकी 25 प्रतिशत भी संभावना नहीं है (सुनिए, सुनिए)। वे आशा करते रहे हैं और यदि जनता उन्हें पसंद करती है तो वे सत्ता में आ भी सकते हैं, परंतु जनता को यह समझ लेना चाहिए कि राजस्व अधिकरण तथा न्यायिक न्यायालयों के बारे में मेरे माननीय मित्र सही ढंग से नहीं सोचते।

एक अन्य अवसर पर जब वे 13 सितंबर, 1949 को सूती वस्त्रोद्योग में बेरोजगारी के प्रश्न पर एक स्थगन प्रस्ताव पर विधानसभा में बोल रहे थे तब युसुफ़ मेहरअली ने श्री पोद्दार द्वारा टोके जाने पर एकदम पैना और तीखा प्रत्युत्तर दिया :

रामनाथ ए. पोद्दार : महोदय ! मैं सूचना का प्रश्न उठा रहा हूं। मैं माननीय सदस्य (मेहरअली) से जानना चाहूंगा कि क्या वे इस तथ्य से अवगत हैं कि उद्योगपतियों ने सूती वस्त्रोद्योग के विनियंत्रीकरण का सदा विरोध किया था।

युसुफ़ मेहरअली : महोदय ! मैं अपने पूंजीपति साथी के नौसिखियापन तथा गलत सूचना देने पर चकित हूं।

और इसके पश्चात युसुफ़ मेहरअली ने भाषण जारी रखते हुए वस्त्रोद्योग को चला रहे पूंजीपतियों के दृष्टिकोण के ज्वलंत अंतर्विरोधों का भंडाफोड़ किया।

युसुफ़ मेहरअली ने 'नगर निगम विधेयक' पर बोलते समय अपने उस प्रत्यक्ष ज्ञान के आधार पर चर्चा को गौरव तथा गरिमा प्रदान की, जो उन्होंने 1942 में बंबई के महापौर के नाते अपने अनुभवों से प्राप्त की थी। बंबई नगर निगम को नगर आयुक्त की नियुक्ति की व्यापक शक्तियां प्रदान किए जाने की आवश्यकता पर बल देते हुए मेहरअली ने कहा : "यहां बंबई प्रांत में नगर आयुक्त की नियुक्ति की शक्ति सरकार ने अपने हाथों में सुरक्षित रखी है, परंतु कलकत्ता और कराची दोनों स्थानों पर यह शक्ति नगर निगम में निहित है। जिस समय सर सुरेंद्रनाथ बनर्जी ने स्वायत्त शासन मंत्री के नाते कलकत्ता नगर निगम विधेयक प्रस्तुत किया था, जिसके द्वारा उन्होंने उस निगम को अपने प्रमुख अधिकारी के चयन का अधिकार प्रदान किया, उस समय, अब से चौथाई शताब्दी पूर्व, उसे स्थानीय स्वायत्त शासन के क्षेत्र में उठाया गया एक क्रांतिकारी कदम कहा गया था।"

नगर निगम विधेयक पर हुई चर्चाओं में भाग लेते समय उन्होंने सदन के समक्ष वह बहुमूल्य जानकारी प्रस्तुत की जिसका संग्रह उन्होंने विश्व के विभिन्न भागों में नगरपालिका संचालन विषयक अपने अध्ययन के द्वारा किया था।

मेहरअली ने कतिपय ठोस योजनाओं द्वारा उस प्रकार का 'नगरपालिका-समाजवाद' लागू करने के पक्ष में सशक्त तर्क दिए जैसा कि वियना में दूध आपूर्ति के नगरपालिकाकरण, नगरपालिका बैंकों, नाट्यगृहों, बेकरियों तथा आवासों आदि की स्थापना के द्वारा लागू किया गया था। उन्होंने इन योजनाओं का प्रस्ताव दो दृष्टियों से रखा था—नगर निगम की आय बढ़ाना तथा राज्य सरकार पर उसकी अतिशय निर्भरता को कम करना।

इस चर्चा के दौरान मेहरअली ने शक्तिशाली तर्कों के आधार पर यह प्रस्ताव रखा कि मतदाताओं को उस नगर-पार्षद को वापस बुलाने का अधिकार दिया जाना चाहिए जो अपने निर्वाचन क्षेत्र के हितों की रक्षा और वृद्धि में विफल रहे अथवा

नागरिक मामलों में उसकी विहित आकांक्षाओं का सम्मान करने से इनकार करे।

'औद्योगिक संबंध अधिनियम' के उस प्रक्रिया संबंधी प्रावधान श्रमिकों के बीच गहन असंतोष का विषय रहे हैं जिसके द्वारा यह तय किया जाता है कि किसी उद्योग, यथा—वस्त्रोद्योग, में किस विद्यमान श्रमसंघ को 'प्रतिनिधि श्रमसंघ' के रूप में मान्यता प्रदान की जाए। 1983 में एक वर्ष से अधिक समय तक खिंचने वाली बंबई की वस्त्रोद्योग हड़ताल की जड़ें वस्त्रोद्योग के श्रमिकों पर 'प्रतिनिधि श्रमसंघ' के रूप में थोपे गए उस श्रमसंघ के प्रति उनके गहन असंतोष में निहित थीं जिस पर शासनारूढ़ दल का वर्चस्व था तथा जिसे विशेष अधिकार और सुविधाएं प्रदान की गयी थीं। यह बात ध्यान देने योग्य है कि युसुफ़ मेहरअली के मन में इस असंतोष की पूर्वकल्पना 1949 में ही आ गयी थी और उन्होंने राज्य विधानसभा में कहा था :

"वास्तव में एक विशिष्ट श्रमसंघ के बारे में यह सर्वविदित है कि उसे सरकार तथा पूंजीपतियों का समर्थन प्राप्त है अथवा उसके बारे में वैसी धारणा बन गयी है। ऐसी स्थिति में उस श्रमसंघ के लिए श्रमिकों के बीच जाकर उनमें इस आशा का संचार करना सुगम हो जाता है कि वह श्रेष्ठतम श्रमसंघ होने के कारण नहीं वरन इस कारण काम कराने में सफल हो सकता है कि उसका सरकार तथा मालिकों पर प्रभाव है तथा उसे उनका समर्थन प्राप्त है।"

14 मार्च, 1950 को विवादास्पद 'बंबई नगर निगम सीमा-विस्तार विधेयक' पर अपने विचार प्रकट करते हुए मेहरअली ने नगरपालिका चुनावों के प्रति सरकार की बढ़ती हुई अरुचि तथा बंबई नगर निगम में नामांकित (सरकार द्वारा नियुक्त) सदस्यों पर अधिकाधिक निर्भरता पर भारी चोट की। मेहरअली ने यह समझाते हुए कि कार्यपालिका को विधायी सत्ता के नामांकन का अधिकार नहीं होना चाहिए, अपने सहज विनोदी ढंग से कहा :

"एक प्रसिद्ध लेखक आस्कर वाइल्ड ने एक नया नाटक लिखा जो उसकी ख्याति के बावजूद लोकप्रिय नहीं हो सका। उसे इससे गहरी चोट लगी। एक दिन किसी ने उससे क्लब में पूछा कि नाटक कैसा चल रहा था। उसने उत्तर दिया, 'नाटक तो अत्यधिक सफल है परंतु दर्शक पूर्णतया विफल रहे हैं।' (हंसी)

"मैं यहां ठीक इसी बात पर बल देना चाहता हूं। सरकार के कहने का तात्पर्य यह है कि वह लोकतंत्र चाहती है परंतु चुनावों को स्थगित कर दिया जाए तथा नामांकन अथवा परोक्ष-निर्वाचन द्वारा प्रतिनिधित्व होना चाहिए। उसे नागरिक स्वतंत्रताओं के प्रति पूरा प्रेम है परंतु 'सार्वजनिक सुरक्षा उपाय अधिनियम' रहना ही चाहिए। वह न्यायपालिका की स्वतंत्रता की प्रशंसक है परंतु सरकार को नजरबंदी की शक्ति से लैस किए रखना अनिवार्य है जिससे कि न्यायपालिका उसके बारे में छानबीन न कर सके।"

वाद-विवाद के समय सरकारी पक्ष युसुफ़ मेहरअली के शक्तिशाली तर्कों के सामने पूरी तरह ध्वस्त हो जाता था।

मेहरअली को पढ़ने की धुन थी। इतिहास की अनेक घटनाएं सहज ही उन्हें कंठस्थ थीं। इसके कारण उनकी स्थिति बहुत अच्छी रहती तथा इससे सरकारी पक्ष को भारी परेशानी उठानी पड़ती।

'राज्यपाल के प्रति धन्यवाद के प्रस्ताव' पर चर्चा आरंभ करते हुए युसुफ़ मेहरअली ने चरम व्यंग्य की मनःस्थिति में कहा :

"यह मान लेने पर कि राज्यपाल (नाममात्र के) सांविधानिक शासक हैं" तथा उन्होंने जो विचार व्यक्त किए हैं, वे सरकार के विचार हैं, हम एक ठोस धरातल पर खड़े हो जाते हैं। अतः हम कहेंगे कि राज्यपाल एक 'मजेदार भलेमानुस' हैं। परतु इस नाटिका में सरकार 'खलनायक' है।"

युसुफ़ मेहरअली की इस टिप्पणी पर निम्नलिखित दिलचस्प नोक-झोंक हुई जिसका आनंद समूचे सदन ने लिया :

बाबूभाई जे. पटेल : माननीय अध्यक्ष महोदय ! क्या 'मजेदार भलामानुस' उक्ति संसदीय है ?

माननीय अध्यक्ष : मैं निर्णय नहीं कर पा रहा हूं तथा यह बताने में असमर्थ हूं कि यह उक्ति संसदीय है अथवा नहीं, परंतु मैं यह अवश्य कहूंगा कि प्रशासन के मुखिया को 'मजेदार भलामानुस' कहना उचित नहीं है। यह एक समुचित अभिव्यक्ति नहीं मानी जाएगी।

बी. जी. खेर : यह अभिव्यक्ति संसदीय है या नहीं, यह आपके सोचने का विषय है। माननीय अध्यक्ष महोदय ! मैं सोचता था कि माननीय सदस्य संसदीय व्यवहार के अच्छे अध्येता हैं तथा वे यह जानते होंगे कि सम्राट के भाषण को सदा वही आदर दिया जाता है जो राज्याध्यक्ष का अधिकार है। परंतु अपरिष्कृत अभिरुचि की यह सर्वथा अनुपयुक्त टिप्पणी मेरे लिए एक रहस्योद्घाटन जैसी है। मैं यह नहीं समझ पाता कि वे राज्यपाल पर इस प्रकार की फबती उस समय कैसे कस सकते हैं जब वे··।

युसुफ़ मेहरअली : उन्होंने भाषण के बीच में न टोकने का पाठ भी नहीं सीखा। वे थोड़ी थोड़ी देर में उछल पड़ते हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय ! हमारे माननीय मुख्यमंत्री इतिहास के विद्वान हैं अतः उन्हें ज्ञात होना चाहिए कि महत्वपूर्ण अवसरों पर ब्रिटिश प्रधानमंत्री अथवा किसी अन्य प्रमुख व्यक्ति के भाषण के उपरांत समूची श्रोतामंडली उठ खड़ी होती है तथा समवेत स्वर में गाती है, "वह एक मजेदार भलामानुस है।" यदि माननीय मुख्यमंत्री को यह भी पता नहीं है, तो इसमें मेरी कोई भूल नहीं है।

यह कहना व्यर्थ होगा कि युसुफ़ मेहरअली की इन त्वरित फबतियों से

मुख्यमंत्री तथा अध्यक्ष को काफी परेशानी होती थी। अध्यक्ष ने इस पर केवल इतना कहा, "इंग्लैंड में कुछ भी परंपरा हो उसका अनुकरण यहां नहीं किया जाना चाहिए।" अध्यक्ष की टिप्पणी अंतिम थी तथापि विजय का सेहरा मेहरअली के सिर पर ही बंधा।

युसुफ़ मेहरअली इस तथ्य से भली प्रकार अवगत थे कि जब पुलिस के गोली चलाने से लोग मर जाते हैं तब समाचारपत्रों में प्रकाशित रिपोर्टों से पूरी जानकारी नहीं मिल पाती क्योंकि सरकार बहुधा उसे प्रेस से छिपा लेती है। अतः मेहरअली सरकार से वह जानकारी प्राप्त करने के लिए तारांकित तथा अतारांकित प्रश्नों के उपाय का भरपूर उपयोग करते थे। मेहरअली ने इसी रीति से 13 अगस्त, 1949 को साबरमती जेल में नजरबंद साम्यवादियों पर हुई गोलीबारी का पूरा ब्यौरा खोद निकालने में सफलता प्राप्त की थी। उन दिनों साम्यवादी दल दुस्साहसपूर्ण 'रणदिवे नीति, 1948' का अनुसरण कर रहा था जिसके अंतर्गत जेलों में नजरबंद साम्यवादियों को पुलिस के साथ प्रत्यक्षहिंसक मुठभेड़ के आदेश दिए गए थे। साबरमती जेल में पुलिस के साथ साम्यवादियों की उस सशस्त्र मुठभेड़ का ब्यौरा प्राप्त करने में मेहरअली सफल रहे थे जिसमें दो साम्यवादी—जयंतीलाल पारेख तथा जमनादास मोदी गोली चलने से मारे गए थे।

मेहरअली को खाद्य सामग्री के उत्पादन में वृद्धि की दृष्टि से एक भूमि सेना के संगठन में गहरी रुचि थी। वे विधानसभा में भूमि सेना संबंधी विधेयक प्रस्तुत कर चुके थे। 26 सितंबर, 1950 को जब बंबई विधानसभा ने युसुफ़ मेहरअली को श्रद्धांजलि समर्पित की उस समय मुख्यमंत्री बी. जी. खेर और समाजवादी विधायक पीटर अलवारेस ने भूमिसेना संबंधी उनके प्रस्ताव का विशेष रूप से उल्लेख किया। उस प्रस्ताव के पीछे 'त्रासदी-भाव' की चर्चा करते हुए पीटर अलवारेस ने विधानसभा में कहा था :

"इस सत्र के विचाराधीन विषयों की सूची में सम्मिलित भूमिसेना विषयक मेहरअली के प्रस्ताव के बारे में, जिसका उल्लेख मुख्यमंत्री ने भी किया है, मैं यह कह सकता हूं कि उसके पीछे एक त्रासदी भाव है। वे संबंधित मंत्री की सहमति लेकर उस प्रस्ताव को अन्य प्रस्तावों की अपेक्षा कहीं पहले प्रस्तुत करना चाहते थे। मेरे प्रतिरोध के बावजूद वे प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए अस्वस्थता की स्थिति में ही सदन में पधारे तथा जब उन्हें हृदय का दौरा पड़ा तो मुझे उन्हें उठाकर सदन से ले जाना पड़ा। वे उस दौरे से उबर ही नहीं पाए। भूमिसेना संबंधी प्रस्ताव के पीछे यह इतिहास है।"

युसुफ़ मेहरअली की मृत्यु के पश्चात बंबई विधानसभा में उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलियां अर्पित की गयीं। सबको यह लगा कि मेहरअली का फूलता-फलता जीवन पूर्ण उत्कर्ष पर पहुंचने से पहले ही मुरझाकर झर गया।

मेहरअली ने स्वाधीनता संग्राम, समाजवादी आंदोलन, युवा जागरण, श्रमसंघ गतिविधियों, नागरिक प्रतिरक्षा सहित नागरिक जीवन, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक गतिविधियों इत्यादि क्षेत्रों में जो बहुमूल्य योगदान किया वह 26 सितंबर, 1950 में उस समय विधानसभा अभिलेखों का अंग बन गया जब बंबई विधानसभा के अध्यक्ष, मुख्यमंत्री बी. जी. खेर, पीटर अलवारेस, ए. ए. खान तथा तुलसीदास जाधव ने युसुफ़ मेहरअली की स्मृति को ज्वलंत श्रद्धांजलियां समर्पित कीं। विधानसभा की कार्यवाही के अभिलेख उस अवसर पर मेहरअली के गौरवान्वित नाम से अंतिम बार विभूषित हुए।

8. चिरजीवी संस्मरण

जब तुम अपनी पीली पड़ती स्मृतियों के किसी कोने में मेरे अस्तित्व के किसी अवशेष को देखो, तब संभव है कि मुरझाए फूलों और झड़ती पत्तियों की ऋतु में एकांत विश्रांति के कतिपय क्षण आ जाएं।

—रवींद्रनाथ ठाकुर

महान पुरुषों के जीवन में प्रत्यक्षतया सरल तथापि महत्वपूर्ण घटनाओं और सघन क्षणों के संस्मरण निहित होते हैं, जो उनकी जीवन स्मृतियों को महिमान्वित करते हैं। युसुफ़ मेहरअली का जीवन ऐसा ही एक बहु-महिमान्वित जीवन था।

7 अगस्त, 1942 को मेहरअली से कुछ युवा मिलने आए। उस समय वे बंबई के महापौर थे। युवाओं ने उन्हें टाई-पिन का एक डिजाइन दिखाया जिसमें चांदी में बने भारत के मानचित्र पर क्विट इंडिया (भारत छोड़ो) के प्रतीक रूप में रोमन अक्षर 'क्यू' लाल रंग में मोटा मोटा लिखा गया था। युवाओं द्वारा तैयार किया गया वह डिजाइन देखकर युसुफ़ बहुत प्रसन्न हुए तथा महात्मा गांधी की स्वीकृति के लिए उसे लेकर बंबई के बिड़ला हाउस में उनके पास गए। गांधी जी डिजाइन देखकर प्रसन्न हुए और बोले, "निर्धन भारत चांदी कैसे खरीद सकता है ? मेरा परामर्श है कि इसे तांबे में ढाल लिया जाए और अखिल भारतीय कांग्रेस महासमिति के अधिवेशन में बेचा जाए।" रातोंरात उन युवाओं ने युसुफ़ मेहरअली के परामर्श पर वैसे हजारों बिल्ले तैयार करा लिये और अगले दिन अधिवेशन में बेच डाले। उस बिक्री से प्राप्त धन कांग्रेस महासमिति को दे दिया गया। कोष संग्रह का यह मेहरअली का निपट निराला ढंग था।

* * *

सन 1942 में जिन दिनों मेहरअली बंबई के महापौर थे, उनकी कार्यशैली नितांत अनूठी थी। उन्होंने नाममात्र के मुखिया के रूप में कार्य करने से इनकार कर दिया तथा अमेरिकी प्रणाली के अनुसार कार्यपालिका शक्ति के प्रयोग का आग्रह रखा। उन्होंने अपना कार्यकाल महत्वपूर्ण फाइलों के अनुशीलन की गैर-पारंपरिक प्रथा से

आरंभ किया। उनके इन कार्यों से नौकरशाही अप्रसन्न हो उठी, परंतु उन्होंने अपनी कार्यप्रणाली निर्बाध रूप से जारी रखी।

* * *

9 अगस्त, 1942 को महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, मौलाना आजाद, सरदार पटेल तथा अन्य नेताओं के संग युसुफ़ को भी गिरफ्तार कर लिया गया तथा उन सबको एक विशेष रेलगाड़ी द्वारा बंबई से पुणे ले जाया गया। रास्ते में वे राष्ट्रीय नेताओं से मिलने के लिए गाड़ी के गलियारे से होकर विविध डिब्बों में गए। पुलिस अधिकारियों ने जब उन्हें रोका तो वे उन पर बिगड़ उठे तथा उन्होंने उनसे पूछा, "क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि मैं बंबई का महापौर हूं ?" यह सुनकर अधिकारी सकपका गए और मेहरअली का मार्ग साफ हो गया।

* * *

8 अगस्त, 1942 को भारत छोड़ो प्रस्ताव पारित हो जाने के बाद कांग्रेसजनों को गिरफ्तार करके यरवदा केंद्रीय जेल ले जाया गया। मेहरअली तथा अन्य प्रमुख नेताओं को 'ए' श्रेणी में रखा गया तथा उनकी अपेक्षा कहीं बड़ी संख्या में अन्य लोगों को 'बी' श्रेणी दी गयी। 'ए' श्रेणी के बंदियों को फलों तथा अन्य आवश्यक चीजों के जो पार्सल दिए जाते उन्हें मेहरअली तथा उनके साथी प्रतिदिन चोरी-छिपे 'बी' श्रेणी की बैरकों में पहुंचा देते। एक दिन वे रंगे हाथों पकड़े गए। युसुफ़ ने सारा दोष अपने मत्थे ओढ़ लिया तथा जेल अधिकारियों को धमकाया कि वे उनके किसी अन्य साथी को हाथ न लगाएं। जेल अधिकारियों ने मेहरअली के व्यक्तित्व और स्तर के सामने नतमस्तक होकर इस घटना की अनदेखी कर दी।

* * *

युसुफ़ जब जेल में अपने संगियों से वार्तालाप करते तब उन्हें यह पता चलता कि वे राजनीति में ही नहीं कला, वास्तुकला, पुरातत्व-विज्ञान, साहित्य आदि में भी कुशल थे।

युसुफ़ मेहरअली मुसलमान थे अतः जब वे जेल के अपने संगी-बंदियों के समक्ष बुद्ध की शिक्षाओं पर बोलते तो वे सब चकित रह जाते।

युसुफ़ की नृत्य, संगीत, चित्रकला सरीखी ललित कलाओं में गहरी रुचि थी। वे इन क्षेत्रों में कार्यरत कलाकारों को उनकी कला की प्रशस्ति के प्रतीक स्वरूप कला-कृतियों आदि के रूप में समुचित उपहार भेंट किया करते थे। ये उपहार उनके स्नेह से सिक्त होते थे।

युसुफ़ मेहरअली एक महान बौद्धिक महारथी तथा जीवन में बहुमुखी रुचियों

के धनी थे। परंतु, उनकी बौद्धिकता भिन्न प्रकार की थी—वे एक ऐसे बुद्धिवादी थे जिसे अपनी प्रतिभा पर दर्प न था।

* * *

अपने छात्र जीवन में युसुफ़ मेहरअली और उनके सहपाठी जिन्ना और जयकर सरीखे विधिवेत्ताओं तथा बुद्धिवादियों के दीवाने थे। वे समय समय पर इन प्रख्यात व्यक्तियों के साथ सार्वजनिक महत्व के विषयों पर चर्चाओं के लिए एकत्र होते थे। मेहरअली के सुझाव पर युवा छात्र नेताओं ने 'यंग इंडिया सोसायटी' नामक संगठन बनाया जिसके कोई 15-20 सदस्य थे। सोसायटी की सदस्यता की एक मात्र शर्त यह थी कि प्रत्येक सदस्य को एक वर्ष के भीतर देश के समक्ष उठने वाली किसी एक समस्या पर शोध प्रबंध लिखना होगा। युसुफ़ मेहरअली और सोली बाटलीवाला ने अपने शोध प्रबंधों के लिए 'भारत की प्रतिरक्षा' विषय तथा जिन्ना को मार्गदर्शक (गाइड) चुना था। जिन्ना विधानसभा के सदस्य थे अत: उन्हें प्रतिरक्षा संबंधी जानकारी की आवश्यक सामग्री मिल जाती जिसे वे युसुफ़ मेहरअली और उनके युवा साथियों को सौंप देते। जिन्ना एक बौद्धिक महारथी तो थे ही उन दिनों कट्टर राष्ट्रवादी भी थे। वे मेहरअली और उनके युवा साथियों के संग सप्ताह में एक बार बंबई उच्च न्यायालय परिसर के अपने कक्ष में लंबी चर्चाओं के लिए सहमत हो गए थे। उस दिन जिन्ना, मेहरअली और उनके युवा साथियों को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान करते थे। ऐसे ही एक अवसर पर जब जिन्ना इन युवा छात्रों के संग चर्चा में मग्न थे, एक सोलिसिटर दौड़ा हुआ वहां पहुंचा और जिन्ना से बोला, "महोदय, मैं एक मुकदमे के कागज लाया हूं…।" यह सुनते ही जिन्ना उत्तेजित हो उठे और सोलिसिटर को फटकारते हुए चीखे, "क्या तुम्हें मालूम नहीं कि इस समय मैं यंग इंडिया सोसायटी के संग हूं ? निकल जाओ।" यह कहते हुए उन्होंने कागज दरवाजे के बाहर फेंक दिए—इसका अर्थ था हजारों रुपए फेंकना। जिन्ना के मन में युसुफ़ मेहरअली और उनके मित्रों के प्रति इतना गहरा सम्मान था।

* * *

विश्व के विभिन्न भागों में मेहरअली के अनेक प्रशंसक थे। ब्रिटेन के लार्ड फैनर ब्रौकवे ने युसुफ़ मेहरअली की हार्दिक प्रशंसा में कहा : "मेरे मन पर भारत और लंदन में उनके साथ हुई भेंटों की सुखदतम स्मृतियां अंकित हैं। वे भारत की स्वाधीनता के प्रति तो समर्पित थे ही तथा उन्होंने स्वाधीनता संघर्ष में वीरतापूर्वक कार्य किया, साथ ही वे यह भी समझते थे कि केवल समाजवादी समानता के द्वारा ही भारत की जनता को उसकी दरिद्रता से उबारा जा सकता है तथा आर्थिक मुक्ति और राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है। भारत में उनके साथ भेंट के समय

में उनके सौहार्द्रपूर्ण चरित्र और आदर्शवाद से ही नहीं वरन उस व्यावहारिक पद्धति से भी प्रभावित हुआ था जिसके माध्यम से वे एक समाजवादी आंदोलन की नींव डाल रहे थे। उन्होंने इस कार्य के प्रति स्वयं को ऐसी तीव्रतापूर्वक समर्पित कर दिया था कि उसका उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा और जब मैं उनसे लंदन में मिला उस समय वे बिस्तर में लग चुके थे, तथापि वे सदा की भांति प्रसन्न-वदन और आशान्वित थे। वे मेरी स्मृति में सदैव एक प्रेरणा के रूप में बने रहेंगे।"

* * *

युसुफ़ मेहरअली के छात्र जीवन के साथियों की स्मृति में प्रायः युसुफ़ मेहरअली के वे भावुकतापूर्ण तथा कटु उद्गार उभर आते हैं, जिनकी अभिव्यक्ति वे अंग्रेजों के साम्राज्यवादी मंतव्यों के लिए उनकी आलोचना के समय किया करते थे। बंबई में एल्फिंसटन कालेज के पीछे ओवल ग्राउंड पर मेहरअली ने ऐसी ही एक सभा में कहा था : "भारत रूपी रत्न को जब ब्रिटिश राजमुकुट से निकाल लिया जाएगा तब ब्रिटेन हालैंड सरीखा एक छोटा-सा राष्ट्र रह जाएगा।" युसुफ़ ने अंग्रेजों के विरुद्ध तीखे प्रहार करते हुए अपने तरुणाई-पूर्ण सहज उत्साह में एक बार कहा था, "ब्रिटिश शासक कुत्तों सरीखे हैं। उन्हें ठोकर मारिए तो वे आपके तलुए चाटेंगे, परंतु यदि आप उनके तलुए चाटेंगे तो वे आपको लात मारेंगे।"

प्रख्यात अमेरिकी लेखक तथा प्रसिद्ध पुस्तक 'थ्री हू मेड रेवोल्यूशन' के रचयिता बेरट्राम वुल्फे के संस्मरण युसुफ़ मेहरअली के जीवन की दिलचस्प घटनाओं का रहस्योद्घाटन करते हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका में अपने प्रवास के दौरान उन्होंने बेरट्राम वुल्फे को बताया कि उन्होंने और जेल में उनके संगियों ने वुल्फे की प्रसिद्ध पुस्तक 'पोर्ट्रेट आफ मेक्सिको' का आनंद उठाया। जब युसुफ़ से पूछा गया कि उन्हें जेल में वुल्फे की पुस्तक कैसे मिली तो युसुफ़ ने एक दिलचस्प कहानी सुनाई। जेल में युसुफ़ ने बाइबिल की प्रति मांगी, इस पर जेलर ने उनसे कहा कि वे मुस्लिम हैं अतः उन्हें कुरान का अध्ययन करना चाहिए। मेहरअली को जब बाइबिल की प्रति देने से इनकार कर दिया गया तब उन्होंने तथा जेल में उनके संगियों ने अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल शुरू कर दी। उच्च जेल अधिकारी यह सोचकर भयभीत हो गए कि संसार भर को यह पता चल जाएगा कि बंदियों ने अधिकारियों द्वारा बाइबिल की प्रति देने से इनकार करने पर भूख हड़ताल कर दी है। तब जेलर बाइबिल की एक प्रति लेकर आया परंतु युसुफ़ और उनके संगी बंदियों ने कठोर रुख अपना लिया तथा यह मांग रखी कि यदि जेल अधिकारी भूख हड़ताल समाप्त कराना चाहते हैं, तो बंदी जो भी पुस्तकें पढ़ना चाहें उन्हें वे सब पुस्तकें उपलब्ध कराई

जाएं। अंततः जेल अधिकारियों ने यह नयी मांग भी स्वीकार कर ली, जिसके फलस्वरूप युसुफ़ बेरट्राम वुल्फे की पुस्तक 'पोर्ट्रेट आफ मेक्सिको' प्राप्त कर सके। यह कहानी सुनकर वुल्फे रोमांचित हो उठे।

युसुफ़ जिन दिनों अमेरिका में थे वुल्फे उन्हें एक स्टेशन वैगन में लेकर केप (अंतरीप) के पर्यटन के लिए निकले। उन्हें ग्रेट बे (महान खाड़ी) के भीतरी तथा अटलांटिक महासागर के बाह्य तट—दोनों की सैर करनी थी। जलडमरूमध्य के अंतिम छोर पर पहुंचकर बेरट्राम वुल्फे ने मेहरअली से कहा कि उसे रेस प्वाइंट (दौड़ बिंदु) कहा जाता है क्योंकि जिस बिंदु पर अटलांटिक महासागर तथा मसाचुसेट्स खाड़ी के जल का संगम होता है उसके चारों ओर एक ज्वार दौड़ लगाता है। युसुफ़ सहसा वहां रुक गए और पैदल ही महासागर एवं खाड़ी के जल के संगम बिंदु पर जा पहुंचे। उन्होंने अपनी चप्पलें उतारीं तथा वे हिलोरें मारते जल में उतर गए। उन्होंने वुल्फे से कहा : "हम भारतीयों का विश्वास है कि जल का प्रत्येक संगम पवित्र तीर्थ होता है।" मेहरअली के मुख से यह सुनकर वुल्फे ने समझ लिया कि युसुफ़ स्वयं समाजवादी दर्शन तथा भारतीय जनता की प्राचीन आस्थाओं का संगम है।

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात युसुफ़ अंग्रेजों के उतने कटु आलोचक नहीं रहे तथा उनकी न्यायवृत्ति के प्रशंसक बन गए।

बेरट्राम वुल्फे ने जब 'ब्रिटिश न्यायवृत्ति' को लेकर मेहरअली को छेड़ा कि उसने ही तो उन्हें इतने लंबे समय तक जेल में डाले रखा, तब युसुफ़ ने गहन उत्कटता से उत्तर दिया : "जब वे हमारा दमन कर रहे थे उनके अंतःकरण में हमारे बारे में विकलता थी। ब्रिटिश जेल में की गयी भूख हड़ताल मुझे मेरे स्वाध्याय के लिए बाइबिल तथा तुम्हारी पुस्तक दिला पाई, हिटलर तथा स्तालिन की जेल में वह मुझे गोली से उड़वा देती। विदेशी शासन रूपी बुराई के विरुद्ध गांधी की समूची अहिंसात्मक प्रतिरोध व्यूह-रचना इस अनकथ मान्यता पर खड़ी थी कि अंग्रेज सद्प्रकृति के धनी हैं जिन्हें हम जगा सकते हैं।"

* * *

कोई मेहरअली से उनके हस्ताक्षर मांगता तो वे निरपवाद रूप से एक ही संदेश लिखते, 'खतरे उठाकर जियो'। युसुफ़ स्वयं इस संदेश के अनुरूप जिए तथा अपने आहत हृदय में पीड़ा संजोए कोलाहलपूर्ण राजनीतिक जीवन के बीच खतरे उठाकर जिए और परिणामतया अंत में, समय से पहले ही दिवंगत हो गए।

* * *

मेहरअली के मन में अपने मित्रों और साथियों के प्रति सदा गहन स्नेह भावना बनी

रही। कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने ठीक ही लिखा है, "मनुष्यों के प्रति मेहरअली के गहन स्नेह तथा सौंदर्य एवं सत्य के प्रति उनकी सुरुचिपूर्ण अनुक्रिया का स्रोत उनके मन की संवेदनशीलता थी।"

एम. एल. दांतवाला का भी यही विचार है। वे कहते हैं, "युसुफ़ उस सबके प्रतीक थे जिसे मैं बहुमूल्य मानता था और जिसकी मैं कामना करता था—मुस्कुराहट, भोलापन, निर्व्याज स्नेह, उदारता और मानवता।"

* * *

घातक रुग्णता के दिनों में मेहरअली एक लंबे समय तक बिस्तर मे लगे रहे, फिर भी युसुफ़ के मित्र उनसे भेंट करना जानबूझकर टालते थे क्योंकि जब भी कोई मित्र उनसे मिलने जाता तो वे इतने उद्दीप्त हो जाते कि अपनी बीमारी को भूलकर उससे सैकड़ों प्रश्न पूछ डालते थे, "तुमने इन दिनों में कौन-सी पुस्तक पढ़ी है ? क्या तुमने यह पुस्तक देखी है ? तुम इन दिनों क्या लिख रहे हो ? क्या मुझे एक प्रति भेजोगे ?" और प्रश्नों की झड़ी बंद ही न होती। भेंट के लिए आए मित्रों को वे इतना अवसर ही न देते कि वे उनकी अस्वस्थता के विषय में कुछ पूछ पाते। एक बार जब एम. एल. दांतवाला उनसे मिलने गए तो उन्होंने दांतवाला और उनकी पत्नी के स्वास्थ्य के विषय में पूछताछ शुरू कर दी। वे दांतवाला से बोले, "तुम स्वस्थ नहीं दिख रहे हो, लाओ मैं अपने मित्र डा. तुलपुले को लिखूं और उनसे विनती करूं कि वे तुम्हारा स्वास्थ्य परीक्षण करें।" यह सब वे दांतवाला से उन क्षणों में कह रहे थे जब वे स्वयं मृत्यु के मुख में थे। इस हृदयस्पर्शी घटना का स्मरण करते हुए दांतवाला ने लिखा : "मैंने एक लंबा जीवन जिया तथा इस अंतराल में अनेक मित्रों को खोया परंतु मुझे याद नहीं पड़ता कि जे. पी. (जयप्रकाश नारायण) को छोड़कर किसी अन्य मित्र से मुझे स्नेह की वह ऊष्मा मिली हो जिसमें पिघला देने की अथवा यों कहें कि हमें स्वच्छ कर देने की सामर्थ्य हो।"

* * *

मेहरअली के जीवन में उस समय एक हृदयद्रावक घटना हुई, जब वे अपने अंतिम छोर के बहुत समीप थे। वह घटना कारुणिकता से परिपूर्ण है किंतु उससे युसुफ़ की आत्मा की ओजपूर्ण शालीनता विकीर्ण होती है। अपने अंतिम दिनों में मेहरअली डा. जस्सावाला के अस्पताल में भरती थे। डाक्टरों ने युसुफ़ के मित्रों और साथियों से कह दिया कि उन्होंने भरसक प्रयास किया तथापि वे युसुफ़ के बहुमूल्य जीवन को बचा नहीं सकेंगे। जब मेहरअली को अपने सिर पर मृत्यु की छाया मंडराती हुई दिखाई देने लगी तब उन्होंने जयप्रकाश नारायण तथा अन्य साथियों से कहा कि वे उन्हें अस्पताल से उनके घर ले जाएं। अनेक लोग यह नहीं समझ पा रहे

थे कि युसुफ़ अपनी उस संकटापन्न स्थिति में अस्पताल से अपने घर जाने का आग्रह क्यों कर रहे हैं। अंतत: जयप्रकाश नारायण ने गोपनीयता का आवरण चीर डाला। उन्होंने युसुफ़ के मित्रों और साथियों से कहा कि युसुफ़ की वह अंतिम इच्छा कि उन्हें अस्पताल से ले जाया जाए इस श्रेष्ठ भावना से अभिप्रेरित थी कि अपने द्वार पर मृत्यु की थाप सुन लेने के बाद वे अस्पताल तथा अपनी सेवा में तत्पर डाक्टरों के सुयश को कलंकित नहीं होने देना चाहते। वे नहीं चाहते थे कि लोग यह जानें कि उनकी मृत्यु अस्पताल में हुई। अंतिम क्षण में भी युसुफ़ को दूसरों की ही चिंता थी। उनके जीवन की रक्षा के लिए कठोर प्रयास करने वाले अस्पताल तथा डाक्टरों के प्रति इस सद्भावना प्रदर्शन के साथ ही वे इस संसार से कूच कर गए।

* * *

स्वतंत्रता संघर्ष के उन व्यस्त दिनों में बंबई के एल्फिंसटन कालेज के छात्र युसुफ़ मेहरअली राजनीतिक गतिविधि में आकंठ डूब गए थे। कालेज के प्राचार्य राजनीतिक गतिविधि में भाग लेने वाले छात्रों को तंग कर रहे थे। युसुफ़ और छात्र आंदोलन के उनके साथियों ने प्राचार्य के इस व्यवहार के प्रति विरोध प्रकट करने के लिए कालेज परिसर के बाहर प्रदर्शन किया। इस प्रदर्शन के लिए युसुफ़ मेहरअली ने एक नितांत मौलिक नारा गढ़ लिया 'प्रिंसिपल इज मोर इम्पोर्टेंट दैन सैवरल प्रिंसिपल्स' (अनेक सिद्धांतों की अपेक्षा प्राचार्य अधिक महत्वपूर्ण है)। युसुफ़ की राजनीतिक गतिविधि से उत्तेजित होकर एल्फिंसटन कालेज के प्राचार्य हैमिल, जो एक अंग्रेज थे, एक दिन उनसे पूछ बैठे, "तुम अपनी स्वतंत्रता प्राप्त कर लेने पर हमारे साथ कैसा व्यवहार करोगे ?" मेहरअली ने तुरंत शैतानीपूर्ण उत्तर दिया, "हम आपको रूस भेज देंगे।" और उसके साथ ही वातावरण का समूचा तनाव खिलखिलाहट भरी हंसी में घुल गया। प्राचार्य हैमिल भी उस मुक्त हास में सम्मिलित हुए।

* * *

बंबई के सुप्रसिद्ध विधिवेत्ता के. एफ. नारीमन ने प्रसिद्ध बैकबे रिक्लेमेशन मुकदमा लड़ा था जिसमें बड़े भ्रष्टाचार के आरोप थे। जिस समय नारीमन चुनाव के लिए खड़े हुए तो युसुफ़ ने अत्यंत प्रभावशाली नारा रच डाला—"देखो बैकबे को और वोट दो नारीमन को।"

* * *

बंबई में 1929 के दंगों के बाद युसुफ़ मेहरअली ने 'नेशनल मिलिशिया' (राष्ट्रीय

सेना) नाम से एक स्वयंसेवी संगठन बनाया। उसके स्वयंसेवक दंगा प्रभावित क्षेत्रों में शांति और सामान्य जनजीवन की पुनर्स्थापना के लिए घूमा करते थे।

इस संगठन ने स्वदेशी के प्रचार तथा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के लिए एक शक्तिशाली अभियान भी चलाया। उससे एक विनोदपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो गयी। पुराने तथा चतुर विधायक विट्ठलभाई पटेल धुआंधार सिगरेट फूंका करते थे। वे 555 ब्रांड की विदेशी सिगरेट प्रयोग करते थे। जब युसुफ़ और उनके साथियों ने विट्ठलभाई से प्रार्थना की कि वे विदेशी सिगरेट न खरीदा करें तब विट्ठलभाई ने तपाक से कहा, "तुम ब्रिटिश कपड़ा फूंक रहे हो, मैं ब्रिटिश सिगरेट फूंक रहा हूं।" विट्ठलभाई की इस चतुर उक्ति में एक चतुर संसदीय प्रत्युत्तर की समस्त गरिमा और तीक्ष्णता समाई थी।

मेहरअली के व्यक्तित्व के दो प्रमुख लक्षण थे—अनौपचारिकता तथा ऊष्मा। वे अपने मित्रों और साथियों की जन्मतिथियां कभी न भूलते, भले ही वे जेल में हों या जेल के बाहर उन्हें युसुफ़ की ओर से बहुमूल्य उपहार अवश्य मिलते। उनके किसी मित्र का विवाह तब तक भली प्रकार संपन्न न माना जाता जब तक कि उसे मेहरअली की ओर से विवाह का उपहार न मिल जाए। भेंट देने का मेहरअली का अपना निराला ढंग था। उन्होंने अपने एक घनिष्ठ मित्र की पत्नी को उनके विवाह पर एक पुस्तक भेंट की जिस पर मेहरअली की विनोदी टिप्पणी थी, "मैं तुम्हें यह पुस्तक इसलिए भेंट करता हूं कि तुमने मेरे मित्र के संग विवाह करने का भारी खतरा मोल लिया है।" सचमुच यह युसुफ़ की विलक्षणता थी।

युसुफ़ एक कुशल संगठनकर्ता थे। युवाओं के अतिरिक्त उन्होंने बंबई में दूकानों पर सहायक के रूप में कार्य कर रहे असंगठित 'गुमाश्तों' को संगठित करने का भारी दायित्व उठाया। यह उनके ही प्रयासों का फल था कि प्रथम 'शाप्स एंड इस्टेब्लिशमेंट्स एक्ट' (दूकान एवं संस्थान अधिनियम) पारित तथा लागू हुआ। मेहरअली ने गुमाश्तों के लिए प्रतिदिन केवल आठ घंटे के काम, साप्ताहिक अवकाश, छुट्टियों की सुविधा, चिकित्सा-सहायता इत्यादि की वैधानिक व्यवस्था कराई। बंबई के प्रत्येक गुमाश्ता परिवार में मेहरअली का नाम आदरपूर्वक लिया जाने लगा।

* * *

युसुफ़ मेहरअली की मैत्री एवं साथी भावना सदा राजनीतिक एवं दलीय सदस्यता तथा निष्ठाओं से ऊपर रहती थी। बाबूलाल मखारिया ने अरुणा आसफ अली की बहन पूर्णिमा बनर्जी के जीवन की एक दिलचस्प घटना सुनाई जिससे इस तथ्य की पुष्टि होती है। पूर्णिमा बनर्जी कांग्रेस समाजवादी दल की एक प्रमुख सदस्या

थीं। युसुफ़ की अस्वस्थता के दौरान पूर्णिमा ने समाजवादी दल छोड़कर कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण कर ली थी, इस कारण जब वे अस्वस्थ मेहरअली से मिलने गयीं तो परेशानी अनुभव कर रही थीं। वे जैसे ही युसुफ़ के कमरे में घुसीं भावुकतावश विचलित हो उठीं और रोने लगीं। क्षमायाचना के स्वर में वे मेहरअली से बोलीं, "युसुफ़ भाई, तुम तो मुझे देखना भी पसंद न करोगे क्योंकि मैंने हमारा दल छोड़ दिया है।" मेहरअली ने झट से उत्तर दिया, "भाड़ में जाए दल और भाड़ में जाएं सब लोग, तुम मेरे लिए वही पूर्णिमा हो, चाहे तुम साम्यवादी दल में रहो, कांग्रेस में या अन्य किसी दल में, मेरे लिए मनुष्य का व्यक्तित्व वही का वही रहता है।" उनका यह कथन उनके उस मौलिक मानवीय गुण का परिचायक है जो किन्हीं भी राजनीतिक कारणों से धूमिल नहीं होता था। जब उन्हें अपनी ओर लपकती मृत्यु के चरणों की चाप सुनाई पड़ने लगी तब उनका यह गुण और भी अधिक प्रखर हो उठा था। युसुफ़ ने अपने मित्रों से कहा था, "मैं दल का समर्पित कार्यकर्ता रहा हूं फिर भी मेरी मृत्यु हो जाने पर मेरी अंत्येष्टि को दलीय रंग मत देना। विभिन्न दलों में काम कर रहे मेरे मित्रों को मेरी अंतिम यात्रा में मेरे साथ चलने की पूरी छूट देना।"

* * *

बंबई के प्रख्यात श्रमिक संघ नेता जी. जी. मेहता को 9 अगस्त, 1942 के भोर में गिरफ्तार करके उसी रेलगाड़ी से यरवदा जेल ले जाया गया था जिसमें महात्मा गांधी तथा बंबई के महापौर युसुफ़ मेहरअली सहित अन्य नेता ले जाए गए थे। जब पुलिस ने जी. जी. मेहता को उनकी गिरफ्तारी का आदेश पत्र (वारंट) थमाया तो उन्होंने उसे फाड़कर फेंक दिया। इस पर पुलिस ने उन्हें हाथों में उठाकर अपनी गाड़ी में डाला और विक्टोरिया टर्मिनस स्टेशन पहुंचाया। रेलगाड़ी में कतिपय पुराने गांधीवादियों ने जी. जी. मेहता के आचरण की निंदा की क्योंकि उनकी दृष्टि में वह गांधीवादी सिद्धांतों के अनुरूप न था। किंतु युसुफ़ मेहरअली ने जी. जी. मेहता का दृढ़तापूर्वक बचाव किया। मेहरअली के सुझाव पर वह मामला गांधी जी के जागने पर उनके सामने रखा गया। मेहरअली की भांति गांधी जी ने जी. जी. मेहता के आचरण को इस आधार पर उचित ठहराया कि स्वयं उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने वाले प्रत्येक सत्याग्रही को परामर्श दिया था कि वे स्वयं अपने नेता बनें और अपने अंतःकरण की वाणी के अनुसार कार्य करें। गांधी जी ने भारत के प्रत्येक नागरिक को संदेश दिया था कि यदि उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाता है, तो वे 'करें या मरें'। मेहरअली ने बाद में इस घटना पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि कतिपय गांधीवादी लोग स्वयं गांधी की अपेक्षा अधिक गांधीवादी बनने की चेष्टा करते हैं परंतु गांधी जी ने सिद्ध कर दिया कि वे उनसे निपटना जानते हैं।

युसुफ़ मेहरअली अपने संगी बंदियों का जितना ध्यान रखते और उन पर जो स्नेह बरसाते उसकी कोई सीमा न थी। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बंबई के किसन मेहता यरवदा जेल में 'बी' श्रेणी में रखे गए थे। उनके संग लगभग 1500 अन्य बंदी थे। अपने प्रति होने वाले दुर्व्यवहार के विरोध में उन्होंने भूख हड़ताल शुरू कर दी। उससे पहले किसन मेहता ने कतिपय प्रमुख नेताओं को पत्र लिखे थे जो उसी जेल में 'ए' श्रेणी में रखे गए थे। इन नेताओं में बंबई के भूतपूर्व मुख्यमंत्री बी. जी. खेर, बंबई प्रदेश कांग्रेस समिति के अध्यक्ष नगीनदास टी. मास्टर, बंबई प्रदेश कांग्रेस समिति के महासचिव एस. के. पाटिल तथा समाजवादी नेता युसुफ़ मेहरअली और अशोक मेहता थे। आठ दिन तक उनके पत्रों की कोई अनुक्रिया सामने नहीं आई, नौवें दिन किसन मेहता को यह संदेश मिला कि वे अस्पताल में युसुफ़ मेहरअली से मिलें जहां वे इलाज करा रहे थे। मेहरअली ने पहले से ही किसन मेहता के लिए बीमारी के प्रमाण पत्र की व्यवस्था कर ली थी। किसन अस्पताल गए और युसुफ़ से मिले तो वे संगी बंदियों के प्रति युसुफ़ की गहन चिंता और उनके प्रगाढ़ स्नेह से अभिभूत हो गए। मेहरअली ने उन लोगों के लिए साबुन, दंत मंजन और पेस्ट तथा अन्य आवश्यक सामग्री भिजवाई।

किसन मेहता कुछ समय पश्चात रिहा होकर बंबई चले गए। एक बार उन्हें यरवदा जेल से युसुफ़ मेहरअली का एक पत्र मिला जिसमें यह सूचना थी कि उन्हें अमुक रेलगाड़ी से पुलिस के पहरे में शारीरिक जांच के लिए बंबई लाया जाएगा और किसन मेहता उन्हें रेलगाड़ी पर मिलें। किसन मेहता दादर स्टेशन पर उनके डिब्बे में चढ़े तथा भायखला तक उनके साथ गए, जहां युसुफ़ को उतारकर आर्थर रोड जेल ले जाया गया। उस अवसर पर युसुफ़ ने रेलगाड़ी में किसन मेहता से जो कुछ कहा उससे यह प्रकट होता है कि उन्हें दूसरों की कितनी चिंता थी। मेहरअली अपनी पीड़ा को अपने परिजनों पर इस कारण व्यक्त नहीं करना चाहते थे कि उससे वे चिंतित हो उठेंगे। मेहरअली ने किसन मेहता को पहले से ही सावधान कर दिया कि जब उनके भाई अहमद मेहरअली उनसे मिलने भायखला आएं तो उन्हें युसुफ़ के हृदयरोग का भेद न मिलने पाए। उन्हें केवल यह बताया जाए कि वे शियाटिका (नाड़ी पीड़ा) तथा वातरोग से पीड़ित हैं। तथापि, बंबई अस्पताल में युसुफ़ मेहरअली के व्यापक शरीर-परीक्षण से चिकित्सक भांप गए कि युसुफ़ लंबे समय तक जीवित नहीं रह पाएंगे। सरकार यह नहीं चाहती थी कि युसुफ़ की मृत्यु जेल में हो तथा उसे बदनामी मिले, अतः युसुफ़ को रिहा कर दिया गया।

बीमारी की अवस्था में भी युसुफ़ आगंतुकों के लिए उदासी के वातावरण का निर्माण नहीं करते थे। वे कभी कभी तो अर्द्धचेतन अवस्था में भी अपनी पीड़ा छिपाए अजंता और एलोरा गुफाओं के सौंदर्य तथा हिमालय और उसकी नदियों की

गरिमा के बारे में विस्तार से बतियाते रहते थे। इसका परिणाम यह होता था कि आगंतुक तो उनके पास से यह सोचकर प्रसन्न मुद्रा में लौटता कि अब वे ठीक हो रहे हैं किंतु युसुफ़ का हृदय गहन पीड़ा से जकड़ा होता था।

सन 1946 में बंबई प्रदेश कांग्रेस समिति के चुनाव हो रहे थे। युसुफ़ मेहरअली और गणपति शंकर देसाई बंबई के सी वार्ड से एक-दूसरे के विरुद्ध खड़े थे। उस वार्ड से चार सदस्य चुने जाने थे। समाजवादी गुट के प्रतिनिधि युसुफ़ मेहरअली भारी बहुमत से विजयी रहे। गणपति शंकर भी चुने गए परंतु उन्हें संभवतया तीसरा या चौथा स्थान मिला। गणपति शंकर ने खुलेआम यह स्वीकार किया कि युसुफ़ मेहरअली सबसे अधिक लोकप्रिय प्रत्याशी थे। उन्होंने इस सर्वविदित रहस्य का भी उद्घाटन किया कि उनकी पत्नी ने भी अपना मत युसुफ़ मेहरअली को दिया। युसुफ़ को ऐसा प्रेम और स्नेह मिला।

* * *

युसुफ़ मेहरअली दूसरों को जो सौहार्द्र तथा स्नेह देते थे उसके बदले में उन्हें देश-विदेश दोनों से समान रूप से स्नेह मिला। युसुफ़ के देहावसान के पश्चात किसन मेहता अपने व्यापार के प्रसंग में संयुक्त राज्य अमेरिका गए। वहां वे चेस्टर बाउल्स तथा श्रीमती बाउल्स से मिले जिन्होंने उन्हें न्यूजर्सी, स्प्रिंगफील्ड के एक ऐसे सज्जन का पता दिया जिनका युसुफ़ मेहरअली से घनिष्ठ परिचय था। श्रीमती बाउल्स ने उन सज्जन से फोन पर संपर्क किया और वे किसन मेहता को लेने आ पहुंचे। मार्ग में अमेरिकी मित्र ने किसन मेहता से प्रार्थना की कि वे उनके बच्चों को 'अंकल मेहरअली' के देहावसान की सूचना न दें क्योंकि उससे वे बहुत विचलित हो उठेंगे। तथापि, जैसे ही किसन स्प्रिंगफील्ड में अमेरिकी मित्र के घर पहुंचे उन्होंने वहां उन मित्र की पत्नी को रोते हुए पाया क्योंकि उन्हें पहले ही अपने भद्र मित्र मेहरअली की मृत्यु का दुखद समाचार मिल चुका था। किसन मेहता यह देखकर द्रवित हो उठे कि युसुफ़ के स्नेह की ऊष्मा भारत की सीमाएं लांघ गयी थीं और उसने विदेशियों में भी उनके प्रति वैसा ही उत्कट स्नेह उत्पन्न कर दिया था।

* * *

एक अन्य घटना से युसुफ़ के साथियों और मित्रों के प्रति उनके गहन स्नेह का बोध होता है। युसुफ़ मेहरअली अमेरिका जा रहे थे। उन्हें बंबई के मोल स्टेशन से जहाज पर रवाना होना था। समुद्री यात्रा आरंभ होने की पूर्व-संध्या में किसन मेहता ने उनसे भेंट की तथा उनको बताया कि उन्हें अगले दिन बी. ए. की अंतिम परीक्षा में बैठना था, अत: वे उस दिन युसुफ़ की विदाई और उन्हें अपनी शुभकामनाएं समर्पित करने मोल स्टेशन नहीं पहुंच पाएंगे। अगले दिन जिस समय

किसन मेहता एल्फिंस्टन कालेज के परीक्षा भवन में प्रश्नों के उत्तर लिख रहे थे। प्राचार्य सील ने उस भवन में प्रवेश किया तथा किसन मेहता के समीप जाकर उनसे कहा कि वे क्षण भर के लिए बाहर आएं। यह सुनकर मेहता घबरा गए और उन्हें लगा कि शायद उन्हें दंडित किया जाएगा। किंतु वे जैसे ही बाहर निकले उन्होंने वहां विदाई लेने के लिए प्रतीक्षारत युसुफ़ मेहरअली को खड़े पाया। यह था वह उच्च कोटि का स्नेह, जो एक उच्च-स्तर के नेता युसुफ़ किसन मेहता सरीखे युवा कार्यकर्ताओं पर बरसाते थे। क्या वे तरुण उस स्नेह को भुला सकते हैं, जो युसुफ़ ने उन पर लुटाया था।

* * *

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बंबई अधिवेशन के अवसर पर युसुफ़ मेहरअली कांग्रेस सेवादल के प्रधान सेनापति थे। उस अवसर पर उन्होंने झंडा अभिवादन समारोह की एक नयी विधि निश्चित की जिससे उनकी कल्पनाशीलता का बोध होता है। एक विशाल ध्वज स्तंभ गाड़ा गया, एक विशाल तिरंगा ध्वज डोरी से बांधा गया, स्वयंसेवकों को घोड़े की नाल की आकृति में खड़ा किया गया और बैंड-दस्ते ने एक विशेष धुन तैयार की। कांग्रेस-अध्यक्ष (उस समय कांग्रेस अध्यक्ष को राष्ट्रपति कहा जाता था) राजेंद्र प्रसाद ने झंडे की डोरी खींची, सिल्क का वह झंडा ध्वज-स्तंभ में अटक गया। युसुफ़ ने तुरंत एक स्वयंसेक को 100 फुट ऊंचे स्तंभ पर चढ़ने तथा झंडे को खोलने का आदेश दिया। स्वयंसेवक ने तुरंत उनके आदेश का पालन किया। उसने स्तंभ पर चढ़ने का खतरा उठाया था अत: डा. राजेंद्र प्रसाद ने उस कार्यवाही के प्रति विरोध प्रकट किया तथा प्रधान सेनापति से कहा कि वे आगे से स्वयंसेवकों को ऐसा खतरनाक काम न सौंपें। मेहरअली ने नम्रता किंतु दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया, "यह उसका कर्तव्य है।"

* * *

मेहरअली देशभर की विभिन्न जेलों में राजनीतिक बंदियों के अध्ययन के लिए पुस्तकें भेजा करते थे। 1942 में युसुफ़ की गिरफ्तारी के बाद उनके मित्र कांतिलाल मोदी उस पुस्तक विक्रेता के पास गए जिससे वे पुस्तकें उधार पर खरीदते थे, और उससे कहा कि वह राजनीतिक बंदियों को पुस्तकें भेज दें तथा उन्होंने मेहरअली के नाम पड़े बीजक (बिल) भुगतान करने के लिए मांगे। पुस्तक-विक्रेता ने कांतिलाल मोदी को बताया कि युसुफ़ मेहरअली के वे ही अकेले मित्र न थे और उसने उन्हें आश्वस्त किया कि बीजकों का भुगतान उसे मिल चुका है, वे चिंता न करें। इससे पता चलता है कि मेहरअली को समाज के विभिन्न वर्गों की प्रशंसा और सहानुभूति कितनी भारी मात्रा में उपलब्ध थी।

युसुफ़ मेहरअली में इतिहास की चेतना, कला को सराहने की भावना तथा अपने मित्रों और साथियों के प्रति विशेषतया कठिनाई की घड़ियों में गहन सहानुभूति कूट कूट कर भरी थी। रोशनाई की कलम से बनाए गए प्रतिकृति चित्रों के क्षेत्र के एक प्रमुख चित्रकार वी. एन. ओके के मन पर युसुफ़ के ऐसे संस्मरण अंकित हैं जिनसे युसुफ़ के उत्कृष्ट गुणों का परिचय मिलता है। 1946 में बंबई के चेतना सभागार में आयोजित उस प्रसिद्ध राष्ट्रीय प्रदर्शनी के पीछे युसुफ़ मेहरअली की प्रेरणा थी, जिसमें 1857 से 1946 तक की कालावधि में भारतीय स्वाधीनता संघर्ष के अत्यंत भावोद्दीपक घटनाक्रम एवं क्षणों का चित्रमय प्रदर्शन किया गया था। उस अनूठी प्रदर्शनी को तैयार करने में वी. ए. ओके ने पूरा समय लगाया था तथा युक्तिपूर्वक घोर परिश्रम किया था। यद्यपि उस प्रदर्शनी के लिए सबसे अधिक श्रेय के पात्र वी. एन. ओके हैं तथापि वे स्वयं उस प्रदर्शनी को युसुफ़ मेहरअली की कल्पना की उपज मानते हैं क्योंकि कलाकार के नाते वे कला के क्षेत्र में कल्पनाकार के प्राथमिक महत्व को समझते और पहचानते हैं। चेतना में 1946 की उस प्रदर्शनी का उद्‌घाटन एक राजनीतिक घटना ही नहीं था वरन जैसा कि ओके ने स्पष्ट रूप से कहा है उसे एक ऐसे कला समारोह में बदल डाला गया था जिसे अलाउद्दीन खां सरीखे संगीतकार तथा मुशायरे में भाग लेने वाले अति-प्रतिष्ठित कवियों ने अपनी कला के प्रदर्शन द्वारा गरिमा प्रदान की। ओके ने उस प्रदर्शिनी का एक ही स्मृति-चिह्न संजोकर रखा था—'हमें उन पर गर्व है'—उदीयमान कलाकार ओके के प्रति युसुफ़ का यह प्रशंसा-उद्‌गार तथा उसकी पीठ थपथपाना।

वी. एन. ओके को संग लेकर युसुफ़ जे. जे. स्कूल आफ आर्ट गए तथा अपने व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद उन्होंने अत्यंत उत्सुकतापूर्वक यह पूछा कि प्रसिद्ध कवि—रूडयार्ड किपलिंग जे. जे. स्कूल परिसर में किस स्थान पर ठहरे थे। और जैसे ही उन्होंने वह दीवार देखी जिसके एक कोने पर किपलिंग के नाम की तख्ती लगी थी उन्होंने उस तख्ती पर लगे मकड़ी-जालों और धूलिकणों को अपने हाथों से हटा दिया। ओके द्वारा सुनाई गयी इस छोटी-सी किंतु महत्वपूर्ण घटना से यही बोध होता है कि युसुफ़ के मन पर जहां इतिहास की चेतना थी वहीं कवियों और कलाकारों के प्रति प्रेम भी था।

राजनीति में रहकर भी युसुफ़ के मन में रवींद्रनाथ ठाकुर के शांतिनिकेतन और रमण महर्षि के तिरुवन्नामलाई आश्रम के प्रति गहरा आकर्षण था। बंगलूर में समाजवादी दल की महापरिषद की बैठक के पश्चात ओके को साथ लेकर युसुफ़ रमण महर्षि के आश्रम पर गए। वे सीधे प्रार्थना भवन पहुंचे जहां वैदिक मंत्रों का गायन हो रहा था। प्रार्थना के पश्चात वे अरुणाचल पर्वत की परिक्रमा पर निकले। परिक्रमा के मार्ग में पापनाशन गुहा नामक एक गुफा पड़ती है उसके बारे में ऐसी मान्यता है कि जो व्यक्ति उस गुफा में से होकर निकल आता है उसके जीवन

भर के पाप नष्ट हो जाते हैं। मेहरअली बहुत प्रसन्न मन से गुफा में गए और उसमें से एकदम थके हुए बाहर आए। ओके ने उस दशा में उनके चित्र खींचे। युसुफ़ ने पाप किए ही कहां थे जिनके प्रक्षालन के लिए वे उस गुफा में गए ? गुफा से युसुफ़ को मानसिक संतोष और शारीरिक थकावट का पुरस्कार मिला।

* * *

समाजवादी आंदोलन में युसुफ़ मेहरअली के एक निकट सहयोगी थे अच्युत पटवर्धन। अपने दिलचस्प संस्मरणों में उन्होंने आग़ा खां से संबंधित एक अति महत्वपूर्ण प्रसंग का उल्लेख किया। एक बार मेहरअली भारत के सबसे अधिक धनी व्यक्ति आग़ा खां से मिले और उनसे बोले, "महामहिम, मुझे यह विश्वास नहीं है कि आप ईश्वर का अवतार हैं।" आग़ा खां ने झटपट उत्तर दिया, "तुम्हारे विश्वास अथवा अविश्वास से कोई अंतर नहीं पड़ता, परंतु मुझे विश्वास है कि खोजा समुदाय ने जिन उत्कृष्टतम पुरुषों को जन्म दिया है तुम उनमें से एक हो, और तुम्हें अपने बीच पाकर हमें गर्व होता है। यदि तुम्हें किसी भी समय किसी वस्तु की आवश्यकता पड़े तो तुम मेरे सचिव को फोन पर कह देना।" युसुफ़ ने इस बात को ध्यान में रखा परंतु आग़ा खां से मिले इस आश्वासन का उपयोग अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए कभी नहीं किया। इसका उपयोग उन्होंने सार्वजनिक हित के लिए किया।

भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जब मेहरअली को उनके गंभीर हृदय रोग के कारण समय से पहले ही रिहा कर दिया गया तो उन्होंने आग़ा खां के सचिव को फोन करके कहा कि वे कुछ पुस्तकों की खरीद करा रहे हैं तथा उन्हें आशा है कि आग़ा खां से उनके भुगतान के आदेश प्राप्त हो चुके हैं। सचिव ने उन्हें बताया कि आग़ा खां से आदेश प्राप्त हो चुके थे। अत: मेहरअली ने उन्हें तारापुरवाला तथा न्यू बुक कंपनी के पते, पचीस हजार रुपए मूल्य की पुस्तकों तथा देश-भर की जेलों में कैद उन राजनीतिक बंदियों की सूचियां भेज दीं जिन्हें वे पुस्तकें भेजी जानी थीं। और, पुस्तकें इस प्रकार बंदियों तक जा पहुंचीं, जिन्हें पाकर वे फूले न समाए। जेलों के नीरस जीवन में बंदियों के लिए पुस्तकें ईश्वर के समान होती थीं, परंतु इस ईश्वर के पीछे आत्मा के रूप में युसुफ़ मेहरअली थे।

ईश्वर को लेकर युसुफ़ मेहरअली के जीवन का एक अन्य चित्ताकर्षक प्रसंग भी है। एक बार उन्होंने अपने एक मित्र से कहा, "मुझे ईश्वर पर आस्था नहीं है, क्योंकि मुझे संगठित धर्म—चर्च, मस्जिद, मुल्ला, मौलवी इत्यादि पर आस्था नहीं है।" तथापि, अपने जीवन के अंत में वे रमण आश्रम गए।

रमण आश्रम की अपनी यात्रा के बारे में युसुफ़ ने अच्युत पटवर्धन को बताया था, "मैंने रमण महर्षि से कहा कि महात्मन् ! मुझे ईश्वर पर आस्था नहीं है, परंतु

मुझे ऐसा अनुभव होता है कि आप इस देश की संस्कृति की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं और इस देश में मेरी तीर्थयात्रा आपसे भेंट किए बिना अपूर्ण रह जाएगी।" महर्षि रमण ने उनसे कहा, "चिंता क्यों करते हो। तुम ईश्वर को मानो या मत मानो ईश्वर पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ईश्वर यदि है, तो वह यह चिंता नहीं करेगा कि तुम उसके अस्तित्व को स्वीकार करते हो या अस्वीकार। अब तुम यहां आ गए हो, इन विवादात्मक विषयों को भुला दो। अपने मन से वह सब निकल जाने दो जो विवादपरक है। प्रसन्न हो जाओ।"

उस क्षण के पश्चात मेहरअली ने आश्रम में अपने निवास के तीनों दिन समाधि की अवस्था में व्यतीत किए। वे चरम आनंद में जिए तथा जीवन की पवित्रता के प्रति उन्मुख हुए। उस अवस्था में युसुफ़ ने धार्मिक मन की वास्तविकता को पहचाना।

* * *

अपने भाषणों, वार्तालापों तथा चर्चाओं में मेहरअली ने कटुता का प्रदर्शन शायद बिरले ही किया हो। इसका एक कारण यह था कि उनके भीतर पैनी विनोदी और व्यंग्यात्मक वृत्ति थी जो उनके भाषणों में भरपूर समाई रहती थी। वे सार्वजनिक सभा में बोल रहे हों, विधानसभा में भाषण दे रहे हों अथवा सबसे अधिक विवादास्पद विषयों की चर्चाओं में भाग ले रहे हों, उनकी इस प्रवृत्ति के कारण किसी भी प्रकार की दुर्भावना अथवा कटुता उत्पन्न नहीं हो पाती थी। अत: जहां मेहरअली के संग सहमति सुखद होती थी वहीं प्रसन्नतादायी असहमति भी कष्टप्रद नहीं होती थी। इस संदर्भ में एक सार्वजनिक सभा का स्मरण हो आता है जिसमें युसुफ़ मेहरअली मुख्य अतिथि थे तथा जिसे अच्युत पटवर्धन ने भी संबोधित किया था। अच्युत पटवर्धन को किसी अन्य समारोह में जाना था अत: अपना भाषण समाप्त करने के पश्चात उन्होंने युसुफ़ मेहरअली से जाने की अनुमति मांगी। युसुफ़ अपनी स्वाभाविक विनोदी शैली में बोले, "हमने अभी हवाई आक्रमण की पूर्वसूचना देने वाला सायरन सुना, किंतु हम पर बम नहीं गिराए गए।" इस पर अच्युत पटवर्धन ने तुरंत चुटकी ली, "माननीय महोदय ! सुरक्षा का संकेत तो पहले ही दिया जा चुका है।" उन दिनों की अनौपचारिकता और विनोदवृत्ति ऐसी निश्छल थी।

* * *

युसुफ़ मेहरअली की मैत्री उनके मित्रों और साथियों के लिए आनंद और सुख का स्रोत थी, परंतु स्वयं उन्होंने अपने जीवन के अंतिम क्षणों में अपनी रोग-शय्या पर भारी संत्रास भोगा। जब उन्हें लगा कि अंतकाल समीप आ गया है, तो युसुफ़ ने अपने साथियों से कहा कि वे अपनी जर्जर काया में हो रही असह्य पीड़ा को सहन

करने में असमर्थ हैं अत: वे शांतिपूर्वक मृत्यु का वरण करना पसंद करेंगे। उन्होंने शिकायत के स्वर में कहा कि डाक्टर उनके जीवन के प्रति मोहवश अनेक जीवनरक्षक औषधियों के माध्यम से उनके जीवन पर प्रयोग कर रहे थे। युसुफ़ ने कहा, 'यह तो नियोजित उत्पीड़न है।' परंतु मेहरअली के प्रति अपने अटूट प्रेम के अधीन होकर डाक्टर उन्हें इस प्रकार उत्पीड़ित करते रहे। अंततः युसुफ़ ने कष्ट और उत्पीड़न मे मुक्त होकर अपनी इहलीला समेट ली।

9. मुखर पत्र

पत्र मुझे वाणी प्रदान कर देता है, और यदि मुझे लिखने की अनुमति न होती तो मैं गूंगा रह जाता।

—ओविद

अपने मित्रों और गांधी जी तथा जवाहरलाल नेहरू सरीखे राष्ट्रीय नेताओं के नाम युसुफ़ मेहरअली के सुंदर पत्रों में उनकी पारदर्शिता का विलक्षण गुण झलकता है। इन पत्रों से युसुफ़ के सर्वतोमुखी मन और उन संवेगों का बोध होता है, जो उनके संवेदनशील चित्त में हिलोरें लेते थे। युसुफ़ के पत्रों में उनकी मैत्री भावना और हार्दिकता, विनोदी वृत्ति तथा भोले-नटखटपन, अनौपचारिकता, करुणा, नि:स्वार्थ भावना, समर्पण, स्वतंत्रता-प्रेम, अन्याय के प्रति निरादर, प्राकृतिक सौंदर्य, कला तथा साहित्य के प्रति अनुरक्ति तथा इतिहास की एक पैनी दृष्टि, इन सबकी मुखर एवं कलात्मक अभिव्यक्ति हुई है। उनका अध्ययन करने पर यह अनुभूति होती है कि आस्कर वाइल्ड के इन शब्दों के पीछे क्या भाव रहा होगा, "एक कलाकार के लिए अभिव्यक्ति ही वह एकमात्र माध्यम है जिसके द्वारा वह जीवन को तनिक भी समझ पाता है, उसके लिए गूंगे अर्थात् अनभिव्यक्त का अर्थ है मृत अथवा अस्तित्वविहीन।"

प्रस्तुत उद्धरणों से युसुफ़ मेहरअली के पत्रों का यह सत्य और सौंदर्य उजागर होता है :

अंतर्राष्ट्रीय संपर्क

2 विलोघबी रोड
लंदन एन. डब्लू. 3
17-6-1938

प्रिय श्री अलेक्जेंडर,

...यहां मैं अति तनावपूर्ण समय व्यतीत कर रहा हूं। मैं सर स्टैफर्ड क्रिप्स, लास्की, जॉन स्ट्रैची, जे. ए. होब्सन, पामे दत्त और ऐसे ही अन्य बीसियों लोगों के साथ लंबी चर्चाएं की हैं। मैंने लोकसभा में संसद सदस्यों की एक सभा में भाषण दिया। मैं आक्सफोर्ड में जिन लोगों से मिला, उनमें मास्टर बैलिऔल तथा बर्ट्रेंड रसेल भी थे। इनके अतिरिक्त मैं अनेक लेखकों, कवियों, कलाकारों आदि से भी मिला जिनमें इंडियन कांसीलियेशन ग्रुप का एक महत्वपूर्ण स्थान है, जिससे मैं कुमारी अगाथा हैरीसन के निमंत्रण पर मिला। परंतु इस परिश्रम के कारण मुझ पर निरंतर बना रहनेवाला तनाव मेरी सहनशक्ति से ऊपर चला गया। क्योंकि मैं प्रतिदिन 16 से 18 घंटे काम करता रहा हूं। आज मैंने पूरा दिन बिस्तर में आराम से बिताया।

संसद सदस्यों के साथ चर्चा करके मुझे कम निराशा नहीं हुई, उनमें से अधिकांश को भारत के विषय में कुछ भी ज्ञान न था। मैं नहीं जानता कि क्या आपका उत्कृष्ट प्रपत्र (पैम्फलेट) उनके हाथों में रखा जाए। यह बहुत उपयोगी रहेगा। उनमें से अधिसंख्य ने मुझसे कतिपय साहित्य की मांग की...।

हार्दिक आदर सहित,

आपका
युसुफ़ मेहरअली

होरेस अलेक्जेंडर
लंदन।

संगीत, कला और पुस्तकों के प्रति प्रेम

शांतिनिकेतन

11-1-1945

प्रिय साद,

…पहले मेरी बात। मेरी हालत में धीरे धीरे सुधार हो रहा है। यहां का वातावरण चमत्कारिक है। संगीत, कलाएं, पुस्तकें, भले मित्रों की संगति, सबका प्रभाव पड़ रहा है। और, भेंटकर्ताओं को मिलने की अनुमति नहीं है। अत: पूरे समय विश्राम ही है।

मेरी ओर से घर पर सबको यथायोग्य कहना। हमीर क्रिसमस के बाद चला गया होगा। प्रबोध भाई, हमीदा और मुकुल परिवार को मेरी याद दिलाना।

सस्नेह, तुम्हारा

युसुफ़ मेहरअली

साथी कार्यकर्ताओं का ध्यान और उनकी चिंता

'श्री' साद अली

मई-जून के लिए कार्यक्रम

(सुधार की स्थिति में जुलाई में संशोधन संभव है।)

7 बजे प्रात:	जागरण
8 बजे प्रात:	जलपान
9-12 बजे प्रात:	घर पर विश्राम, कुछ समय काम अथवा स्वाध्याय
12 बजे	मध्याह्न-भोजन
1.15 से 3.30 अपराह्न	कार्यालय (कालबादेवी) साद एंड कंपनी
4-6 बजे	जिन्ना सभागार, सप्ताह में एक बार सिनेमा
6-7.30 बजे	42 कैनेडी पुल/अथवा कामगार सेना संघ
7.50 बजे	बांद्रा के लिए रेलगाड़ी पकड़ना
8.45 बजे	घर पहुंचना
	रविवार पूर्णावकाश

साद अली के जेल से छूटने पर युसुफ़ द्वारा सुझाया गया कार्यक्रम।

प्रतिवर्ष एक से अधिक जन्मदिन की इच्छा

वाडिया लाज
इगतपुरी
20-10-45

अतिप्रिय साद,

...तुमने 'देवों के सिंहासन' की मांग की है। मेरे प्रिय बंधु, यदि मेरे पास वह सिंहासन होता तो क्या मैं चुपचाप इगतपुरी में बैठा रहता और कैलाश तथा मानसरोवर पर राज न करता ? पेट्रिस और एशियाटिक में फिर से खोज करो।

घर पर सबको मेरे यथायोग्य।

तुम्हारा सस्नेह
युसुफ़

पुनश्च : अशोक से कहना कि ब्रेलवी ने मुझे क्रानिकल में सरदार वल्लभभाई के बारे में लिखने को कहा है। अतः मैं किंचित उलझन में हूं। परंतु मैं किसी-न-किसी प्रकार दो लेख तैयार कर डालूंगा—एक स्मारिका के लिए और दूसरा ब्रेलवी के लिए।

पुरुषोत्तम और मेनन कल आए थे। उसके परिणामस्वरूप और अधिक चाकलेट आ गए। परंतु तुमने मुझे बहुत प्यारा उपहार दिया। बोलो श्रीमन् ! क्या ऐसा नहीं हो सकता कि अपना जन्मदिन प्रतिवर्ष एक से अधिक बार मनाया जा सके ?

साद अली
33, पाली हिल
बांद्रा

आग़ा खां ने गोद ले लिया है ?

इगतपुरी
28-10-45

प्रिय साद,

तुमने डर्बी जीत ली है या ग्रैंड लाटरी, अथवा और कुछ ? या तुम्हें मुल्ला जी साहब ने अथवा आग़ा खां ने गोद ले लिया है ?

अच्छा, मैं पहले चाकलेट का डिब्बा खाली कर दूं, पीछे तुमसे झगड़ा शुरू करूंगा।

प्यार,

तुम्हारा स्नेहिल
युसुफ़

नेहरू-जयकर समिति के सुपुर्द ?

नाइक काटेज,
वरसोवा रोड
अंधेरी
3-5-26

प्रिय भट्ट,

मेरी परीक्षा अंततः निपट गयी, और अब मुझमें खुलकर सांस लेने का साहस आ गया है।

अच्छा तो प्रारंभ से ही शुरू करता हूं। उस दिन श्री जिन्ना को ज्वर था अतः बेचारे को न्यायालय छोड़कर तथा सारे प्रकरण (वाद) अपने कनिष्ठ वकीलों को सौंपकर पैदल घर जाना पड़ा। मुझे ऐसा लगता है कि उनके आशीर्वादों ने यंग इंडिया सोसायटी के निराश सदस्यों के हितों की कहीं अधिक क्षतिपूर्ति कर दी। प्रत्येक बुराई में अच्छाई का कुछ-न-कुछ अंश विद्यमान रहता है, क्यों ठीक है न ?

उसके पश्चात मैं कुछ अन्य सभाएं आयोजित करना चाहता था, परंतु हमारे कुछ सदस्यों को (परीक्षा के बहाने) यह विचार पसंद नहीं आया। अतः मुझे श्रीमती नायडू की सभा को स्थगित करना पड़ा तथा मैं श्री जयकर और देशभक्त हार्नीमैन से भी कन्नी काटने लगा।

परंतु परीक्षा के उपरांत मैंने एक अतीव सफल एवं आनंददायी सभा कराई जिसमें डा. सुमंत मेहता ने हमारे सम्मुख 'ग्रामीण-पुनर्निर्माण' विषय पर भाषण दिया। वह सचमुच एक आनंददायी अवसर था। उनका जीवन भर का ग्रामीण जीवन का अनुभव अहंकार-मुक्त भाषा में साकार हो उठा जिसमें बीच बीच में विनोद का चपल पुट था। हम लोग दो घंटे तक धैर्यपूर्वक सुनते रहे। तुम लौटने पर कार्यवाही पढ़ना।

बहुत संभव है कि हम अपनी ग्राम यात्रा पर कुछ दिनों में ही निकल जाएं। हमें डा. चंदूलाल देसाई के यहां जाना था किंतु वे भड़ौच में हैं ही नहीं, तथा वे कांग्रेस-अधिवेशन की आगामी बैठक में 5 तारीख तक व्यस्त रहेंगे। अतः हमें यथाशीघ्र पूरी तैयारी से रवाना हो जाना होगा।

अब आप तनिक इधर ध्यान दें। श्रीमन् ! आप मुझसे यह अपेक्षा नहीं कर सकते कि जब आप मुझे एक छोटे-से पोस्टकार्ड पर पत्र लिखकर तरसाएं तब मैं आपको भयंकर रूप से लंबा पत्र लिखूं। अनुक्रियाशील सहकारिता अपेक्षित है ! अतः यदि आप प्रमाद करेंगे तो मैं यह प्रकरण नेहरू-जयकर समिति के सुपुर्द कर दूंगा। मुझे तुम्हारे कार्य का कुछ ब्यौरा मिलना चाहिए।

साभिवादन,

सद्भावनाओं सहित तुम्हारा
युसुफ़ मेहरअली

प्रत्येक बुराई में अच्छाई का तत्व

नाइक काटेज, अंधेरी
24-5-26

प्रिय भट्ट,

मैं तुम्हें ऐसे समय पर पत्र लिख रहा हूं जब मेरे पिताजी अनिष्टकर रूप से अस्वस्थ हैं। उनकी दशा अत्यंत अनिश्चित है तथा ईश्वर ही जानता है कि भाग्य में क्या लिखा है।

मैं पूरा समय उनके बिस्तर के पास बिता रहा हूं तथा एक दोहरा जीवन जी रहा हूं—शांति, सहज आत्मविश्वास और कृत्रिम प्रसन्नता का बाह्य जीवन तथा अग्नि परीक्षा, व्यथित हृदय एवं पीड़ादायी मन का आंतरिक जीवन।

परंतु मैं जिस प्रकार सदा आशावादी होने का दावा करता रहा हूं उसी प्रकार आज भी प्रत्येक बुराई में अच्छाई के तत्व के दर्शन की प्रतीक्षा कर रहा हूं।

तुम कैसे हो ? इन दिनों तुम्हारा कोई भी समाचार नहीं मिला है।

गुजरात में सचमुच बहुत अच्छा समय बीता, परंतु इस समय उस बारे में कुछ भी लिखने का न मन है, न मनःस्थिति। मुझे आशा है कि निकट भविष्य में ही किसी अन्य अवसर पर लिख पाऊंगा।

मीरचंदानी तुम्हारे बारे में पूछ रहा था। वह जून के प्रथम सप्ताह में बंबई आ रहा है।

तुम अपने बारे में कोई अच्छा-सा समाचार लिखना।

श्रीयुत वी. डी. सावरकर को सादर प्रणाम।

युसुफ़ मेहरअली

गांधी जी और समाजवाद

नाडियाद
23-11-1928

प्रिय भट्ट,

"...मैं महात्मा जी से भी मिला। उन्होंने मुझसे कहा, 'मुझे समाजवाद में आस्था है, परंतु समाजवादी समाजवाद में नहीं। मुझे अराजकवाद में आस्था है परंतु अराजकवादियों के अराजकवाद में नहीं।'

मैंने आश्चर्यवश पूछा, "महात्मा जी इसका क्या अर्थ है ?"

उन्होंने उत्तर दिया, "देखो ! समाजवादी अपने लक्ष्य बलपूर्वक प्राप्त करना चाहते हैं, जो मुझे स्वीकार्य नहीं है।"

मैंने उन्हें फिर से जाल में फंसाया : "अच्छा तो आप उस समाजवाद का समर्थन करेंगे जो बलप्रयोग की रीति-नीति त्याग कर चले ?"

"ठीक है, हां-हां-हां।"

"तो क्या आप फेबियन (समाजवादी) हैं ?

"हां, हां, ऐसा ही कुछ...।"

"परंतु क्या आप (फेबियन) हैं ?" मैंने यह प्रश्न इस कारण पूछा क्योंकि मेरी मान्यता है कि पूंजी और श्रम के हितों में सामंजस्य संभव ही नहीं है। आपका क्या विचार है ?"

"मेरा विचार है कि उनमें सामंजस्य संभव है।"

मुझे आशा है कि तुमने 29 तारीख को लाजपतराय दिवस पर सभा का आयोजन किया होगा। यह विज्ञप्ति बंटवाओ कि : "लाजपतराय दिवस पर यूथ लीग के सदस्य बनें।" लाजपतराय की हत्या का बदला लेने के लिए हम क्या कर रहे हैं ? कायर लोग उसके विरोध में सभाएं करने की कल्पना ही करें, परंतु तुम और मैं क्या करेंगे ? प्रिय सखा, हम लाजपतराय के 'संपूर्ण अस्तित्व' के उत्तराधिकारी हैं। मेरा चित्त विद्रोह से भरा है। मैं प्रतिबंधों पर दांत पीस रहा हूं। मुझे षड्यंत्र की कल्पना से भी घृणा है। लाला जी का रक्त मुझे पुकार रहा है।"

साभिवादन,

तुम्हारा स्नेहिल
युसुफ़ मेहरअली

विधानसभा कार्य-संपादन : जयप्रकाश को लेखा-जोखा

द्वारा/नेचर क्योर क्लिनिक
6, टोड़ीवाला रोड़, पूना-1
10-9-1949

प्रिय जयप्रकाश,

हमारे प्रथम दिवस के अनुभवों का लेखा-जोखा प्रस्तुत है। प्रथम तो अध्यक्ष ने प्रांत में विलय होने वाले राज्यों के क्षेत्र से बंबई विधानसभा में 65 सदस्यों के मनोनयन के प्रश्न पर मेरा स्थगन प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। उनका यह तर्क था कि यह बंबई सरकार का प्रशासनिक कार्य न था, वरन भारत सरकार का कार्य था, अतः स्थगन प्रस्ताव के लिए उपयुक्त विषय न था। हमने उनके कक्ष में एक लंबे समय तक तर्क-वितर्क किया, परंतु वह निष्प्रयोजन रहा।

मैं दो अन्य स्थगन प्रस्ताव रखना चाहता था, अध्यक्ष ने उन दोनों को भी अस्वीकार कर दिया। प्रथम स्थगन प्रस्ताव बंबई सरकार द्वारा नियुक्त 'स्पेशल बोर्ड' की ओर से ली गयी 'स्कूल लीविंग सर्टिफिकेट' परीक्षा के उस कुप्रबंध के बारे में था, जिसके कारण परीक्षा से कई दिन पहले ही प्रश्न-पत्र बाहर आ गए थे तथा एक बड़ी संख्या में उम्मीदवारों को हानि एवं कठिनाई का सामना करना पड़ा था।

दूसरा स्थगन प्रस्ताव साबरमती जेल में साम्यवादी बंदियों पर गोली चलाने से संबंधित था जिसके फलस्वरूप दो लोगों की मृत्यु हुई तथा बड़ी संख्या में लोग घायल हुए थे।

इन प्रस्तावों को इस आधार पर अस्वीकार कर दिया गया था कि वे निश्चय ही सार्वजनिक महत्व के विषय हैं, परंतु अत्यावश्यक नहीं हैं। यह बात प्रेस को नहीं बताई जा सकती क्योंकि विधानसभा के नियम उसकी अनुमति नहीं देते।

जिस समय अध्यक्ष ने शपथ ग्रहण के लिए पहला नाम—डा. जीवराज मेहता पुकारा तो मैंने खड़े होकर व्यवस्था का प्रश्न उठाया कि उन्हें तथा अन्य लोगों को शपथ ग्रहण करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए क्योंकि वे विधानसभा के लिए निर्वाचित नहीं हुए हैं। अध्यक्ष ने व्यवस्था का प्रश्न अस्वीकार कर दिया।

पुरुषोत्तम ने 'अफीम सेवन अधिनियम' की एक धारा को समाप्त कराने के लिए एक सर्वांगतः विहित संशोधन रखकर सदन का ध्यान बंटा दिया। वह शुद्धतः वैधानिक निर्वचन का प्रश्न था तथा उनके इस संशोधन का समर्थन विपक्ष के नेता (फोर्थपार्टी, भू. पू. मुस्लिम लीग को) ए. ए. खान तथा बहुजन समाजवादी पार्टी के तुलसीदास जाधव ने किया। महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस समिति के महासचिव गोविंद देशपांडे ने एक जनोत्तेजक भाषण द्वारा दल पर आक्रमण किया। पुरुषोत्तम दास

उत्तेजित हो उठे और उन्होंने देशपांडे के भाषण में दो बार व्यवधान डाला तथा प्रत्युत्तर में कहा, "माननीय सदस्य की टिप्पणियां सदन के प्रति निरादर की प्रतीक हैं।" अंततः संशोधन प्रस्ताव गिर गया।

यह तो सदन के भीतर की घटना है। उसके बाहर एन. जी. गोरे सहित 71 व्यक्ति एक जुलूस निकालने के आरोप में गिरफ्तार किए गए। इन लोगों ने जुलूस निकालने की अनुमति मांगी थी परंतु अनुमति देने से इनकार कर दिया गया था। जुलूस का प्रयोजन नामांकन के विरुद्ध प्रतिरोध करना था। हमें बताया गया कि प्रदर्शनकारी जब जुलूस बनाकर चले तब वहां भारी भीड़ एकत्र थी। प्रदर्शनकारी कोई 100 मीटर चले होंगे कि उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इस घटना ने पुणे में दल के अनुकूल वातावरण का निर्माण तैयार कर दिया है।

पुणे की जलवायु बहुत सुखकर तथा स्वास्थ्यप्रद है। मेरा स्वास्थ्य ठीक है। प्रभावती, बीजूबेन, कृष्णा, लीला और निमू को स्नेह।

तुम्हारा स्नेहिल
युसुफ़

पुनश्च : बंबई के छात्रों की उत्कट इच्छा थी कि तुम उनके तत्वावधान में आयोजित एक सभा में शुल्क-वृद्धि के प्रश्न पर भाषण दो। यदि तुम कुछ समय निकाल सको तो कृपा करके उन्हें निराश मत करना। रांदेरिया तथा अन्य लोग यह प्रार्थना लेकर तुम्हारे पास पहुंचेंगे।

नेहरू जी के साथ अस्वस्थता के समाचारों का आदान-प्रदान

नेचर क्योर क्लिनिक
पुणे, 5-9-1933

प्रिय पंडित जी,

आपकी रिहाई का आनंद आपकी माता जी और धर्मपत्नी की गंभीर अस्वस्थता के समाचार के कारण मंद पड़ गया है।

आपका स्वास्थ्य भी काफी प्रभावित हुआ होगा, तथापि मुझे आशा है कि स्थिति बहुत खराब नहीं होगी।

मैं जब से जेल से छूटा हूं तभी से मेरी अस्वस्थता मुझे तंग कर रही है। दो महीने तक मैं बंबई में डा. एरुलकर से चिकित्सा लेता रहा। एक्स-रे के पश्चात मुझे स्विट्जरलैंड जाने का परामर्श दिया गया। आंदोलन चालू रहने के कारण यह सुझाव मैंने सहज ही अस्वीकार कर दिया।

इसके पश्चात मैंने डा. दिनशा मेहता की देखरेख में प्राकृतिक उपचार किया तथा पिछले चार महीने से मैं उनकी देखरेख में हूं। दुर्भाग्यवश अभी तक मेरी स्थिति में कोई प्रगति नहीं है, विशेषतया पिछले कुछ समय से स्थिति अधिक संतोषजनक हो गयी है तथा रोग के बार बार आक्रमण से मैं वस्तुतया निपात की स्थिति में पहुंच गया हूं। इस स्थिति से निपटने के लिए मुझे उपवास पर रखा गया तथा मैं केवल जल के सहारे पिछले 24 दिन से उपवास कर रहा हूं। मुझे आशा है कि उपवास और उसके उपरांत दी जानेवाली चिकित्सा मुझे काफी लाभ पहुंचाएगी।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब मेरे फेफड़ों के साफ हो जाने की अपेक्षा है, परंतु मेरे पेडू की भीतरी परत तथा आंतों की सूजन के कारण मुझे काफी पीड़ा और बेचैनी हो रही है। मेरे स्वास्थ्य की स्थिति यद्यपि अच्छी नहीं है तथापि मेरे प्राणों पर संकट नहीं है।

मुझे विश्वास है कि आपका स्वास्थ्य ठीक है तथा आपकी माता जी और पत्नी दोनों शीघ्र स्वस्थ हो जाएंगी।

सप्रेम,

सद्भावनाओं सहित आपका
युसुफ़ जे. मेहरअली

जवाहरलाल को दमन की सूचना

प्रजा परिषद
भुज (कच्छ राज्य)
26-5-1939

प्रिय जवाहरलाल,

संलग्न पत्र 'वर्जीनिया क्वार्टरली रिव्यू' के संपादक ने तुम्हारे लिए मेरे पास भेजा है।

यहां कुछ समय से स्थिति तनावपूर्ण चल रही है—गिरासियों द्वारा स्वयंसेवकों को पीटना, सभाएं भंग करना, तथा राष्ट्र-ध्वज और गांधी टोपी जलाना। गिरासिया संसार के इसी भाग में बसते तथा राज के लिए उपयोगी बने रहते हैं। इसके पश्चात हमारी सभा पर इसी चिरपरिचित तर्क की आड़ लेकर प्रतिबंध लगा दिया गया है कि उससे शांतिभंग की आशंका है। राज हमारे आंदोलन के निलंबन का अत्यधिक लाभ उठाने की चेष्टा कर रहा था। हमने सभा करने का निश्चय कर लिया जिससे समूचे वातावरण में उत्साह की लहर दौड़ गयी। दोनों पक्षों ने मनकुआ गांव में तैयारियां कर लीं। गिरासिया सरदार मनकुआ के ठाकोर ने लाठियों, चाकुओं और भालों से लैस अपने गुंडों को सभा स्थल पर एकत्र कर लिया तथा सभा रद्द न करने पर पूर्ण विध्वंस की धमकी दी। मैं भी तनिक नहीं झुका और ऐसा लगता था कि पाला छूटकर लौट जाने की-सी स्थिति है। उसका दंभ ढीला पड़ गया और उसने सुझाव दिया कि सभा स्थल बदल लेने पर वह सभा की अनुमति दे देगा। हमने उसका यह प्रस्ताव भी अस्वीकार कर दिया। वातावरण पर अनिश्चितता के बादल छाए हुए थे, तभी गिरासियों ने आपत्ति वापस ले ली तथा सभा करने की 'अनुमति' दे दी। यह एक अत्यंत खतरनाक स्थिति थी, परंतु हमारी ओर से दृढ़ता परम आवश्यक थी। इसका वहां अत्यंत उत्कृष्ट प्रभाव पड़ा।

महात्मा जी ने कच्छ के महाराव को एक पत्र अपनी सहज शैली में लिखा जिसमें उनसे तनाव कम करने की अपील की गयी थी।

तुम्हारे स्वास्थ्य की कामना है !

सद्भावनाओं सहित तुम्हारा
युसुफ़ मेहरअली

सौंदर्यशास्त्र में रुचि

बंबई
26-9-1945

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारी आत्मकथा के अमेरिकी संस्करण 'स्वतंत्रता की ओर' के अनुरूप एक आवरण संलग्न है। यह उस समय तैयार हुआ जब मैं शांतिनिकेतन में था। वह मैं तुम्हें अपने प्यार सहित भेज रहा हूं।

जब तक यह तुम्हारे पास पहुंचेगा मैं जलवायु परिवर्तन के लिए बंबई से इगतपुरी जा चुका हूंगा।

घर पर सबको अभिवादन !

सस्नेह तुम्हारा
युसुफ़

'महात्मा' की प्रशंसा

बंबई,
प्रिय दीनू, मार्च, 1950

तुम्हारा पत्र पाकर बहुत प्रसन्नता हुई। 'महात्मा' के नमूने के कुछ पृष्ठ देखकर मेरे हृदय को कुछ आराम मिला। मेरा विचार है कि प्रारूप और टाइप अच्छे हैं, तथा एक बार आरंभ हो जाने के बाद अब प्रगति तीव्र होगी।

तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो अन्य देशों में लेखक भारतीय लेखकों की अपेक्षा अधिक सौभाग्यशाली हैं। पांडुलिपि पूरी करने की प्रक्रिया में तुमने जो यंत्रणा झेली है, जब मैं उसके विषय में सोचता हूं तब मुझे कभी कभी सचमुच ऐसा लगता है कि मैं समस्त प्रकार का लेखन त्याग दूं। जनसाधारण की अपेक्षाओं के विपरीत सत्य यह है कि प्रत्येक अच्छी पुस्तक लेखक के रक्त से पूरी होती है, उसकी पीड़ा नाड़ियों को ध्वस्त कर देती है तथा उसे मिलने वाला सुख और संतोष मरणोपरांत ही मिलता है। तथा, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस कार्य में निस्सीम सुख है, बात केवल इतनी-सी है कि यह देर से प्राप्त होता है। अब जब तुम पुस्तक का लेखनकार्य पूर्ण कर चुके हो तथा वह प्रकाशन के लिए प्रेस में जा रही हो तब यह मानना चाहिए कि सबसे बुरा समय कट चुका है। वस्तुतया मैं अब रजतरेखा के लिए आकाश पर दृष्टि गड़ाए रहूंगा।

यह जानकर निश्चिंतता हुई कि नयी मशीनरी और कागज आ गए हैं। मुझे विश्वास है कि अब जब काम चल पड़ा है, तो विट्ठल सक्रिय हो जाएगा। तुम जब भी चाहोगे मैं उसे फोन कर दूंगा, अथवा बुला लूंगा अथवा स्वयं जाकर उससे (चित्रों के) ब्लाकों के बारे में पूछ लूंगा।

तुम्हें सहज ही यह जानने में रुचि होगी कि लुई फिशर ने गांधी जी के बारे में अपनी पुस्तक पूरी कर ली है तथा उसकी पांडुलिपि प्रकाशक के हाथों में पहुंच चुकी है। मुझे ज्ञात हुआ है कि पुस्तक लगभग 500 पृष्ठों की होगी, उसका मूल्य पांच डालर होगा और हार्पर द्वारा गर्मियों में प्रकाशित की जाएगी। उसके साथ ही इंग्लैंड में भी उसका पृथक संस्करण प्रकाशित करने की योजना बनाई जा रही है। कितना अच्छा हो यदि तुम्हारी पुस्तक का प्रथम खंड लुई फिशर की इस पुस्तक से पहले ही बाजार में पहुंच जाए।

अब मेरे लखनऊ जाने की कोई संभावना नहीं है। मैं यह आशा करूंगा कि मैं अप्रैल के अंत में अथवा उसके आसपास समाजवादी दल के वार्षिक अधिवेशन में भाग लेने हेतु मद्रास जा सकूं।

चेलपति राव तथा हम लोगों के अन्य मित्रों को मेरी हार्दिक सद्भावनाएं।

तुम्हारा स्नेहिल
डी. जी. तेंदुलकर यूसुफ

फिल्मों तथा खेलों में रुचि

12-14 निशानपाडा मार्ग
बंबई, 18-5-1926

प्रिय उपेंद्र,

…तुमने काफी समय पहले बंगलूर में हृदयगति रुक जाने से सर नारायण चंद्रावरकर के दुखद एवं आकस्मिक देहावसान के बारे में सुना होगा। निश्चय ही भारत ने सबसे अधिक अनुपयुक्त समय पर एक महान व्यक्ति को खो दिया है।

…एक समाजवादी शृंखला : 'निर्धनों का सम्राट' नामक फिल्म इंपीरियल सिनेमा में चल रही है (जिसे मैं देखूंगा), तथा एक्सेलसियर में 'दा एलूसिव पिंपरनैंल'। इनके अतिरिक्त ब्रोटोक रायल इटालियन सर्कस, वैलेट का सर्कस और देवल का जापानी सर्कस चल रहे हैं। आग़ा खां हाकी टूर्नामेंट (प्रतियोगिता) आनंदपूर्वक खेला जा रहा है। तुम इन दिनों क्या पढ़ते रहे हो ?

तुम्हारे लिए बंबई से कुछ-भेजूं ? जब तूम सूरत जाओ तो मुझे यह समाचार भेजना मत भूलना। मेरी रमजान-ईद कल अथवा परसों पड़ रही है।

सस्नेह,

सद्भावनाओं सहित तुम्हारा
युसुफ़

सदा हाथ में कलम पकड़ कर पढ़ो

12-14 निशानपाडा रोड
बंबई, 19-5-1923

प्रिय उपेंद्र,

...कल इस्लाम जिमखाना ने हार्डलाइंस हाकी कप जीत लिया परंतु वह आग़ा खां हाकी प्रतियोगिता के सेमी-फाइनल में हार गया।

मैं अब विंसेंट स्मिथ की पुस्तक 'अकबर—महान मुगल' पढ़ रहा हूं।

लॉर्ड मारले का परामर्श याद रखना, 'सदा हाथ में कलम पकड़ कर पढ़ो' और ब्रिटिश लेखकों की रचनाएं पढ़ते समय तुम्हें हृदयस्पर्शी अवतरण अवश्य मिलेंगे।

उन अवतरणों को पढ़कर ही संतोष मत कर लेना, उन्हें लिख डालना।

हार्दिक अभिवादन सहित,

तुम्हारा
युसुफ़

सिर से बड़ा टोप

निजी/युसुफ़ जे. मेहरअली
प्रथम बाम्बे बटालियन
विश्वविद्यालय क्षेत्रीय कोर
'बी' कंपनी, 8वीं प्लाटून,
संख्या 1097, पशान शिविर,
किरकी 12-10-1933

प्रिय उपेंद्र,

...भाग्य की बात है कि मेरा टोप (हैट) मेरे सिर से बहुत बहुत बड़ा था, अतः उसे सिलाई करके छोटा करना पड़ा। एक मूर्ख आया और मुझे जोर से घूंसा लगाया जिसके फलस्वरूप वह हैट मेरे सिर पर धंस गया तथा गले तक जा पहुंचा। उससे मेरी आंखें और कान ढंक गए। जहांगीर मेहता ने यह देखकर बड़े शांतभाव से टिप्पणी की कि मैं कलगी वाले कबूतर जैसा लग रहा था। मुझे अब यदा-कदा कबूतर कहकर बुलाए जाने का गौरव प्राप्त हो गया है।

बाटलीवाला का चश्मा टूट गया है और वह उसकी मरम्मत होने तक आधा अंधा हो गया है।

जहांगीर मेहता के चश्मे के शीशे को क्षति पहुंची है।

देखो न ये कैसी दुस्साहसपूर्ण घटनाएं हैं ! इनके बारे में जानकर तुम्हें मजा आया न ? फिर भी हम इस संसार में सुंदरतम लोग हैं—क्या तुमने नहीं सुना—'विश्वविद्यालय क्षेत्रीय कोर के लड़कों से अधिक सुंदर कोई नहीं है।'

अभिवादन सहित

तुम्हारा स्नेहिल
युसुफ़

देशभक्तों के लिए 'सुधारगृह'

सुधारगृह
भायखला, बंबई,
22-2-1932

प्रिय उपेंद्र,

मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि तुमने अधिवक्ता परीक्षा का प्रथम खंड उत्तीर्ण कर लिया है। अब तुम और अधिक गरिमाशाली विषयों के, अर्थात हमारे—स्वयंसेवकों के मार्ग के बारे में सोच सकते हो, परंतु संभव है जबकि तुम डा. जानसन के इस विचार से असहमत हो कि देशभक्ति दुष्टों का अंतिम शरणालय है। यदि तुम डा. जानसन से सहमत हो तो मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मुझे भी इस विषय में कुछ सीमा तक तुम्हारा साथ देना चाहिए।

यहां की बात सोचें तो यहां स्थिति बहुत बुरी नहीं है, परंतु यह आने वाले समय का पूर्व संकेत नहीं है। यहां अपेक्षाकृत अकर्मण्यता की स्थिति है, मुझ जैसे लोग काफी भले ढंग से काम चला लेते हैं। यहां मनोनुकूल संगति की ही चाह की जा सकती है, तथा कभी कभी तो वह चाह से भी अधिक मात्रा में आवश्यक प्रतीत होने लगती है। समय व्यतीत करने के लिए उत्तराधिकार में प्राप्त तथा आविष्कृत उपाय जल्दी से निरुपयोगी सिद्ध नहीं होते। मेरा सत्याग्रही अंत:करण यहां उन सब उपायों की परिगणना की अनुमति नहीं देता। आवश्यकता को आविष्कार की जननी माना गया है। मुझे विश्वास है कि हमारी आविष्कार वृत्ति तुम जैसे शंकाशील व्यक्ति के मन में भी ईर्ष्या जगा सकती है।

अब मैं किसी भी दिन पैरोल पर रिहा कर दिया जाऊंगा। जेल से बाहर के अपने केवल 24 घंटों में मैं किसी भी राजनीतिक व्यक्ति से नहीं मिलना चाहता तथा एक अच्छे लड़के की भांति फिर से गिरफ्तार हो जाना चाहता हूं। अत: मेरी हार्दिक इच्छा है कि मैं तुमसे और बाबूभाई से मिल पाऊं, परंतु मैं नहीं जानता कि यह कैसे और कहां संभव होगा।

मैं काफी स्वाध्याय कर रहा हूं, हालांकि चारों ओर का वातावरण नियमित अध्ययन की ओर प्रेरित नहीं करता। पुन: गिरफ्तारी की स्थिति में मुझे दीर्घकालीन कारावास के लिए तैयारी करनी होगी। मैं व्यवस्थित स्वाध्याय की दृष्टि से उस अवसर की प्रतीक्षा कर रहा हूं। तब वह समय आएगा कि तुम पुस्तकें भेजकर मेरी सहायता करो। क्या तुम मेरे लिए हैवल की एक या दो पुस्तकें (भारतीय कला के आदर्श, भारतीय कला में हिमालय अथवा भारतीय कला प्रवेशिका) भेज सकते हो ? मुझे आशा है कि तुम मेरे लिए गाल्सवर्दी के नाटकों की प्रति खोजने में सफल रहे हो। यदि नहीं, तो जैसे ही तुम्हें यह पत्र मिले वैसे ही तुम उसे

खोज डालो।

क्या तुम मेरे लिए फ्रैंक हैरिस रचित बर्नार्ड शा की जीवनी खोज पाए जो अभी प्रकाशित हुई है ? अथवा बेरी के बारे में पैट्रिक ब्रेब्रुक की पुस्तक और गाल्सवर्दी के बारे में कोई पुस्तक ? मुझे यह बहुत अच्छा लगेगा।

तुम्हारे परिवार के अन्य सभी प्रमुख सदस्यों के प्रति मेरे हार्दिक अभिवादन—रत्नू को नहीं भूलना।

तुमसे मिलने की प्रतीक्षा में !

तुम्हारा स्नेहिल

युसुफ़

10. श्रेष्ठ और सुंदर मिश्रण

सो जाएंगे जब हम थककर,
होंगे सन्नद्ध लोग अन्य तब
युवा और तत्पर।
चढ़ेंगे वे उन सोपानों से
काटे हमने जो पाषाणों में,
पहुंचेंगे शिखरों पर उन सीढ़ियों से
किया निर्माण जिनका हमने।
न होंगे ज्ञात तथापि उनको
कदापि नाम उनके
गढ़ा जिन्होंने सोपानों को।

—ओलिव श्रेइनर

युसुफ़ मेहरअली अपनी भद्रता, दयालुता, उत्कट मैत्री तथा अपने सहज सौंदर्यबोध के कारण अपने संपर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के प्रिय बन जाते थे, उनकी राजनीति और उनके आदर्श इसमें आड़े न आते। कुछ विदेशी भी युसुफ़ की संगति से गहन रूप से प्रभावित हुए और उन्हें ऐसा लगता कि भारत आने पर मेहरअली का नाम भर उनके लिए पासपोर्ट का काम करेगा।

मेहरअली के घनिष्ठ संपर्क में रहने वाले प्रतिभाशाली कलाकारों तथा शिक्षाविदों की यह मान्यता थी कि युसुफ़ की मैत्री ने स्वयं को एक ऐसी सृजनात्मक शक्ति में रूपांतरित कर लिया था जिसके बल पर युसुफ समाज को उसके रोष के बदले में सच्चाई एवं सद्भावना विकीर्ण करनेवाली आह्लादपूर्ण और चित्तग्राही मुस्कान प्रदान करते थे। युसुफ़ उस विरल कोटि के पुरुषों में से थे जिनका लक्ष्य मनुष्यों के बीच भेद अथवा विसंगति की अपेक्षा सामंजस्य अथवा संगति पर बल देकर उनमें अधिक मानवीयता, न्यायप्रियता तथा सहयोग वृत्ति जागृत करना होता है।

प्रत्येक संघर्ष का एक प्रेरक उद्घोष (नारा) होता है। 1942 की अगस्त क्रांति गांधी जी द्वारा दिए गए 'भारत छोड़ो' उद्घोष (नारे) से प्रेरित थी और नेताजी सुभाष चंद्र बोस की आजाद हिंद फौज के सैनिकों ने उनके ओजस्वी आह्वान 'दिल्ली चलो' की प्रेरणा पर कूच किया। इसी प्रकार 20वीं शती के तीसरे दशक में भारत की युवापीढ़ी युसुफ़ मेहरअली के नारे 'साइमन वापस जाओ' की गूंज से अभिप्रेरित थी।

अपने मित्रों के प्रति युसुफ़ की चिंता उनके मानवीयपूर्ण व्यक्तित्व का प्रमाण थी। लंदन में एक मित्र से विदा लेते समय युसुफ़ ने ऐसे क्षणों में उससे कहा : 'अपना ध्यान रखना' जब वे स्वयं मृत्यु की ड्योढ़ी पर खड़े थे। विदाई के इन शब्दों के साथ युसुफ़ ने अपने मित्र के हाथों में अर्नेस्ट हेमिंग्वे की पुस्तक 'डैथ इन दा आफ्टरनून' (तृतीय प्रहर में मृत्यु) थमा दी।

उत्तमता के प्रति युसुफ़ की उत्कटता एक शुष्क और निस्पंद सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण की निष्पत्ति न थी वरन उसका उदय एक अन्यायपूर्ण समाज की विषमताओं तथा निर्ममताओं और उसके अपराधों से विक्षुब्ध अंतःकरण की पीड़ा के प्रति उनकी नैतिक अनुक्रिया में से हुआ था।

मेहरअली सरीखे ओजस्वी तथा चित्ताकर्षक व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति के दीर्घ-अस्वस्थता से ग्रस्त होकर पलंग से लग जाने की स्थिति एक महान त्रासदी थी, तथापि वे अपनी असह्य आंतरिक पीड़ा को छिपा लेते तथा अपनी कुशल पूछने के लिए आने वाले लोगों को अपनी मुस्कुराहट और निश्छल हंसी के द्वारा प्रसन्न रखने की चेष्टा करते थे जिससे कि उनकी रोग शय्या के चारों ओर उदासी का वातावरण न बनने पाए। वे अपनी रुलाई को रोकने के लिए हंसते रहते थे।

भारत छोड़ो आंदोलन के अंतर्गत मेहरअली की नजरबंदी के दौरान ब्रिटिश ने उन्हें इस डर से रिहा कर दिया था कि कहीं उनकी मृत्यु जेल में ही न हो जाए, परंतु युसुफ़ ने मौत को ललकारा और वे अगले आठ वर्ष जीवित रहे। इसके पीछे चिकित्सा का योगदान इतना महत्वपूर्ण न था जितना कि उनके भीतर जीवित रहनेवाला संघर्ष करने की अदम्य इच्छाशक्ति का।

युसुफ़ के चरित्र की मुख्य विशेषता अलगाव की भावना नहीं वरन समावेशन की वृत्ति थी। अतः उनकी मैत्री-भावना जिसे भी छू लेती वह उनमें परिपूर्णतया ऐसे समा जाता जैसे महासागर की ओर सरपट दौड़ती हुई नदी अपना अस्तित्व और अपनी पहचान महासागर में विलीन कर देती है।

मेहरअली की कुशाग्र बुद्धि की झलक उनकी समान रूप से पैनी और चुटीली व्यंग्योक्तियों में मिलती है। 1942 में गांधी जी की गिरफ्तारी पर लंदन में ब्रिटिश सरकार के भारत मंत्री ने जब यह गर्जना की कि "गांधी जी की गिरफ्तारी पर कोई कुत्ता तक नहीं भौंका" तो युसुफ़ मेहरअली ने अपनी व्यंग्यात्मक शैली

में भारी चोट की : "एकदम ठीक। कुत्ते तो गांधी को गिरफ्तार न किए जाने पर ही भौंकते हैं।"

भोलीभाली और बुद्धिमत्तापूर्ण नटखटता युसुफ़ की प्रकृति का एक प्रमुख अंग था। युसुफ़ और उनके साथियों ने 3 फरवरी, 1928 को भोर में अति घृणित साइमन आयोग द्वारा भारतीय भूमि पर पांव रखने के समय बंबई-हार्बर पर एक प्रतीकात्मक प्रदर्शन का आयोजन किया। यह सचमुच 'लाइट बिग्रेड का चार्ज' था। पुलिस ने युसुफ़ और उनके साथी प्रदर्शनकारियों की पिटाई की। इस घटना के अतिरंजित समाचार जंगल की आग के समान हर ओर फैलाए गए। जिस समय युसुफ़ अपना घायल और पट्टी में लिपटा हाथ लिये घर लौट रहे थे, तो एक राहगीर ने उनसे पूछा कि क्या उन्हें साइमन आयोग के विरुद्ध प्रदर्शनकारियों पर पुलिस द्वारा किए गए लाठी प्रहार में चोट आई है। युसुफ़ ने हां में सिर हिला दिया। वह राहगीर फिर बोला, "हमारे नेता युसुफ़ मेहरअली को गंभीर चोट आई है और वे अस्पताल में हैं।" युसुफ़ ने अपनी सहज नटखटतावश अपनी चपल आंख झपकते हुए तथा अपनी पहचान छिपाते हुए राहगीर से कहा, "यह अतिरंजित समाचार है।" इस पर राहगीर ने उनकी ओर अपमानभरी दृष्टि से देखा और उनके कथन की दिल्लगी उड़ाई। बाद में उस राहगीर को उसी दिन शाम को बंबई में चौपाटी की रेत पर हुई विरोध सभा में यह पता चला कि उस सवेरे उसकी मुठभेड़ उस सभा के नेता युसुफ़ मेहरअली के साथ ही हुई थी। युसुफ़ अपने गंभीर राजनीतिक अभियानों तथा संघर्षों में प्राय: इसी प्रकार की नटखटता का आनंद लिया करते थे।

विदेशों में भारत के सरकारी राजदूत तथा कूटनीतिक प्रतिनिधि कम बोलते हैं। उनके लिए मौन ही श्रेयस्कर है। शब्दों का अल्पतम प्रयोग आधुनिक कूटनीतिज्ञों की आचार-संहिता ही बन गयी है। परंतु इन कूटनीतिज्ञों के विपरीत युसुफ़ मेहरअली यूरोप तथा अमेरिका के देशों में भारत के गैर सरकारी सांस्कृतिक दूत के रूप में विदेशियों के सम्मुख भारत के हृदय की शाब्दिक अभिव्यक्ति करते हुए तब तक बोलते रहते थे जब तक कि वे थककर चूर न हो जाते। वे उन्हें भारत की यशस्वी परंपराओं, कला और वास्तुकला तथा उसके गौरवशाली इतिहास और साहित्य के वर्णन द्वारा भारत का एक बिंब प्रदान करते तथा उसके बदले में वे जिस देश में जाते उसके इतिहास तथा उसकी संस्कृति के रत्न बटोर लाते थे। इतना ही नहीं वे संस्कृति तथा इतिहास की अपनी तीर्थ यात्रा की सौंदर्यपरक अनुभूतियों को कागज पर उतारने के लिए परम लालित्य तथा सुरुचिपूर्वक लेखनी चलाते थे।

अपने अप्रकाशित लेख 'फ्रांसीसी क्रांति की एक परिक्रमा' में युसुफ़ मेहरअली ने फ्रांसीसी क्रांति की ऐतिहासिक भूमि की यात्रा के समय अपनी समाधिस्थ चेतना का परिचय दिया। युसुफ़ ऐसा मानते थे कि किसी ऐतिहासिक स्थल की आत्मा को ग्रहण करने का एक सर्वोत्तम उपाय उन बिंदुओं को खोज निकालना है जिन

पर अतीत और वर्तमान का संगम अथवा मिलन होता तथा भविष्य के पथ को आलोकित करता है। उनका मत था कि फ्रांसीसी क्रांति के काल में ऐसा एक स्पंदनशील बिंदु पेरिस था। मेहरअली ने फ्रांसीसी क्रांति की यात्रा उसके स्वाभाविक सभारंभ-स्थल 'बेस्टाइल' से आरंभ की। वहां वह कुख्यात कारा-दुर्ग आज भी खड़ा है जिस पर विद्रोही फ्रांसीसी जनता ने 14 जुलाई, 1789 को अधिकार कर लिया था। यह एक ही ऐसी तिथि है, जो स्वतंत्रता के इतिहास में सदा स्मरणीय बनी रहेगी।

युसुफ़ की चेतना 1789 के पेरिस की ओर लौटी जिसने उनके सम्मुख एक दोहरा दृश्य उपस्थित कर दिया जिसके एक ओर अकूत विलासिता थी तो दूसरी ओर घोर वेदना। पुराने दस्तावेजों को देखने पर युसुफ़ को पता लगा कि उस समय पेरिस में 31,000 बेरोजगार लोग थे। खाद्य-सामग्री के अभाव ने गंभीर रूप धारण कर लिया था तथा कीमतें तेजी से चढ़ रही थीं। रोटी की दुकानों पर ग्राहकों की लंबी लंबी कतारें लगी रहती थीं, जिसके कारण लोग बुरी तरह तंग आ चुके थे। जब महारानी मेरी अंत्वायनत को इस कठिनाई के बारे में बताया गया तो सम्राज्ञी ने अपने कुलीन वर्गीय अज्ञान एवं अबोधपन में कहा, "यदि लोगों के पास रोटी नहीं है, तो वे केक क्यों नहीं खा लेते ?" युसुफ़ सम्राज्ञी के इस कथन को खूब विनोदपूर्ण स्मरण करते थे तथा उन्होंने इसका उल्लेख अपने इस साहित्यिक निबंध में भी किया।

फ्रांसीसी क्रांति की अपनी परिक्रमा में युसुफ़ का समय हर्षपूर्ण उत्तेजना की मन:स्थिति में बीता। उन रोमांचकारी क्षणों का वर्णन युसुफ़ ने इस प्रकार किया : "आज तो तुलेरीज़ के सुंदर उद्यानों में कोई भी घूम सकता है, राजमहल अब नहीं रहा। अथवा यहां से सीन नदी पर बना पुल पार करके कॉंसियरजेरियो की विशाल जेल तक जाया जा सकता है जहां से मेरी अंत्वायनत, गिरोंदवादियों तथा बहुत-से अन्य लोगों को गिलोटिन तक ले जाया गया था, तथा जिसे पेरिस जाने वाले प्रत्येक पर्यटक को देखना ही चाहिए। इसके अतिरिक्त विविध संग्रहालयों में क्रांति के महान अग्रदूतों के नामों से जुड़े अनेक बहुमूल्य ऐतिहासिक स्मारकों के दर्शन किए जा सकते हैं, जिनमें सबसे अधिक उल्लेखनीय कारना वैले है, जहां क्रांति के घोषणा पत्र की मूल प्रति को पढ़ा जा सकता है अथवा बेस्टाइल की अनुकृति अथवा ह्यूबर्ट राबर्ट की वह पेंटिंग देखी जा सकती है जिसमें बेस्टाइन का ढहाना दिखाया गया है। वहां फ्रांस के सम्राट के नाते लुई सोलहवें द्वारा जारी किए गए अंतिम आदेश अथवा उसके मृत्युदंड से संबंधित ढेरों दस्तावेजों पर भी दृष्टि डाली जा सकती है। इनके अतिरिक्त वहां चित्रों, परिधानों, तमगों तथा दस्तावेजों जैसी स्मृति को आंदोलित करने वाली तथा चेतना पर छा जाने वाली सैकड़ों अन्य वस्तुएं सुरक्षित हैं। फ्रांसीसी क्रांति-कालीन पेरिस की खोज कैसी सुफल यात्रा है !"

मेहरअली द्वारा प्रस्तुत इस सजीव वर्णन से उनकी उस बहुमुखी प्रतिभा का ही परिचय मिलता है जिसमें इतिहास की चेतना, कला और सौंदर्य के प्रति प्रेम, प्रलेखन के प्रति उत्कट एवं विवेचन दृष्टि तथा इन सबसे अधिक पुनर्जागरण एवं क्रांति की भूमि से जुड़े श्रेष्ठतर संवेगों के प्रति उनकी अनुक्रिया-क्षमता निहित है।

युसुफ़ मेहरअली का अल्प किंतु चित्तग्राही जीवन ऐसा भव्य था। यदि जीवन का मूल्यांकन वर्षों की अवधि में नहीं वरन बहुमूल्य कृत्यों में किया जाए तो कहा जा सकता है कि युसुफ़ मेहरअली एक प्रयोजनशील जीवन के प्रतीक हैं। उनके लिए मानवजाति का मानदंड मनुष्य था। अत: युसुफ के समस्त प्रयासों का प्रयोजन सहज ही मानवीय व्यक्तित्व का चरम विकास था न कि मानवीय पीड़ा का लाभ उठाना। उनके जीवन की तंत्री उनके चारों ओर के मनुष्यों के स्पंदनशील जीवन के साथ स्वर से स्वर मिलाकर झंकृत होती थी। गहन मानवीय सहानुभूति का भाव ही उनके जीवन का सजीव स्रोत था। अत: यह तनिक भी आश्चर्य का विषय नहीं रह जाता कि युसुफ़ जब अपने चारों ओर उल्लास देखते तो उनका हृदय पीड़ा और यंत्रणा से घायल हो उठता। युसुफ़ का चुंबकीय व्यक्तित्व सृष्टि से श्रेष्ठ एवं सुंदर तत्वों का सुखद मिश्रण था। उनका मृदुल चित्त जीवन में बर्बरता और भोंडेपन से घृणा करता था और ऐसे ही उनके समाजवाद की जड़ें सौंदर्यबोध तथा नैतिकता में निहित थीं।

युसुफ़ परंपरागत अर्थ में धार्मिक पुरुष न थे, तथापि उनके जीवन में सार्वभौम धर्म की उदारता प्रतिबिंबित होती थी। वे कवि न थे तथापि उनके भीतर कवि जैसी संवेदना थी। वे संगीतकार न थे तथापि उनके भीतर लयबद्धता और सुसंगतता के दैवी गुण कूट-कूटकर भरे थे। वे चितेरे न थे, तथापि उनके जीवन के उल्लासमय पटल पर उल्लासपूर्ण रंगों की अभिव्यक्ति हुई। युसुफ़ के उस चमकदार जीवन ने जिसे मृत्यु ने 47 वर्ष की अल्पायु में ही डस लिया, रवींद्रनाथ ठाकुर के गीत की अमर पंक्तियों में मुखर अभिव्यक्ति प्राप्त की :

> परिपूरित था गीतों से
> मेरा भोर,
> संध्या को मेरी
> रंगों से भर दो।

परिशिष्ट

(युसुफ़ मेहरअली का अप्रकाशित लेख)

पेरिस में साहित्यिक सैर (भ्रमण)

पेरिस की मेरी उत्कृष्टतम सुधियां राजनीतिक एवं अन्य प्रमुख व्यक्तियों के साथ हुई मेरी भेंटों की स्मृतियां नहीं वरन उस महान राजधानी में मेरी साहित्यिक सैर की स्मृतियां हैं। यदि आप पेरिस का हृदय खोलने के लिए कुंजियां चाहते हैं, तो पर्यटन के सुप्रसिद्ध स्थलों की परिक्रमा करके ही संतुष्ट मत हो जाइएगा। लूवरे की शोभा, लक्जेमबर्ग की चमक-दमक, नौत्रे डैम के गरिमामय सर्पिल शिखर, सेंट चैप्पेल का रुचिर काव्य जिसकी कोमलता आगरा के किले की मोती मस्जिद का स्मरण करने के लिए विवश करती है—ये सब हमारे ऐतिहासिक संवेगों को शक्तिशाली ढंग से बिलो डालते हैं। परंतु इनके अतिरिक्त एक अन्य पेरिस भी है—मौलियर और कौरनेले, बाल्जाक और विक्टर ह्यूगो, अलेक्जांडर ड्यूमास तथा इमाइल जोला, अनातोले फ्रांस और रोम्यां रोलां तथा मार्सेल प्राउस्ट का फ्रांस जो उतना ही चित्ताकर्षक है जितना कि उसके इतिहास का कोई भी अन्य प्रमुख प्रसंग।

यद्यपि पेरिस की यह मेरी तीसरी यात्रा थी तथापि मैं अपने कुतूहल को कठिनाई से नियंत्रित कर पा रहा था। पहले दिन ही मैंने अपने प्रिय स्थलों पर विहंगम दृष्टि डालने का निश्चय कर लिया। प्रख्यात लेखक राजा राव ने, पेरिस जिनका दूसरा घर है, मुझे एक कार में बिठलाया और हम धीमी गति से मैडेलीन से होकर गुजरे। उसके विराट कलेवर को अपनी दृष्टि में भर लेने के लिए हम कुछ क्षणों के लिए वहां रुके, उसके पश्चात् हम रुए रौयेल से होकर निकले जिसकी सुसज्जित एवं समुज्वल दुकानें विलासिता की सभी वस्तुओं से पटी पड़ी थीं। हम धीरे धीरे उस प्लेस दे ला कौंकार्डे को छोड़कर आगे जा निकले जहां क्रांतिकाल में गिलोटिन (गंडासा) लगाया गया था तथा जहां सम्राट, सम्राज्ञी एवं उन दोनों को मृत्युदंड देने वाले दांतों, डेसमोलीन और रोब्स पियरे सरीखे क्रांतिकारियों को एक समान निष्ठुर नियति में साझा करना पड़ा तथा अनाम कब्रों में सो जाना पड़ा। अब

हम रुए रिवोली नामक एक अन्य सड़क पर जा पहुंचे जिसे पर्यटकों का स्वर्ग समझा जाता है। हम तुईलेरीज के ऐतिहासिक उद्यानों में से फुरसत से टहलते हुए निकले। कुछ ही क्षणों में हम प्लेस दु कैरोसेल पहुंच गए और हमने वह आह्लाददायी स्मारक देखा जिसे नेपोलियन ने अपनी दिग्विजय की स्मृति में बनवाया था। एक ओर हमारे सामने लूवरे था—एक ऐसा संग्रहालय जो सपनों का एक अद्भुत कोषागार है। यहां वीनस डे माइलों और मोनालिसा का आवास, डैनों वाली देवी विजयश्री और अपोलौन दीर्घा एवं ऐसी विलक्षण कलाकृतियां हैं, जिनके सामने खड़े होने पर श्वांस लेने का भी ध्यान नहीं रहता।

हमारा अगला गंतव्य नौत्रे डैम का महान कैथेडरल (गिरजाघर) था, जो फ्रांस का विशालतम तथा इतिहास एवं गाथा दोनों में समान रूप से विख्यात गिरजाघर है। मंद मंद सांध्यकालीन प्रकाश में उसका दृश्य अत्यंत मनोहारी होता है। पिछले एक हजार वर्षों में उसके प्रवेश द्वार में असंख्य श्रद्धालुओं के चरण पड़े होंगे तथा असंख्य नेत्र उसके भीतर अवर्णनीय सौंदर्य की स्वामिनी रोज नामक खिड़की पर गड़े होंगे। और, वहां से हम सम्मोहक लक्जेमबर्ग उद्यानों में जा पहुंचे। ठीक हमारे सामने मारगुएराइट दे' वेलोय की प्रतिमा थी जिसे ड्यूमास ने अपने चित्तग्राही उपन्यास में अमर कर दिया। हमारी बगल में कैथेराइन दे' मेडिची का राजप्रासाद था। सड़क के उस पार वह स्थल था जहां थ्री मस्केटियर्स (तीन बंदूकधारी) रहते थे, और अब वहां उद्यानों में अनेक प्रसन्न एवं निश्चिंत बालक खेल रहे थे। उधर सैनिक वाद्यवृंद और कठपुतली रंगमंच अन्य सैकड़ों लोगों का मनोरंजन कर रहे थे। यह सिद्ध करने के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है कि मैं अत्यंत अनिच्छापूर्वक तथा यह सोचता हुआ वहां से चला कि मैं बार बार वहां लौटूंगा।

हम रात्रिभोज के लिए बुलेवर्ड मोंटपारनासे पर एक कलाकार-संगम पर गए। मार्ग में हम रोम्यां रोलां के घर के सामने से निकले, भीतर नहीं गए। छह सप्ताह बाद एक दिन मैंने उस महान लेखक की बहन के साथ कुछ घंटे बिताए जो उनकी अभिन्न संगी थीं, तथा उनके साथ चाय पी। उनकी पुस्तकों की पांडुलिपियां, उनका चित्र-संग्रह, गांधी जी के नाम तथा उनसे मिले पत्र एवं मानवीयता को समृद्धि प्रदान करने वाले उनके घटना-बहुल जीवन के अन्य स्मृतिचिह्न देखकर मुझे रोमांच हो आया।

पेरिस को सबसे अधिक विशिष्टता प्रदान करने वाले तत्वों में से एक प्रमुख तत्व उसके असंख्य केफ़े है, जिनमें से कुछ तो विश्वभर में विख्यात हैं। रात्रिभोज के पश्चात कुछ केफ़े में साहित्यकार, चिंतक, लेखक, कलाकार, समालोचक, बुद्धिवादी तथा उनकी चर्चाओं को सुनने के लिए आए लोगों की भीड़ एकत्र हो जाती है। प्राय: श्रेष्ठतम वाद-विवाद तथा वार्तालाप से जन्म लेने वाली चिंतन की चिनगारियों में से नए विचारों का उदय होता है तथा वे नए रंग-चित्रों, उपन्यासों,

निबंधों अथवा खंडन-मंडन के रूप में पुष्पित-पल्लवित होते हैं।

उस क्षेत्र में केफ़ दु' डोम तथा केफ़ दु' रोतोंदे को विशेष ख्याति प्राप्त है। एक दिन एक व्यक्ति जो देखने से ही भुखमरी से पीड़ित लगता था, केफ़ दु' रोतोंदे पहुंचा तथा उसने भरपूर जलपान-सामग्री मंगाई जिसे खा चुकने के बाद उसने दीनभाव से वेटर को समझाया कि उसके पास बिल चुकाने के लिए धन नहीं है, उसे अपने देश से देश-निकाला दे दिया गया है। उसने वेटर से पूछा, "क्या कामरेड वेटर उसे फ्रांस का अतिथि मानकर बिल के भुगतान के लिए उसकी राशि उधार देगा ? उसने उस राशि को बाद में लौटाने का वचन दिया। वेटर यह देख-सुनकर आश्चर्य में पड़ गया परंतु उस व्यक्ति की वाणी में कुछ ऐसा जादू था, जो उसे बिल की राशि उधार देने के लिए विवश कर रहा था। उसने उस अजनबी को वह राशि उधार दे दी। उस व्यक्ति का नाम था लेनिन।

लेनिन को उस ऋण की स्मृति बनी रही, रूसी क्रांति के उपरांत उसने वह राशि उस वेटर को अपनी ओर से एक उपहार एवं ढेर सारे धन्यवाद सहित लौटा दी। वेटर ने तुरंत वह राशि इस टिप्पणी के साथ लेनिन को वापस भेज दी कि उसने वह राशि एक निर्धन, भुखमरी से पीड़ित तथा देश-निकाला भोग रहे व्यक्ति को दी थी न कि एक महान और शक्तिशाली राज्य के अध्यक्ष को।

मेरे मन में तीव्र इच्छा थी कि मैं पेरिस में एक असामान्य ढंग के अवकाश का आनंद लूं तथा मैंने एक महत्वाकांक्षी योजना तैयार कर डाली कि मैं अपने प्रिय लेखकों के नामों के साथ जुड़े-स्थानों पर बार बार जाऊंगा।

यात्रा शुरू करने के लिए मौलियर के नाम से अधिक श्रेष्ठ और कौन-सा नाम हो सकता था ? फ्रांस के लिए उसका वही महत्व है, जो इंगलैंड के लिए शेक्सपियर का। उसकी मृत्यु को 270 वर्ष बीत गए तथापि वह अभी तक कितना सजीव है ? पेरिस में मेरे प्रवास के दौरान ही तीन भिन्न नाट्यगृहों में उसके विभिन्न आधा दर्जन नाटकों का मंचन चल रहा था।

मैं कौतूहल और ऊंची ऊंची कल्पनाओं से भरा मन लेकर उस घर पर जा पहुंचा जिसमें मौलियर का जन्म हुआ था। वह ठीक वही घर न था वरन वह स्थल था जहां वह घर कभी खड़ा था। मैं प्रसिद्ध लाइसी लुई-ले-ग्रैड गया जहां उसने शिक्षा प्राप्त की थी, और फिर सेंट जमेंइन-ल' ऑक्सेराय गिरजाघर गया जिसमें उसका विवाह संपन्न हुआ था, उस लिटिल थियेटर में गया जो उसने शुरू किया और जो उसे शीघ्र ही बंद कर देना पड़ा था तथा मोमबत्ती का बिल न चुका पाने के कारण उसे चैटेलेट कारागार में बंद कर दिया गया था। मौलियर के असंख्य दुस्साहसपूर्ण कार्य फ्रांस के साहित्यिक इतिहास का एक रंगीन अध्याय बन गए हैं।

मौलियर अपने जीवन के अंतिम चरण में 40, रुए रिचिल्यू में रह रहा था। उस भवन पर उसकी स्मृति में एक पाषाण-लेख लगा है। मैं उस सादगीपूर्ण आवास

के सामने देर तक खड़ा खड़ा उसके जीवन के अंतिम दिनों की घटनाओं का स्मरण करने की चेष्टा करता रहा। वह बहुत अस्वस्थ था, तथापि समीप की ही अपनी नाटकशाला में नियमित रूप से अभिनय करता रहा। अंततः एक ऐसी स्थिति आ गयी कि उसके डाक्टरों ने उसे खड़े रहने तथा अभिनय का तनाव उठाने की अनुमति देने से इनकार कर दिया। मौलियर ने इस बाधा में से भी मार्ग निकाल लिया। उसने एक नया नाटक लिखा जिसमें वह कुर्सी पर बैठकर अभिनय कर सकता था, और उस नाटक का नाम रखा : 'काल्पनिक अपंग'।

पांचवें प्रदर्शन के दिन 27 फरवरी, 1673 को मौलियर अत्यधिक अस्वस्थ था, अतः उस पर आराम करने के लिए बहुत दबाव डाला गया। परंतु उसने यह कहकर आराम करने से इनकार कर दिया, "मैं क्या कर सकता हूं ? 50 दरिद्र कर्मचारी अपनी रोजी के लिए मुझ पर निर्भर हैं।"

नाटक का मंचन अपराह्न में 4 बजे शुरू होना था। मौलियर को थियेटर पहुंचा दिया गया। अपनी समूची शारीरिक और मानसिक शक्ति बटोर कर वह प्रदर्शन में पूरे समय बैठा रहा। श्रोताओं को कल्पना तक न थी कि वह गंभीर रूप से अस्वस्थ है। प्रदर्शन समाप्त होने के एक घंटे बाद उसकी मृत्यु हो गयी। मौलियर ने अपनी जीवन-दीप की बाती को दोनों छोरों पर प्रचुर रूप से जलाया। उस समय वह 51 वर्ष का था, तथापि उसका नाम अमर करने के लिए उसके हाथों में इतना कम समय भी पर्याप्त रहा।

सामान्यतया मृत्यु के क्षणों में विवादों पर मौन का आवरण पड़ जाता है, परंतु मौलियर के मामले में ऐसा नहीं हुआ। चर्च ने इस आधार पर उसका शव ईसाई परंपरा के अनुसार दफनाए जाने की अनुमति नहीं दी कि वह एक अभिनेता था। उस समय अभिनेता के व्यवसाय को चर्च अनैतिक मानता था। उसके अंतिम संस्कार के लिए जिन पादरियों को बुलाया गया था उन्होंने आने से इनकार कर दिया। उन्हें बहुत समझाया बुझाया गया तथापि उनके दृष्टिकोण में कोई अंतर नहीं आया। अंततः मौलियर के प्रभावशाली मित्रों ने सम्राट से प्रार्थना की तथा सम्राट ने पेरिस के आर्कबिशप के नाम एक शाही आदेश जारी किया कि वे मौलियर का अंतिम संस्कार कराएं। आर्कबिशप ने इस आदेश से विवश होकर बहुत बेमन से वह कार्य संपन्न तो कराया, तथापि अपनी ओर से एक विशेष आदेश जारी किया कि मौलियर का अंतिम संस्कार सादगी से संपन्न कराया जाए। उसके लिए केवल दो पादरी नियुक्त किए जाएं तथा उसकी शांति के लिए प्रार्थना दिन में नहीं, दिन ढलने पर कराई जाए। अतः मौलियर का शव अंधेरे और मौन के सन्नाटे में सेंट जोसेफ़ के गुमनाम कब्रिस्तान की एक सादी-सी कब्र में दफना दिया गया। उस कब्र की जगह अब भवन खड़े हैं। उसके अवशेष बाद में फ्रांसीसी स्मारकों के संग्रहालय में स्थानांतरित कर दिए गए। संग्रहालय को वहां से हटाते समय उन्हें पेरे लाचेज़ कब्रिस्तान ले

जाया गया जो निस्संदेह विश्व के प्रसिद्धतम कब्रिस्तानों में से हैं।

बाल्ज़ाक और ला फोन्तेन, डोलाक्रोइक्स तथा बारये, मिचलेट और गौटियर, चोपिन तथा टाल्मे एवं अन्य अनेक साहित्यकारों एवं कलाकारों का अंतिम विश्रामस्थल भी वहीं बना। प्रख्यात प्रेमी-युगल अबेलार्ड तथा हैलॉय को भी जिनकी त्रासदी पर गद्य और पद्य में बहुत कुछ लिखा गया है, वहीं दफनाया गया था।

पेरिस का संभवतया प्रसिद्धतम भवन यह है जिसमें विक्टर ह्यूगो रहता था, वह एक प्रसिद्ध गली का एक प्रसिद्ध भवन है। वह प्लेस दे' वोआजेस पर है। इतनी जीवंत राजनीतिक और साहित्यिक स्मृतियां शायद किसी अन्य बस्ती के साथ नहीं जुड़ी हैं। पहले मकान में महान लेखिका मदाम डे' सेविग्ने का जन्म हुआ था। फ्रांसीसी गल्प-साहित्य के क्षेत्र के दो प्रमुख लेखक थियोफाइल गौटियर और उसके तुरंत बाद अल्फोंजे डाडेट आठ नंबर के मकान में रहे थे। महान त्रासदीकार रेशेल 9 नंबर में रहती थीं। 21 नंबर के घर में कार्डिनल रिचिल्यू रहता था क्योंकि कार्डिनल महल जिसे अब शाही महल कहा जाता है, तब निर्माणाधीन था।

मकान नंबर 6 सबकी दिलचस्पी का विषय रहा है क्योंकि उसमें विक्टर ह्यूगो आधी शताब्दी तक रहे थे। वे 1832 में अपना उपन्यास 'नौत्रे डैम दे पेरिस' पूरा करने के पश्चात वहां आए थे। उनका यह उपन्यास राजधानी के 15वीं शताब्दी के जीवन पर आधारित था। ह्यूगो के यहां आने से पहले ही यह मकान प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका था। इसमें मार्शल लावार्दिने रह चुके थे। मार्शल लावार्दिने फ्रांस के सर्वाधिक लोकप्रिय सम्राट हेनरी चतुर्थ के साथ उस समय एक ही गाड़ी में यात्रा कर रहे थे जब एक धार्मिक कट्टरपंथी ने उनकी हत्या कर डाली थी। उसके बाद उस घर में मारियों डेलोर्मे रही। उसकी गणना उसके समय की सर्वाधिक सुंदरियों में की जाती थी। कार्डिनल रिचिल्यू भी उसमें गहरी रुचि लेते थे। इसी घर में उसके साहसी और सुंदर प्रेमी सिंक मार्स के मार्किवस ने कार्डिनल के विरुद्ध अनेक दुरभि संधियां कीं तथा षड्यंत्र रचे। विक्टर ह्यूगो ने इस घर में आने से पहले मारियों डेलोर्मे पर एक नाटक लिखा था तथा इसी महान भवन में उसने 'लेस मिजरेबल्स' नामक ग्रंथ की रचना की।

दूर और पास से बहुत से प्रमुख लोग उनसे मिलने के लिए उनके घर आते थे। चार्ल्स डिकेंस जिन दिनों अपने उपन्यास 'टेल ऑफ दा टू सिटीज़' के लिए सामग्री एकत्र करने की दृष्टि से पेरिस में ठहरे हुए थे वे ह्यूगो के घर पर होने वाली दावतों में भाग लिया करते थे। इसी प्रकार अलेक्जांडर डॅयूमास, कवि मुस्सेट, इतिहासकार लामार्तिन, मूर्तिकार बार्ये, चित्रकला की अपनी अत्यंत विवादास्पद नयी शैली के लिए प्रख्यात डेलाक्रौइक्स तथा नाटकशालाओं में प्रायः प्रदर्शित नाटक 'कारमेन' के लेखक प्रॉस्पर मारिमी वहां आते जाते और दावतों में सम्मिलित होते थे।

एक दिन एक अत्यंत रूपवती युवती ने उनका द्वार ख़टखटाया और महान

लेखक के साथ भेंट की अनुमति प्राप्त करने के लिए अनुनय की। समाचार पत्रों में यह समाचार छपा था कि विक्टर ह्यूगो का नया नाटक 'लुक्रेस बोल्गिया' शीघ्र ही मंचित किया जाने वाला है जिसमें प्रमुख महिला पात्र की भूमिका अभी तक किसी को नहीं दी गयी है। आगंतुक महिला ने बताया कि वह अनेक बार छोटी छोटी भूमिकाएं निभा चुकी है तथा उसने ह्यूगो से प्रार्थना की कि वह उसे अपने नाटक में मुख्य भूमिका निबाहने का अवसर प्रदान करें। उसके व्यक्तित्व ने ह्यूगो पर गहरा प्रभाव डाला और वे उसके प्रस्ताव से सहमत हो गए। उस दिन से उनके जीवन में एक नया तत्व प्रवेश कर गया। सुंदरी जूलियट ड्राउट उनकी निकटतम और प्रियतम मित्र बन गयी। वे प्राय: प्रतिदिन एक या अनेक बार मिलते थे तथापि अगले पचास वर्ष तक ह्यूगो ने उसे प्रतिदिन एक पत्र लिखा।

ह्यूगो की मृत्यु 83 वर्ष की परिपक्व आयु में हुई। उन्होंने इच्छा प्रकट की थी कि उन्हें निर्धन व्यक्तियों के लिए प्रयोग में लाए जाने वाले ताबूत में दफनाया जाए। उनके शव को उसी प्रकार के ताबूत में आर्क द' ट्रायम्फे के नीचे रखा गया जहां पूरी शाम तथा रात के दौरान हजारों लोगों ने फ्रांस के उस महानतम सपूत के अंतिम दर्शन किए। अगले दिन उनका शव अंतिम संस्कार के लिए सर्वोच्च सम्मान पूर्वक पैंथियौन ले जाया गया।

मेरी घुमक्कड़ी दिन-प्रतिदिन एक या अधिक अनुकूल मित्रों के साथ जारी रही। प्रख्यात फ्रांसीसी पुरातत्वविद् मौंसियर वाइज़ मुझे मैलमाईसौ ले गए जिस पर नेपोलियन को बहुत प्रेम था और जहां उसकी पत्नी भग्नहृदया जोसेफीन ने तलाक के बाद अपना शेष जीवन व्यतीत किया। इस नगर में नेपोलियन से संबंधित सामग्री का विशालतम संग्रह है। पेरिस से मैलमाइसौ तक की लंबी कारयात्रा सुंदरता से परिपूर्ण है और वहां से लौटने पर ऐसा लगता है कि पेरिस नेपोलियन से आकंठ परिपूर्ण है। नेपोलियन के स्मारक पेरिस की व्योम रेखा पर छाए हुए हैं। अन्य दिनों में जीवंत विदुषी मदाम लिप्पेंस मेरी खोज-यात्राओं में मेरे संग रहीं। उनके साथ ही मदाम रेने और मदाम फौसे की निस्सीम उदारता प्राप्त करने का सौभाग्य भी मुझे मिला।

मैंने जीवित लेखकों—आंद्रे गिडे जिन्हें 1947 में नोबेल पुरस्कार मिला, दुहामेल जेलेस रोमेंस, एरागौन, मालरो, प्रतिभाशाली अस्तित्ववादी सार्त्र, कामू और सिमोन दे बोविग्नी का उल्लेख जानबूझकर नहीं किया है क्योंकि एक लेख के कलेवर में इतना सब कैसे समा सकता है !

अब पेरिस के रंगमंचों के बारे में कुछ अंतिम शब्द ! वे एक भव्य दृश्य प्रस्तुत करते हैं। यह सब मेरे कार्यक्रम में भली प्रकार समाहित हो गया—महान व्यक्तियों से जुड़े स्थानों की यात्रा और उसके पश्चात रंगमंच पर उनकी महान कृतियों का प्रदर्शन देखने के लिए पहुंचना। मैंने पुश्किन के 'गोदो उनोव' का मंचन

ओपेरा ब्यूमार्केस में देखा, 'मैरिज आफ फिगोरो' का औपेरा कौमीक में, विक्टर ह्यूगो के 'रुई ब्लास' का थियेटर फ्रांस्वा में, मौलियर के 'तारतुफ्फे' का ओडियन में तथा इसी प्रकार कुछ अन्य नाटकों का मंचन भी देखा। उनकी प्रस्तुति अद्‌भुत तकनीकी पूर्णता के साथ की गयी तथापि इन सब प्रसिद्ध थियेटरों को राज्य से आर्थिक सहायता मिलने के कारण दर्शकों को एक टिकट के लिए अधिक से अधिक तीन या चार रुपए तथा कम से कम एक रुपए के नीचे चुकाना पड़ता है। हमारी सरकार के लिए यह एक पदार्थ पाठ है। उसे विहित रंगमंच की विराट शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संभावनाएं पहचान कर उसकी उदारतापूर्वक सहायता करनी चाहिए।

मेरे प्रवासकाल में हेनरी डे मांथैरलांट के किसी नाटक का मंचन चल रहा था तथा उत्कंठित दर्शकों को भारी संख्या में आकर्षित कर रहा था। यह एक सशक्त नाटक था जिसका अंत शुद्धत: त्रासदीपूर्ण था। मैं वह नाटक मोहक व्यक्तित्व की स्वामिनी मदाम नातेत के साथ देखने जा रहा था, जब उन्होंने टैक्सी ड्राइवर को थियेटर का नाम बताया तो वह तेजी से उनकी ओर मुड़ा और बोला : "आप उस नाटक को किसलिए देखना चाहती हैं ? वह तो एक अंध-त्रासदी है। क्या इस संसार में पहले से ही मुसीबतों की कमी है कि उनमें उदासी की एक शाम और जोड़ी जाए तथा वह भी मूल्य चुकाकर ? यहां अन्य अनेक अच्छे उल्लासपूर्ण नाटकों का मंचन चल रहा है, उनमें से कोई भी देख लीजिए ?"

मुझे इस व्यवधान पर प्रसन्नता हुई और मैंने उससे विकल्प का सुझाव मांगा। इस बीच हम थियेटर पर पहुंच चुके थे। हमें अपने निश्चय पर अडिग देखकर वह बोला : "हो सकता है आपको टिकट ही न मिल पाएं। मैं प्रतीक्षा करूंगा और आपको किसी दूसरे थियेटर पर ले चलूंगा। आप मुझे धन्यवाद देंगे।" परंतु टिकट प्राप्त हो गए और हम भीतर चले गए।

पेरिस ऐसा है। केफे की मेज से टैक्सी कार तक वहां सर्वत्र बुद्धिमत्तापूर्ण चर्चाएं होती हैं तथा सामान्यजन भी उनमें भाग लेता है।

अनुक्रमणिका

कंप्यूटेक सिस्टम, मानसरोवर पार्क, दिल्ली द्वारा लेजर कम्पोज तथा तरंग प्रिंटर्स, लक्ष्मी नगर, शाहदरा, दिल्ली द्वारा मुद्रित